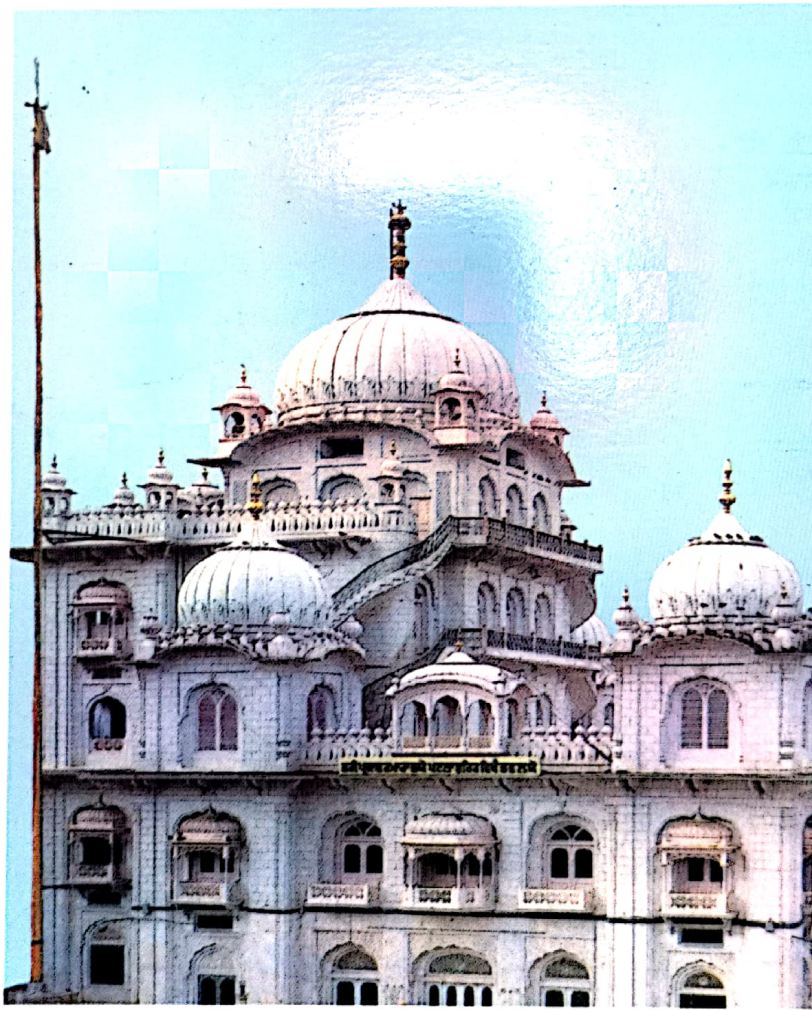




चेतना

21 वां
अंक

सितम्बर 2009



**कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना**

चेतना परिवार



बैठे हुए (बायें से दायें) -

श्री जॉर्ज सैमुएल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (महालेखाकार के सचिव); श्री सुशील कुमार सिन्हा, उप महालेखाकार; श्री इन्द्रीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना; मो० फैसल ईमाम, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं श्री मुकेश कुमार लाल, सहायक महालेखाकार।

खड़े हुए (बायें से दायें) -

श्री अजय कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी; श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, सहायक लेखा अधिकारी; श्री बंशीधर मिश्र, सहायक लेखा अधिकारी; श्री राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखाकार; श्री विनोद प्रसाद साह, लेखा अधिकारी; श्री शंकर प्रसाद वर्मा, सहायक लेखा अधिकारी एवं श्री मनमीत कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी।



चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
इक्कीसवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

चेतना परिवार

संरक्षक :

श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति :

श्री फैसल इमाम,
वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री सुशील कुमार सिन्हा,
उप महालेखाकार, बिहार, पटना

प्रधान सम्पादक :

श्री विनोद प्रसाद साह,
लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

सम्पादक :

श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी

सदस्य :

श्री मनमीत कुमार,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री उमेश चौधरी,
लेखा अधिकारी

श्री भारत भूषण झा,
लेखा अधिकारी

श्री शंकर प्रसाद वर्मा,
सहायक लेखा अधिकारी

श्री राजेन्द्र कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार, हिन्दी कक्ष

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीर चन्द पटेल मार्ग,
पटना-800001

अंक : इक्कीसवाँ
(सितम्बर 2009)

मुख्य पृष्ठ : गुरुद्वारा, पटना साहिब

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : जी०बी० प्रिंटर्स
नया टोला, पटना-4

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ सं०
1.	चेतना परिवार			iii
2.	अनुक्रमणिका			v
3.	महालेखाकार का संदेश			vii
4.	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन, लेखा एवं भी०एल०सी० तथा राज०हक०) का संदेश			ix
5.	उपमहालेखाकार (पेंशन) का संदेश			ix
6.	सम्पादकीय			xi
7.	आपके पत्र			xiii
8.	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी (रिपोर्ट हिन्दी कक्ष की) गतिविधियाँ: 2008-2009			1
9.	बिहार-दर्शन	दर्शनीय	श्री रामाधार राय, व०ले०	3
10.	पटना-एक नजर	दर्शनीय	श्री संदीप कुमार, पिता-श्री विनोद प्रसाद साह, लेखा अधिकारी	7
11.	वो पहचान	कहानी	श्री अश्विन अनुराग, पिता-श्री प्रेमनिवास मिश्र, स०ले०अ०	14
12.	भारत की बेटी	कविता	श्री शंकर प्रसाद वर्मा, स०ले०अ०	17
13.	वाह रे आजादी!	कविता	श्री गौरव आनन्द, पिता-श्री बंशीधर मिश्र, स०ले०अ०	18
14.	भूल	प्रेरक निबंध	श्री बंशीधर मिश्र, स०ले०अ०	19
15.	सच्ची लगन	कहानी	श्री अनंत राम, लेखाकार	20
16.	मातृ प्रेरणा	कविता	श्री विजय प्रसाद, लेखाकार	22
17.	माँ	कविता	श्री शिवशंकर तिवारी, व०ले०	23
18.	भारतीय नारी	निबंध	श्री राजेन्द्र कुमार, व०ले०	24
19.	खेल-खेल में पढ़ाई तथा भाई की भलाई	कहानी	श्री हरeram प्रधान, व०ले०	27
20.	“पहली मुलाकात”/गजल	कविता/गजल	श्रीमती नीता मिश्रा, द्वारा-श्री बंशीधर मिश्र, स०ले०अ०	30
21.	दुःख-सुख	कविता	श्री शशि शंकर झा, पिता-श्री रामदेव झा, व०ले०	32

22.	सदमा	कहानी	श्री उमेश चौधरी, ले0अ0	33
23.	झाड़वर साहब	निबन्ध	श्री दयानन्द प्रसाद, व0ले0	35
24.	प्राणायाम	कविता	श्री राजेन्द्र कुमार, व0ले0	38
25.	अब मैं शायद बड़ा हो गया !	कविता	श्री चन्द्रशेखर, पिता-श्री अनिरुद्ध राय, पर्यवेक्षक (सेवा निवृत्त)	39
26.	आ अब लौट चलें	आध्यात्मिक निबंध	श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डे, स0ले0अ0	40
27.	कल, आज और कल	प्रेरक निबंध	श्री दुलारीशरण सिंह, व0ले0	43
28.	खतरनाक विवाह, मासूम बाराती	व्यंग्य	सुश्री प्रिया राज, पिता-श्री रामबली सिंह, स0ले0अ0	45
29.	चुनावी माहौल	कविता	सुश्री प्रीति चन्द्रा, पिता-श्री मुकुन्दी पासवान, व0ले0	46
30.	पागल कुत्ते के काटने पर क्या करें ?	चिकित्सा-दर्शन	श्री रामेश्वर राम, व0ले0	47
31.	लकवा (फालिज) से कैसे बचे ?	चिकित्सा-दर्शन	श्री रामेश्वर राम, व0ले0	48
32.	मुम्बई पर आतंकी हमला	कविता	श्री अजय कुमार, पिता-श्री हरेराम प्रधान, स0ले0अ0	50
33.	क्यों ? ऐसा क्यों ?	कविता	सुश्री अंकिता सिन्हा, पिता-श्री प्रेम कुमार सिन्हा, स0ले0अ0	51
34.	झूठ के कुहासों से उबरे, सत्य का आश्रय लें	प्रेरक निबंध	श्री विजय प्रसाद, लेखाकार	52
35.	राष्ट्रभाषा हिन्दी का यह कैसा सम्मान ?	व्यंग्य निबंध	श्री अनिल कुमार सिंह, स0ले0अ0	54
36.	गौ माता के गुण	निबंध	श्री अनिल कुमार सिंह, स0ले0अ0	56
37.	मिथिला का त्योहार	पारम्परिक त्योहार	श्री सुरेन्द्र लाल दास, स0ले0अ0	60
38.	गाँव की जिन्दगी	समीक्षा	श्री उमेश चौधरी, ले0अ0	61
39.	खुद को तलाशती हिन्दी	व्यंग्य	सुश्री प्रीति चन्द्रा, पिता-श्री मुकुन्दी पासवान, व0ले0	62
40.	चिपकने वाली मूढ़ी	हास्य व्यंग्य	श्री श्रीराम पाण्डेय, स0ले0अ0	63
41.	हँसगुल्ले	संकलन	शिवांगी, द्वारा श्री रवि रंजन, ले0अ0	65
42.	एक था जिंगल	कहानी	श्री रवि रंजन, लेखा अधिकारी	66
43.	हिन्दी पखवाड़ा समारोह-सिंहावलोकन		हिन्दी कक्ष	71

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का



संदेश

हिन्दी पत्रिका “चेतना” का 21वाँ (इक्कीसवाँ) अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसके अच्छे संकलन हेतु सभी रचनाकर एवं सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को भी मैं साधुवाद देता हूँ। पाठकगण श्री धन्यवाद के समरूप पात्र हैं।

यह पत्रिका अपने शाब्दिक अर्थ “चेतना”, के अनुरूप जागृति-सूत्र के रूप में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सोंच एवं अभिव्यक्ति का तात्कालिक प्रतिबिम्ब है। इसके साथ-साथ सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग, अभिव्यक्ति व भाव के सर्वांगीण विकास एवं सभी स्तर पर विस्तार देने का एक सफल एवं सुफल प्रयास का प्रतीक है।

कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दिल से बधाई देते हुए पत्रिका का इक्कीसवाँ अंक आप सबों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे पढ़कर पाठकों को भरपूर आनन्द की अनुभूति होगी। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय की यह सृजन ‘चेतना’ सतत अपनी आभा बिखेरती रहेगी।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बिहार, पटना।

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन, लेखा, वी०एल०सी० एवं जी०ई०), बिहार, पटना का

संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “चेतना” के इक्कीसवें अंक के प्रकाशन पर हार्दिक खुशी हो रही है।

पत्रिका की सभी रचनायें रोचक एवं पठनीय हैं। यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसाद के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक लेखन-प्रतिभा को प्रोत्साहन प्रदान करने में अहम् भूमिका निभायेगी, ऐसी आशा है।

आखिर में, मैं पत्रिका के निरन्तर प्रगति के लिए सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ एवं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

फैसल

फैसल इमाम
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन, लेखा, बी०एल०सी० एवं जी०ई०),
बिहार, पटना।

उप महालेखाकार (पेंशन), बिहार, पटना का

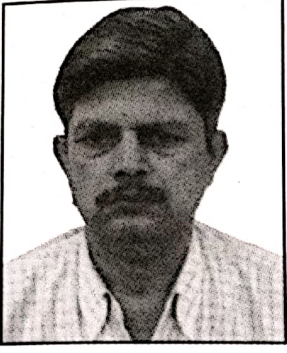
संदेश

“चेतना” हिन्दी पत्रिका के इक्कीसवें अंक के प्रकाशन पर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के निरन्तर प्रकाशन तथा अच्छी रचनाओं के समावेश हेतु सभी रचनाकार एवं सम्पादक-मण्डल बधाई के पात्र हैं।

आशा करता हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति प्रेम बढ़ाने तथा अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने हेतु नई जागृति लायेगी।

सु.कु. सिन्हा

सुशील कुमार सिन्हा
उप महालेखाकार (पेंशन)



सम्पादकीय



हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के इक्कीसवें अंक को हृदय से हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे अत्याधिक आनंद का अनुभव हो रहा है। पिछले अंक पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं के लिए पाठकों को हृदय से धन्यवाद।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की विकास के लिए यह पत्रिका हर दृष्टि से कृतसंकल्पित है। इसी का परिणाम है कि रचनाओं में विभिन्न प्रकार की रचनाएँ सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के विकास के लिए सभी रचनाकार (अधिकारी एवं कर्मचारी) विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, साथ ही इनके बच्चों एवं रिश्तेदारों को भी इसमें रुचि दिखलाने के लिए हृदय से धन्यवाद है।

पिछले 60 वर्षों में राष्ट्रभाषा एवं हिन्दी की प्रगति काफी उत्साहवर्द्धक रही है। परन्तु, लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ता कदम संतोषप्रद नहीं रही है। इस कमी को हमें पूरा करना है। हिन्दी का अधिकाधिक व्यवहार ही हमें इस लक्ष्य की ओर पहुँचा सकती है। इसके विकास के लिए कहने से ज्यादा करने की आवश्यकता है। अतः व्यवहारिकता में हिन्दी को लिखने, बोलने एवं पढ़ने में हमें समाहित हो जाना चाहिए।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर अपने पूर्व के संकल्प को दोहराते हुए यह संकल्प लें कि अपना सारा कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करेंगे। साथ ही यह भी संकल्प लें कि इसके प्रचार-प्रसार हेतु आत्मीय प्रयास/चिंतन जारी रखेंगे तथा कठिनाईयों का सामना दृढ़ता से करते हुए उन्हें दूर भगायेंगे।

कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके रिश्तेदारों से लगातार मिल रही रचनाओं के लिए रचनाकारों को दिल से धन्यवाद देते हुए अनुरोध होगा कि सभी सहृदय पाठक पत्रिका में रही त्रुटियों की ओर अवश्य ध्यान प्रकट करायें, ताकि इसमें उत्तरोत्तर सुधार संभव हो सके तथा यह और भी ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी सिद्ध हो सके।

अंत में हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम रखनेवाले विद्वान संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल तथा परामर्श दातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों के प्रति उनके योगदान के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं समय-दान के आलोक में यह पत्रिका पहले से ज्यादा अलंकृत एवं आकर्षक रूप ले सकी है। पत्रिका के सुन्दर चित्रांकन एवं सफल प्रकाशन के लिए श्री अजय कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी का सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। 'चेतना-परिवार' की ओर से उन्हें तथा उनके सहयोगियों को कोटि-कोटि धन्यवाद। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हमारे यह सम्पादकीय कार्य हमारे प्रथम सम्पादकीय कार्य (20वाँ अंक) की तुलना में बेहतर होगा। पाठकों की प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा रखते हुए सबों को हृदय से यथोचित साधुवाद एवं बधाई।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

(बंशीधर मिश्र)
(बंशीधर मिश्र)

21^{वाँ}
अंक

आपके पत्र

चेतना पत्रिका का 20वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में महालेखाकार परिवार के बच्चों की रचनाओं को स्थान देकर प्रोत्साहित करने का कार्य किया गया है, जो प्रशंसनीय है तथा इससे उन्हें प्रेरणा मिलेगी। पत्रिका में वरीय लेखाकार वैद्य रामेश्वर राम के नुस्खे आम लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

अनेक शुभकामनाओं के साथ।

पटना

16.09.2008

श्री जिया लाल आर्य (भा0प्र0से0)

भूतपूर्व गृह आयुक्त,
बिहार सरकार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' की 20वें अंक की प्रति पाकर प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशित रचनायें श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट हैं। सभी रचनायें पठनीय के साथ-साथ मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक भी हैं।

पत्रिका के संपादक मंडल को हमारी ओर से धन्यवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

मुंबई

02.12.2008

सहायक निदेशक/राजभाषा,
महालेखाकार (लेखा एवं हक0) का कार्यालय
महाराष्ट्र, मुम्बई-400026

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका 'चेतना' का 20वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनायें अच्छी हैं। अमरेन्द्र कुमार पाण्डे का निबंध 'संचार क्रांति-एक दृष्टि', दयानन्द प्रसाद का निबन्ध 'अपना नहीं रहा अपना' सुश्री प्रियाराज की कविता 'दुल्हन', श्री गौरव आनन्द की कविता 'माँ', विधु शेखर की कविता 'भिक्षुक' तथा श्री आशानन्द ठाकुर की कविता 'ऐसा क्यों?' विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका की अग्रगति हेतु शुभकामनायें।

पश्चिम बंगाल, कोलकता

21.10.2008

-सह सम्पादक-वन्दे मातरम् एवं
सहायक लेखा अधिकारी/प्रशा० हिन्दी सेल,
महालेखाकार (लेखा एवं हक०), पश्चिम बंगाल।

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 20वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनायें ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं।

सिक्किम, गान्तोक

22.10.2008

-वरीय लेखा अधिकारी/प्रशासन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हक०)
का कार्यालय, सिक्किम, गान्तोक

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'चेतना' का 20वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनायें पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की रूप सज्जा तथा सामग्री संकलन अत्यन्त आकर्षक है। श्री उमेश चौधरी, लेखा अधिकारी की कहानी "बेचारा रामू काका", श्री गौरव आनंद की कविता 'माँ' तथा श्री रामेश्वर राम का लेख "घृत कुमारी" पठनीय एवं ज्ञान वर्धक हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ।

पंजाब, चंडीगढ़

21.10.2008

-प्रवर लेखा अधिकारी,
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हक0)
पंजाब, चण्डीगढ़-160017

आपके कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' का 20वाँ अंक प्राप्त हुआ। "पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं सभी छायाचित्र आकर्षक हैं। पत्रिका में समाविष्ट रचनायें पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। श्री राजेन्द्र कुमार का लेख 'प्राणायाम एक अनुभव', श्री रामेश्वर राम का लेख 'घृत कुमारी' प्रेरक लेख हैं। 'भिक्षुणी की नागरिकता, मजहब नहीं सिखाता...', 'माँ का आशीर्वाद', 'शिर्डी के महाराज' कहानियाँ मार्मिक एवं शिक्षाप्रद हैं। 'माँ', 'जिन्दगी एक पल है', 'राष्ट्रीय कवितायें प्रशंसनीय रचनायें हैं।'

पत्रिका के उत्तम सम्पादन व संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

मध्य प्रदेश, ग्वालियर

20.10.2008

-वरीय लेखा अधिकारी/राजभाषा,
महालेखाकार (लेखा एवं हक0) प्रथम
का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर-474002

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 20वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनायें श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट हैं। श्री मनमीत कुमार द्वारा लिखित कहानी 'सपना' तथा श्री अशुतोष झा द्वारा रचित कविता "राष्ट्रीय" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रिका के संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को हमारी ओर से साधुवाद। पत्रिका प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर रहे, इसके लिए हमारी शुभकामनाएँ।

नई दिल्ली

19.11.2008

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

(राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा,
आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय, नई दिल्ली-2

आपकी गृह पत्रिका "चेतना" का 20वाँ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में निहित सभी रचनायें सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री उमेश चौधरी की लिखी "बेचारे रामू काका" कहानी बहुत अच्छा है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं के साथ।

कर्नाटक, बेंगलूर

24.10.2008

हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष,
महालेखाकार कार्यालय (लेखा एवं हक0)
कर्नाटक, बेंगलूर।

कार्यालय, महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना में हिन्दी गतिविधियाँ सत्र : 2008-09



भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिन्दी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है। इस वर्ष महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्न प्रकार है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 506 दस्तावेज जारी किये गये जिनमें हिन्दी में 506 तथा द्विभाषी में शून्य थे। कोई भी आदेश केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया गया।

2. हिन्दी पत्राचार:

वर्ष 2008-09 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,32,894 थी जिसमें से 64,008 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गये कुल पत्रों की संख्या 64,133 थी। कुल भेजे गये पत्रों में से हिन्दी पत्रों की प्रतिशतता 99.81 थी।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

उक्त वर्ष में रा० का० स० की नियमित तिमाही बैठकें सम्पन्न हुईं। नियमतः वर्ष के दौरान 4 (चार) बैठकें आयोजित की गईं जिसमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4. हिन्दी कार्यशाला :

इस वर्ष इस कार्यालय में 8 (आठ) हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं जिसमें कार्यालय के 74 (चौहत्तर) अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5. हिन्दी पुरस्कार योजना :

वर्ष 2008 में इस कार्यालय के 30 (तीस) अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी पुरस्कार-योजना के अन्तर्गत मूल टिप्पण एवं आलेखन के लिए हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया।

6. हिन्दी पखवारा समारोह का आयोजन :

इस कार्यालय में वर्ष 2008-09 के दौरान 01 सितम्बर, 2008 से 15 सितम्बर, 2008 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ तथा हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में परितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। 'हिन्दी दिवस' के सुअवसर पर कवि गोष्ठी भी आयोजित की गई तथा हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 20वें अंक का लोकार्पण भी किया गया।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

इस कार्यालय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में भाग लिया। बैठक में इस कार्यालय ने राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यालय ने राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी।

8. हिन्दी शिक्षण योजना :

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 78 (अठ्तर) अधिकारी एवं 441 (चार सौ एकतालिस) कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। इस कार्यालय में 06 (छः) आशुलिपिक हैं जो हिन्दी में प्रशिक्षित हैं। यहाँ 18 (अठ्ठारह) टंकक हैं जिनमें सभी हिन्दी में प्रशिक्षित हैं।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2008-09 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 30,000/- रु0 (तीस हजार रुपये) व्यय किए गये जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 15,000/- रु0 (पन्द्रह हजार रुपये) व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण:

इस कार्यालय में लगभग शत-प्रतिशत हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2008-09 के दौरान इस कार्यालय में कुल 28,820 फाइलें खोली गईं जिनमें 26,611 फाइलों में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गईं।

इस प्रकार इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति हो सकेगी।



बिहार दर्शन

- श्री रामाधार राय,
वरीय लेखाकार



भारत के समृद्ध एवं विविध प्राकृतिक, सांस्कृतिक विरासत हमें भारतीय होने का गौरव प्रदान करता है। खुले आकाश में उड़ते पक्षियों के झुण्ड, चमकते सितारों के बीच स्निग्ध चाँदनी विखेरता चाँद, कभी शांत कभी कोलाहल करता समुद्र, विश्व के उच्चतम पर्वतों की शृंखलायें संजोये पर्वत राज हिमालय हमारे गौरव के प्रतीक हैं।

तीन मुख्य भौगोलिक प्रदेश- हिमाचल, गंगा-यमुना के मैदानी भाग तथा प्राय द्वीपीय क्षेत्र हमारे देश की धरती का सार है।

गंगा के मैदानी भाग का हृदय बिहार है। ऐतिहासिक पवित्र गंगा ने बड़े शहरों और गाँवों का पोषण किया है। राज्य की सारी छोटी-बड़ी नदियों को अपने में समेटे पूरे राज्य का निर्माण किया है। बिहार की पूरी सांस्कृतिक विरासत इसी नदी के इर्द गिर्द है। मुख्यतः बिहार को तीन भागों में बाँटा गया है। उत्तरपूर्वी, पूर्वांचल एवं दक्षिणी बिहार। एक ओर तिरहुत, मिथिला, सारण मंडल सहित उत्तरी पूर्वी भागों के हरेभरे एवं लहलहाते पौधे वाली घनी आबादी का क्षेत्र, वहीं पहाड़ों की शृंखलाएँ लिए दक्षिणी एवं मध्य बिहार अपने प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रतीक है।

विश्व की स्वस्थ सभ्यता की प्रेरणा बिहार की धरती से मिली है। हमारा “वैशाली” दुनिया का पहला गणतंत्र है। प्राचीन लिच्छवी गणतंत्र के वैशाली राज्य ने ही दुनिया को प्रजातंत्र का पाठ पढ़ाया है।

यह पटना से मात्र 70 किलोमीटर की दूरी पर है। जैनियों के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का यह पवित्र जन्म स्थली है। यहाँ का पवित्र जैन-मंदिर आज भी दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है। वैशाली को इसकी नगर वधू आम्बपाली से भी जाना जाता है। वैशाली का महान् गौरव भगवान बुद्ध को भी नहीं रोक पाये थे। वे यहाँ आकर यहाँ की पवित्र भूमि को नमन कर गौरवान्वित हुए थे। स्मरणस्वरूप वहाँ बुद्ध का प्राचीन मंदिर आज देश का गौरव है। भूटान के राजकुमार ने इस प्राचीन मंदिर को दर्शन कर अपनी जिन्दगी की सार्थकता सिद्ध की थी। गुप्त वंश के महान सम्राट चन्द्रगुप्त की पत्नी कुमार देवी वैशाली के लिच्छवी कुल की बेटी थी। सम्राट समुद्रगुप्त उन्हीं के पुत्र थे जिनके यश के गन्ध ने पूरे देश को रोमांचित किया था और यह वैशाली की बेटी कुमार देवी की प्रेरणा थी कि सम्राट समुद्रगुप्त का शासनकाल भारतीय इतिहास में “स्वर्णयुग” कहलाता है।

वैशाली के दर्शन के बाद आप पवित्र गंगा की स्निग्ध धारा के किनारे बना कोन्हारा घाट पर अवस्थित मंदिर को देखना नहीं भूलेंगे। इसी धरती से सटे पौराणिक गज और ग्राह का युद्ध-स्थल सोनपुर है। यहाँ देश का सबसे बड़ा मेला कार्तिक-पूर्णिमा को उस युद्धस्थल के संस्मरण के लिए मनाया जाता है।

इस स्थल से लगभग 30 किमी की दूरी पर “माँ अम्बे” का प्रसिद्ध मंदिर है

जो अंबिका स्थान 'आमी' के नाम से जाना जाता है। कहते हैं कि इसके दर्शन मात्र से मनुष्य अपने मनोवांछित फल की प्राप्ति करता है।

वैशाली के दर्शन के बाद आप मिथिलांचल की पवित्र भूमि सीतामढ़ी के दर्शन करना स्वयं चाहेंगे। ऐतिहासिक एवं पौराणिक लोक कल्याणकारी राजा जनक की बेटी जगदजननी सीता का जन्म स्थल सीतामढ़ी है। इस शहर का नाम उन्हीं के नाम पर सीतामढ़ी पड़ा। यह बिहार का गौरव है जो जगदजननी सीता का जन्मस्थली है। उनके जन्म स्थान पर बने भव्य मंदिर के परिसर में जाते ही मनुष्य अपने आप को भूल जाता है और अपने को माँ के चरणों में समर्पित पाता है।

उत्तरी बिहार में प्रवेश करने के बाद आप त्रिवेणीगंज के निकट अवस्थित सिंघेश्वर स्थान के मंदिर का दर्शन नहीं करेंगे तो सारे तीर्थों के दर्शन अधूरे ही रहेंगे। यहाँ का प्रसिद्ध शिव-मंदिर हिन्दुस्तान के सभी महान तीर्थ स्थानों में एक है, जहाँ पूरे देश के लोग सारे मौसमों में आकर शिव के दर्शन प्राप्त करते हैं। खासकर महाशिवरात्री के दिन पूरे राष्ट्र के लोग यहाँ पधारते हैं। बिहार में प्रत्येक वाहन उत्कृष्ट और रंगारंग रूपों में जीवंत है। यहाँ चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ काफी प्रसिद्ध हैं। बौद्ध जैन तथा अजीविका गुफायें बिहार के बराबर में निर्मित वास्तुकला का अनोखा उदाहरण है। यह वास्तुकला मुंबई के निकट एलिफेंटा, एलोरा और चेन्नई के निकट के महाबलीपुरम् से कम नहीं हैं। ये सारी कलायें ईशा पूर्व की हैं।

बिहार के बौद्ध गया (बोध गया) का मंदिर मूलतः गुप्तकाल के अंतिम वर्ष में बनाया गया था जिसका बाद में विस्तार किया गया और आज यह बौद्ध "शान्ति

स्तूप" के नाम से विश्वप्रसिद्ध है। विश्व के बौद्ध धर्म के अनुयायियों का यह महानतम तीर्थस्थान है। राजगीर महान बौद्ध भिक्षु दलाईलामा के इस शान्तिस्तूप के कारण बिहार की धरती को विश्व का स्वर्ग कहा है। यह शान्ति स्तूप पहाड़ पर बना मंदिर है, जिस पर पहुँचने के दो मार्ग हैं:-

एक मार्ग बिजली पर चलने वाला एअर रोप है। इस मार्ग के द्वारा बिना चले आप लिफ्ट के सहारे एअररोप से यहाँ पहुँच सकते हैं। दूसरा मार्ग पहाड़ काटकर बनाया गया है जिसपर आप पैदल जा सकते हैं। इन पहाड़ी स्थानों को घनघोर जंगलों के बीच आप पायेंगे। जंगल में आप नीम, पीपल, बरगद, अमलतास, बरुश, नारियल, बांस, बबुल, शहबलन एवं अन्य पौधों एवं पेड़ पायेंगे। इन जंगलों के बीच मोर पक्षी जो हमारा राष्ट्रीय पक्षी है का मनमोहक नृत्य देखा जा सकता है।

इन घनघोर झाड़ियों असंख्य पेड़ पौधे पर कलरव करते पक्षी काफी प्यारे लगते हैं। तोता, मैना और कोयल का मधुर स्वर जहाँ बरबस लोगों को अपनी ओर खींचते हैं, वहीं कुछ पशु हाथी, गेंडा जंगली गीदर गिलहरी, लंगूर, बंदर का चित्कार सुनाई पड़ते हैं। अगिनीत कलाओं की हमारी विरासत समृद्ध और अनूठी है। हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान का आइना है।

इन प्राकृतिक दृश्यों से अभिभूत होकर "पथिक" ने सांसारिकता छोड़ दी। इन सौंदर्यों के वशीभूत कवि की कितनी सुंदर कल्पना है:-

“रागरथी रविराग पथी आवेराग
विनोद बसेरा”।
प्रकृति भवन के सब विभवों से सुन्दर
सरस सवेरा।।

ये पेड़ पौधों जहाँ छितराये हुए आकर्षक दिखते हैं वहीं चिकित्सकीय और रोगनाशक गुणों के अतिरिक्त लकड़ी और इंधन का समृद्ध स्रोत रहे हैं।

दर्शक बौद्ध गया के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं बौद्ध मंदिर के दर्शन के बाद राजगीर के प्रसिद्ध गर्मकुण्ड में स्नान करना नहीं भूलते। यहाँ का प्रसिद्ध झरना केवल प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुभव उदाहरण है बल्कि न प्रकृति का रहस्य भी। यहाँ से सिलाव का खाजा खाते-खाते आप नव विहार नालंदा पहुँच जायेंगे। नालंदा का खंडहर अभी भी पुरानी स्मृति लिए हमारे गौरव का प्रतीक है।

इसके बाद हम पटना की पवित्र धरती पर प्रवेश करते हैं। यह ऐतिहासिक धरती पहले पाटलीपुत्र नाम से विख्यात था जो कई शासकों के साथ मौर्यवंश के सम्राटों की राजधानी थी। खासकर मौर्यवंश के महाप्रतापी बादशाह चन्द्रगुप्त मौर्य के पोते सम्राट अशोक का कार्यक्षेत्र रहा है। वर्तमान पटना के कुम्हार में अशोक सम्राट के साम्राज्य का भग्नावेश आज भी हमें प्राचीन भारत के गौरवपूर्ण इतिहास की गाथा प्रस्तुत करता है। उनके काल का बना हुआ माँ का मंदिर एवं अशोक का बनाया हुआ अगमकुँआ आज भी वैज्ञानिकों के लिए रहस्य है जो इसकी गहराई नहीं नाप पाये हैं।

पटना की पहचान जहाँ मौर्य काल की राजधानी के रूप में हुई है वहीं इसी धरती के एक लाल का स्मरण किये बिना बिहार क्या सम्पूर्ण भारत के दर्शन व्यर्थ हैं, वह लाल और कोई नहीं बल्कि सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी है। जिनके त्याग, जिनकी तपस्या एवं जिनकी देशभक्ति बिहार ही क्या सम्पूर्ण भारतीयों

के लिये प्रेरणा-स्रोत हैं। उनकी देशभक्ति और समाजिक साम्प्रदायिक सौहार्द आज के लिए आदर्श है। उनका लिखा ग्रन्थ न सिर्फ सिखों के लिए था, बल्कि उनका लिखा 'गोविन्द रामायण' हिन्दुओं के लिए पूजनीय ग्रन्थ है। उसमें उन्होंने आदर्श पति, आदर्श पिता, आदर्श भाई, परिवार, समाज के लिए आदर्श चरित्र का चित्रण किया है जिसमें मजबूत देश की कल्पना है। आज पटना की पहचान उनकी स्मृति में बना "गुरुद्वारा" है जिसके दर्शन बिना आपका बिहार दर्शन का स्वप्न अधूरा ही नहीं व्यर्थ है। इस मंदिर के गुंबद पर खड़ा होकर आप सम्पूर्ण पटना की प्राकृतिक छटा को देख सकते हैं। जहाँ से आप आसमान को छूता गोलघर देखते हैं, तो समुद्र के समान फैली गंगा दिखती है। सूर्योदय के समय यहाँ से गंगा जलनिधि लगती है। जिसके प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए बिहार के ही सुपुत्र राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा है -

“निकल रहा है जलनिधि तल पर
दिनकर विम्ब अधूरा
कमला के कंचन मंदिर का मानो
कान्त कंगूरा।”

इन स्मृतियों की चर्चा के क्रम में अगर रोहतास किला की चर्चा नहीं की जाय तो इतिहास के साथ बेमानी होगी, क्योंकि इसका सौन्दर्य और इसकी कलाकृति हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा किला महाराष्ट्र के समुद्र में जंजीरा और सिंहगढ़ किले तथा राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और रणथंभौर के भव्य किले से कम नहीं है। इसी क्रम में सासाराम में बना शेरशाह का मकबरा हमें शेख सलीम चिश्ती के मकबरे की याद दिलाती है जहाँ प्रकृति के विरासत एवं प्राचीन धरोहरों का संस्मरण हमें गौरवान्वित

करता है वहीं कोशी की विभिषिकाओं को हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। कोशी क्षेत्र के छः खण्ड-अररिया, कटिहार, पूर्णियाँ, सहरसा, मधेपुरा एवं सुपौल हमारे महत्वपूर्ण अंग हैं। इनकी प्राचीन परम्परायें हमारा गौरव रहा है। जब कोशी क्षेत्र का संस्मरण करते हैं तो इसके महान विभूति श्री फणिश्वरनाथ रेणू की आनायास याद आ जाती है। रेणु की कर्तव्यनिष्ठा, सामाजिक उत्थान उनके दर्शन, उनकी रचनाओं में परिलक्षित होती है। उनकी सरलता एवं अनुपम कृतियाँ पूरे राष्ट्र में अद्वितीय सिद्ध हुई हैं।

पंडित जवाहर लाल नेहरू की कल्पना एवं इस सपना को साकार करने के लिए उनके प्रयास ने 1952 में कोशी बांध का रूप दिया था जो 'बिहार का अभिशाप' वरदान सिद्ध हुआ था। हरे मेरे पौधों, उच्चतर एवं वृहत खेती ने इस क्षेत्र को धन-धान्य से परिपूर्ण किया था। किंतु 2008 की बाढ़ की विभिषिका ने कोशी के कुरसेला बांध को तोड़कर प्रलयकारी विध्वंश उत्पन्न कर दिया और देखते ही देखते बाढ़ का प्रकोप पूरे कोशी खंड को अपने चपेट

में लिया गया। चारों ओर पानी-पानी और छः खण्डों की धनी आबादी निर्जन एवं सुनसान हो गया। क्या मानव पशु-पक्षी अन्न-अन्न के लिए तरसने लगे और उनके पुनर्स्थापन के लिए तरह तरह के प्रयास किये जाने लगे। योजनाएँ बनने लगी। पुनः बाँध बनाने का प्रयास किया जाने लगा। परन्तु, हमारे सामने एकमात्र प्रश्न हो गया है कि उनके पुनर्स्थापन के लिए जो कदम उठाये जा रहे हैं वह कितना उपयोगी होगा। उससे उन्हें कितना लाभ पहुँचेगा? यह सोचने का विषय है कि इन कदमों से वह अपने ही जवीन और भाग्य पर कुछ काबू रख पायेंगे? जब तक एक भी ब्यक्ति भूखा रहता है हमारा बिहार, हमारा गौरव एवं विरासत में हमारी परम्परायें रोती रहेंगी। आज हमारा कर्तव्य पीड़ित लाखों लोगों के आँसुओं को पोछना है। और अंत में गाँधी की यह वाणी कितनी प्रासंगिक हो गयी है कि हमें उनके प्रति किये गये कर्तव्यों का आत्म अवलोकन करना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा-क्या उससे उन लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त हैं।



पटना एक नजर

- श्री संदीप कुमार

सुपुत्र-श्री विनोद प्रसाद साह,
लेखा अधिकारी



बिहार की राजधानी पटना, मूलतः पाटलिपुत्र के नाम से जाना जाता है। यह गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है। महान अफगान शासक शेरशाह सूरी के शासन काल में 16वीं शताब्दी में इसका नामकरण “पटना” हुआ था।

प्राचीन भारतीय इतिहास के पन्नों में हर कोई उस स्थान पर स्थित पाटलिपुत्र नामक पूर्व मशहूर शहर को जानता है जहां आज पटना अवस्थित है। इस शहर ने भारत के प्रथम मुख्य शासन के उत्थान तथा पतन को देखा है। इसके गौरव की अवधि 6ठी शताब्दी बी०सी० से 5वीं शताब्दी ए०डी० तक रही है। अजातशत्रु (मगध राजाओं में द्वितीय) ने गंगा नदी के निकट पाटलीग्राम में एक छोटे किले की स्थापना की थी। यह बाद में पाटलिपुत्र का मशहूर महानगर बनी तथा इस पर चन्द्रगुप्त मौर्य (अलेक्जेंडर के समकालीन) तथा उनके बेटे अशोक जो बौद्ध धर्म के विस्तार के लिये मशहूर हैं, द्वारा शासन किया गया। अन्य राजाओं जिन्होंने पटना से शासन किया गुप्ता तथा संग थे।

शेरशाह सूरी (16वीं शताब्दी) तथा अजीम उशशान (18वीं शताब्दी), मुगल सम्राट औरंगजेब के पोते, जिन्होंने इसका नामकरण अजीमाबाद किया, ने भी यहाँ से शासन किया।

प्राचीन पाटलिपुत्र का अवशेष आज भी शहर के बाउंड्री के भीतर यहाँ-वहाँ फैला देखा जा सकता है।

यहाँ की मुख्य भाषायें भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी है। साक्षरता दर 63.82 प्रतिशत है। भ्रमण का उपयुक्त समय अक्टूबर से मार्च है। यह दिल्ली से 1015 कि०मी०, कोलकाता से 556 कि०मी०, मुम्बई से 1802 कि०मी० दूरी पर स्थित है।

यह गर्मी में गर्म तथा आद्र रहता है तथा जाड़े में ठंढा। सापेक्षित आद्रता गर्मी के दौरान 100 प्रतिशत तक चला जाता है। यह आद्रता मौनसून में अधिक वर्षा होने पर मध्यम हो जाता है। रोड नेटवर्क से अच्छी तरह जुड़ी रहने के कारण यात्रा करना सुविधाजनक है। इसका मुख्य रेलवे स्टेशन पटना जंक्शन है। पटना एयरपोर्ट से हवाई यात्रा की भी सुविधा है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

तख्त श्री हरमंदिर जी, पटना साहिब



शहीद स्मारक

उजले संगमरमर से बना यह वस्तुतः एक सिक्ख तीर्थस्थल है जो अंतिम सिक्ख गुरु, गुरु गोविन्द सिंह, के जन्म को मनाने हेतु महाराजा रंजीत सिंह द्वारा बनाया गया था। इसे गुरु की अवतार भूमि भी कहा गया है। सिखों का दूसरा महान तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब में स्थित है। सिखों के दसवें गुरु खालसा पंथ के प्रवर्तक गुरु गोविन्द सिंह की जन्म-भूमि होने के कारण यह सिक्ख धर्मावलम्बियों के महान तीर्थ-स्थल के साथ-साथ पर्यटकों के लिये भी खास आकर्षण का केन्द्र है। यह राजधानी की सबसे सुंदर एवं मुख्य इमारतों में से एक है। यहाँ हमेशा गुरुवाणी और सबद कीर्तन चलता रहता है।



सह सचिवालय के समक्ष आधुनिक मूर्तिकला का अद्भुत नमूना है, जहाँ सात स्वतंत्रता सेनानियों ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपने प्राण न्योछावर किये थे।

गोलघर

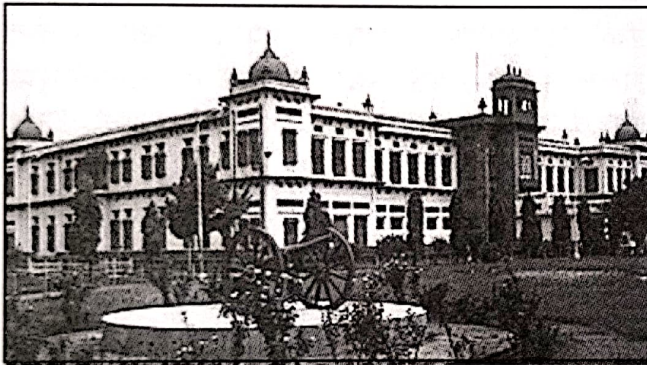
गुरु गोविन्द सिंह जी के जन्म के अवसर पर यहाँ की झांकी देखते ही बनती है। गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म इसी स्थान पर पौष सुदी सप्तमी संवत् 1723 तदनुसार 22 सितम्बर 1666 ई० को हुआ था। गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने बचपन के लगभग सात वर्ष पटना में व्यतीत किये थे। बाल जीवन से जुड़ी अनेक स्मृतियाँ इस पुनित भूमि पर छोड़ गये। गुरु गोविन्द सिंह जी के बचपन का पालना, हाथी-दाँत का खड़ाउ, चंदन का कंधा आदि आज भी सुरक्षित हैं। गुरु गोविन्द सिंह के हस्ताक्षर-युक्त दशम ग्रंथ साहिब की मूल प्रति भी यहाँ सुरक्षित है। इसके अलावा समय-समय पर गुरु गोविन्द सिंह और गुरु तेगबहादुर ने पटना की संगत के नाम जो हुक्मनामा और पत्र दिये थे वे भी सुरक्षित हैं। कोई भी विशेष अनुमति प्राप्त कर गुरु जी के व्यक्तिगत सामानों को देख सकता है।



गांधी मैदान के पश्चिम में स्थित इस भवन का निर्माण 1786 में बंगाल इंजीनियर्स के कैप्टन जॉन गार्स्टिन ने किया था। 1770 में बंगाल प्रान्त में आये भीषण अकाल के कारण लाखों लोगों की मौत के बाद ब्रिटिश सरकार की ओर से तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने तय किया कि ब्रिटिश सैनिकों के लिये अनाज का भण्डारण आवश्यक है और इसके लिये लंबी बहस

और कवायद के बाद अनाज के भण्डारण के लिये गोलघर का निर्माण करवाया गया था। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के धरोहर माने जाने वाले अद्भुत दर्शनीय स्थलों में से एक है- पटना का गोलघर। इसकी क्षमता एक बार में 1,40,000 टन अनाज रखने की है। बौद्ध स्तूप के स्थापत्य शैली में बने इस गोलघर में उपर की ओर जाने के लिए 145 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ये सीढ़ियाँ घुमावदार हैं। पटना का गोलघर अद्भुत बीहाइव प्रारूप वास्तुकला का 96 फीट ऊंची संरचना है। गोलघर की ऊँचाई से शहर की एक दर्शनीय छवि दिखती है। इसके दरवाजे अन्दर की ओर खुलते हैं। अंग्रेजों द्वारा इसका नामकरण गोलघर या अनाज घर किया गया था।

पटना संग्रहालय (जादूघर)



पटना संग्रहालय लोदीपुर में स्थित 1917 में स्थापित बिहार का सबसे प्राचीन जादूघर है। म्युजियम में मौर्या तथा गुप्ता अवधि की मेटल तथा स्टोन मूर्ति कला भी है। इंडोसार सैनिक शैली में निर्मित पटना संग्रहालय का भवन भारत के भव्य संग्रहालय भवनों में से एक होने के कारण स्थानीय तथा विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस संग्रहालय के कुल ग्यारह दीर्घाओं में बुद्ध अस्थि अवशेष, मंजूषा दीर्घा विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें भगवान बुद्ध की अस्थियां हैं, जो

बौद्ध धर्म के श्रद्धालुओं के लिये खासतौर पर महत्वपूर्ण है। प्रस्तर दीर्घा में कलात्मक मूर्तियों के साथ दीदारगंज पटना से प्राप्त उसी सदी की यक्षिणी की मूर्ति में नारी शरीर के सौन्दर्य तथा आभूषण को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। कांस्थकला दीर्घा में कूर्किहार (गया) तथा नालंदा, बेलवा (सारण), अलबारा (धनबाद), नेल्लोर तथा नेत्र पट्ट (आंध्रप्रदेश) से प्राप्त प्रतिमाएँ अष्ट धातु की बनी हुई हैं। संग्रहालय में उड़ीसा से प्राप्त शिल्पों का सुन्दर संग्रह है।

मृण मूर्तिका दीर्घा में विश्वविख्यात, उत्कृष्ट संग्रह पटना, वैशाली, बेलवा, बोधगया, नालन्दा, मथुरा, कौशाम्बी, वाराणसी और पहाड़पुर (बंगलादेश) से प्राप्त की गयी है। प्राकृतिक इतिहास दीर्घा में कई प्रकार के जन्तुओं और जानवरों के अवशेषों को रासायनिक पदार्थों के द्वारा संरक्षित कर के रखा गया है, जो स्कूली बच्चों के लिये खास आकर्षण का केन्द्र होता है। संग्रहालय की तीन दीर्घायें चित्रकला दीर्घा, तिब्बतीयंका दीर्घा तथा भगवान बुद्ध की अस्थियों की दीर्घा वातानुकूलित है। चित्रकला दीर्घा में राजस्थानी शैली, मुगल शैली, दिल्ली और पटना शैली के चित्रों का संग्रह है। तिब्बतीयंका दीर्घा में चित्रों का महत्वपूर्ण संग्रह है जो पंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा प्रदत्त है।

बड़ी पटन देवी



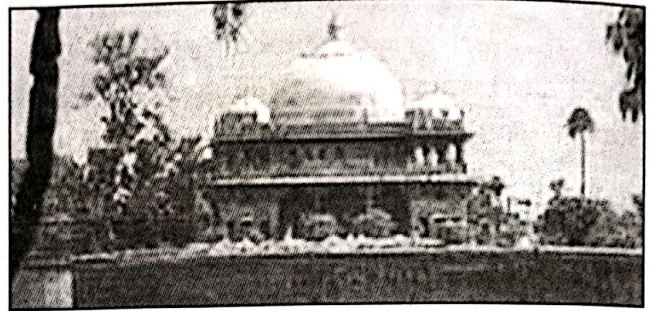
यह मंदिर सिटी के महाराजगंज क्षेत्र में अवस्थित है जहां कभी वेस्टर्न गेट था। भारत के सिद्ध शक्तिपीठों में बड़ी पटनदेवी का प्रमुख स्थान है। गुलजारबाग स्टेशन से एक किलोमीटर उत्तर स्थित यह शक्तिपीठ 'कौलिक' मंत्र की सिद्धि के लिये काफी प्रचलित है। यहाँ सती का दाहिना जंघा एवं वस्त्र गिरा था। किंवदंती है कि सती का वस्त्र (पट) गिरने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम पाटलीपुत्र पड़ा। मंदिर-परिसर में काले पत्थर की महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती की प्रतिमा भी स्थापित है। इसके अलावा यहाँ भैरव की प्रतिमा भी स्थापित है जिसे व्योमकेश के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि मंदिर में स्थापित मूर्तियां सतयुग की हैं। मंदिर परिसर में ही योनिकुंड है। इसके बारे में प्रचलित मान्यता है कि इसमें डाली गयी हवन सामग्री भस्म के रूप में परिणत होकर भूगर्भ में चली जाती है। नवरात्र के मौके पर माता का पट चौबीसों घंटे खुला रहता है। यहाँ पशुओं की बली देने की भी प्राचीन परम्परा है। दुर्गा पूजा के दौरान महाअष्टमी, महानवमी को यहाँ अपार जनसैलाब उमड़ता है। इस अवधि में साधक अपनी साधना-पाठ व सिद्धि भी किया करते हैं।

छोटी पटनदेवी



यह पुराने शहर के अंदर पूर्वी गेट के निकट सिटी चौक क्षेत्र में अवस्थित है तथा हर मंदिर जी के निकट है। यह किंवदंती है कि राजा मानसिंह, अकबर के जनरल द्वारा यहां मूर्ति स्थापित की गई थी।

मनेर



सोन नदी के पुराने चैनल के किनारे पर पुराने किला के अवशेषों को देखने पर पता चलता है कि मनेर पुराने समय का एक रणनीतिक प्वाइंट था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मौर्य काल में पाटलीपुत्रा का वेस्टर्न गेट था। सूफी-संतो की यह पहली कर्म भूमि रही है। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में मनेर सूफियों के आरंभिक केन्द्रों में अहम् स्थान रखता है। कहते हैं कि यहाँ मन से मांगी गई मन्तवें बहुत जल्द पूरी हो जाती हैं।

मुगलकालीन दो मकबरों के कारण मनेर को अद्भुत प्रसिद्धि मिली है। यहाँ प्रति दिन सैकड़ों लोग अकीदत के लिये आते हैं। एक मकबरा शाह दौलत का है जो छोटी दरगाह के नाम से जाना जाता है, जबकि दूसरा मकबरा शेख याहिया मनेरी या मकदुम याहिया का है जो बड़ी दरगाह के नाम से प्रसिद्ध है।

बड़ी दरगाह के ठीक सामने और तालाब के पश्चिम हजरत मकदुम जलाउद्दीन सोहरवर्दी की मजार है। उससे सटे एक

भाई कंगूरा की कनाती खुली छत वाली मस्जिद है। मनेर में सालार मसूद की याद में गाजीमियां का मेला एक लोकोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसमें सभी धर्मों और संप्रदायों के लोग बढ़ चढ़ के हिस्सा लेते हैं। मनेर का दरगाह सूफियों की अन्य दरगाहों के समान आज भी बंधुत्व, प्रेम और मानव सेवा का एक आदरणीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

कैसे जायें :-

सड़क मार्ग :- पटना से 30 कि.मी.

रेलमार्ग :- निकटवर्ती रेलवे स्टेशन-बिहटा स्टेशन

हवाई मार्ग :- पटना हवाई अड्डा

मौसम :- नवम्बर से फरवरी

संजय गांधी जैविक उद्यान



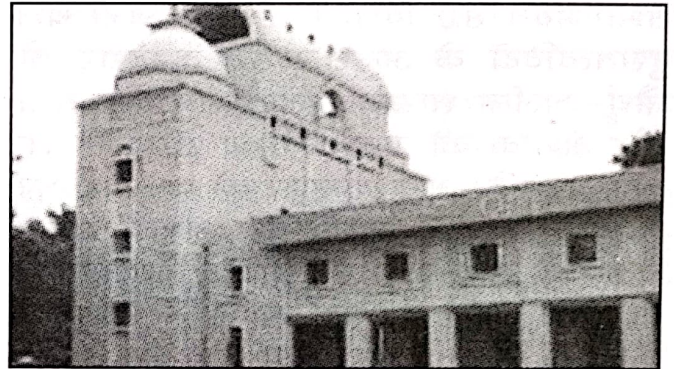
जैविक उद्यान बेली रोड पर अवस्थित है तथा यहाँ अधिसंख्य चिड़ियाँ तथा जानवर हैं। यह बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ का मुख्य आकर्षण पेड़ पर बना लकड़ी का घर है। यहाँ कृत्रिम झील भी है जहाँ बोटिंग किया जा सकता है। इस उद्यान की परिक्रमा हेतु बच्चों के लिए रेलगाड़ी की भी व्यवस्था है। मुख्य जानवरों में शेर, चीता, बाघ, लकड़बग्घा, हिरण, नील गाय, बंदर, दरियाई घोड़ा आदि हैं। मुख्य पक्षियों में शुतुरमुर्ग, तोता, मैना, मोर, कबूतर आदि हैं। एक सांप घर भी है।

पादरी की हवेली



यह डच स्टाइल का एक चर्च है। मदर टेरेसा ने यहाँ नर्सिंग में अप्रेण्टिसशिप किया।

सदाकत आश्रम



बिहार विद्यापीठ का मुख्यालय, अब यह राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद अपनी सेवा निवृत्ति के पश्चात् यहीं रहते थे। यहाँ एक छोटी म्युजियम है जो उनकी व्यक्तिगत सामानों को प्रदर्शित करता है। आजकल यह बिहार कांग्रेस का मुख्यालय भी है।

कुम्हारार



पटना जंक्सन से 5 कि०मी० दूर कंकड़बाग रोड पर स्थित कुम्हार भारतीय पुरातत्व के हिसाब से काफी महत्वपूर्ण है। यहां प्राचीन पाटलिपुत्र शहर के अवशेष मौजूद हैं।

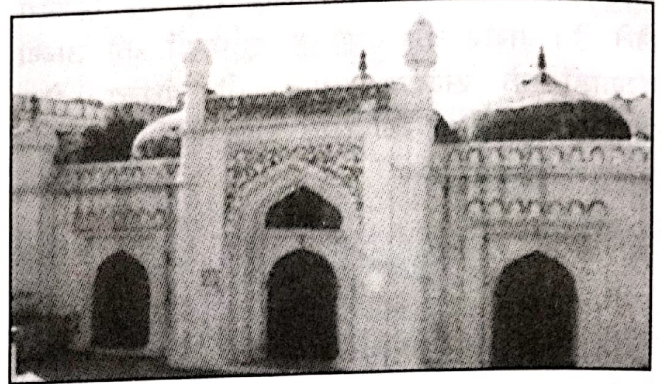
पार्क में हुई खुदाई में ऐतिहासिक मौर्य वंश के अवशेष मिले हैं जिसकी अवधि 322 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व की है। इन अवशेषों से हमें उस समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक धरोहरों की पूरी जानकारी मिलती है। उत्खनन में मिले मौर्य-कालीन राज प्रसाद/ सभा भवन के चमकदार, बलुआही पत्थर से बने बड़े-बड़े खंभों के टूटे अंश आज भी यहाँ सुरक्षित हैं। यह सभा-भवन 80 विशाल खंभों से बना था। पुरातत्वविदों के अनुसार इस कुम्हार को मौर्य-कालीन शासक अजात शत्रु, चन्द्रगुप्त और अशोक की राजधानी का मुख्य हिस्सा कहा जाता है। आज कुम्हार को पार्क का रूप दे दिया गया है जहाँ लोग अपना समय बिताने के साथ-साथ ऐतिहासिक विरासतों पर भी नजर डालते हैं। यहाँ खुदाई में कई चीजे मिली हैं जिसमें सबसे बड़ा आकर्षण है 80 पीलर वाला असेंबली हॉल। खुदाई में मिली दूसरी चीज आनंद बिहार के नाम से जाना जाता है। यह एक बौद्ध निवास स्थल था जो लकड़ी का बना हुआ था एवं इस पर मिट्टी का आवरण था। इसे आज भी पर्यटकों के दर्शनार्थ रखा गया है। इसके बाद यहाँ खुदाई में एक आरोग्य बिहार भी मिला है जिसके बारे में ऐतिहासिक मान्यता है कि यह प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य और वैद्य धन्वन्तरि का था। ये गुप्त कालीन (4 थी से 6वीं सदी ई०) आचार्य धन्वन्तरी द्वारा संचालित आरोग्य बिहार एवं चिकित्सालय के अवशेष ईंट की बनी कोठरियों के रूप में मिले हैं।

यहाँ एक दुराखी देवी का मंदिर भी मिला है जो गोलाकार स्तूप की तरह का था।

कुम्हार-भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा सुरक्षित घोषित स्मारक की सूची में शामिल है।

यह स्थान चारों तरफ हरियाली से घिरा है तथा अत्यन्त मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

पत्थर की मस्जिद



इसका निर्माण बिहार के राज्यपाल के रूप में अपनी अवधि के दौरान मुगल सम्राट जहांगीर का बेटा परवेजशाह द्वारा की गयी थी।

मुगल सम्राट जहांगीर के पुत्र परवेजशाह द्वारा 1621 ई० में निर्मित यह मस्जिद सांजी मस्जिद के नाम से भी जाना जाता है तथा संरचना वास्तुकला का मार्बल है।

“दुर्लभ कृतियों का खजाना, खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी”



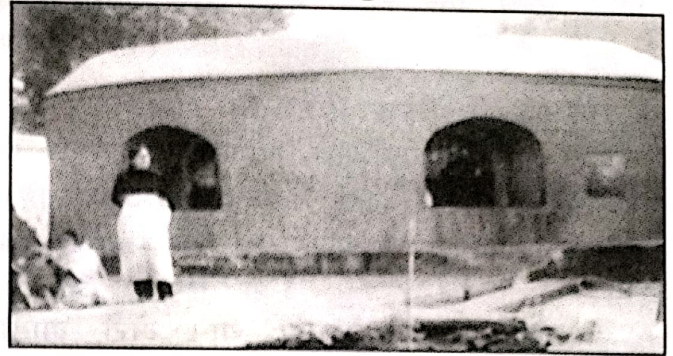
भारत में पांडुलिपियों की दुनियाँ के नाम से मशहूर यह लाइब्रेरी मध्यकालीन पांडुलिपियों का खजाना है तथा यह दुर्लभ अरबी तथा पारसी पांडुलिपि, समृद्ध पेंटिंग तथा दुर्लभ पुस्तकों के अत्यधिक भॉल्यूम के लिये प्रसिद्ध है। इन्हीं दुर्लभ पांडुलिपियों में से एक

है तारीख-ए- खानदान-ए-तैमूरिया जो दुनिया में इकलौती प्रति है तथा यही मौजूद है। इसमें प्रख्यात मुगलकालीन शासक अकबर और जहांगीर के दरबार में मौजूद चित्रकारों की बनाई 132 सुन्दर तस्वीर हैं एवं जहांगीर के लिखे लेख भी हैं।

गंगा के सुरम्य तट पर स्थित खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 1891 में जनाब खुदाबख्श खान ने की थी। पिता जनाब मोहम्मद बख्श के मृत्यु के समय किये गये वादे को निभाने हेतु पुत्र मौलवी खुदाबख्श ने अरब जाकर और कई जगहों पर घूम-घूम कर प्राचीन किताबें और दुर्लभ पांडुलिपियों को इकट्ठा की और इस पुस्तकालय में रखा। पुस्तकालय में आज 21,000 से अधिक ओरियंटल अभिलेख और ढाई लाख से अधिक छपी पुस्तकें मौजूद हैं। आज यह दुनिया का एक विशाल और दुर्लभ पुस्तकालय माना जाता है। पुस्तकालय के समृद्ध संग्रह को देखते हुए भारत सरकार ने इसे 1969 ई० में राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय घोषित किया है। खुदाबख्श लाइब्रेरी आज सात विश्वविद्यालयों का अनुसंधान केन्द्र भी है। यहाँ कई भाषाओं जैसे-उर्दू, फारसी, अरबी, इरानी, मुगल, कश्मीरी आदि भाषाओं में भी पुस्तकें मौजूद हैं। यहाँ मौजूद कई दुर्लभ कृतियों में ताजकिरा जैसी अहम् इस्लामिक पुस्तक और स्वतंत्रता-संग्राम और राष्ट्रीय-एकता से जुड़ी पुस्तकें मौजूद हैं।

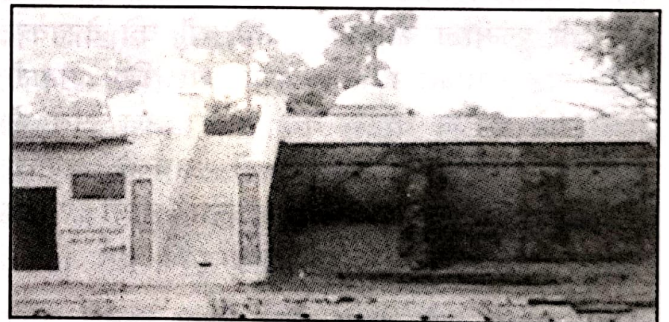
कुछ ऐसी भी कृति हैं जो दुनिया में और कहीं नहीं है, जैसे एक इंच चौड़ी कुरान की प्रति और युनिवर्सिटी ऑफ कोरडोबा, स्पेन की कई नई और पुरानी किताबें। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तकालय भारत के साथ-साथ दुनिया के कई संस्कृतियों की अद्भुत जानकारीयाँ समेटे हुए है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अगमकुआँ



इस कुँआ के पुराविद् महत्व पर प्रकाश डालते हुए वेडल के रिपोर्ट में कहा गया है कि यह खूनी कड़ाह के साथ अशोक का तथाकथित नरक (हेल) था। यहां राजसी स्लॉटर हाउस अथवा आउट किचेन का स्थान था। यह कुआँ वर्तमान में हिन्दुओं का पूजास्थल है जो इसमें रुपया तथा फूल डालते हैं तथा चेचक से सुरक्षा हेतु प्रार्थना करते हैं। शीतला देवी का मंदिर, चेचक की देवी, यहीं नजदीक में है। ऐसा माना जाता है कि कुआँ में अथाह पानी है। एक बार बहुत से मोटर इसे खाली करने हेतु लगाया गया था, लेकिन बहुत दिनों बाद भी यह कुआँ नहीं सूखा।

कमालदाह



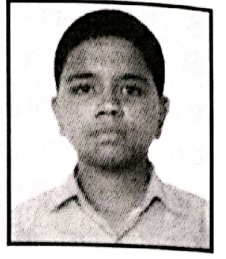
गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के निकट कमालदाह क्षेत्र ईंट के अवशेषों की एक ऊँची मुकुट है जहाँ दो जैन मंदिर खड़े हैं। यहाँ जैन संत स्थूलभद्र का तथा सुदर्शन स्वामी का मंदिर है।



वो पहचान

- श्री अश्विनी अनुराग

सुपुत्र-श्री प्रेम निवास मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी



दोपहर का समय था। मेरी गाड़ी स्टेशन पर आ खड़ी हुई थी। मैं अपने दो बड़े भारी और विशालकाय बैग लेकर स्टेशन पर उतर आया। तत्पश्चात मैं सीधा निकास द्वार की ओर बढ़ गया।

मई महीने की धूप और कानपुर की प्रचण्ड गर्मी का साथ हमेशा से चोली दामन सा रहा है। उस मंगलवार को भी स्थिति कुछ ऐसी ही थी। मेरी गंजी खोपड़ी धूप में तवे के समान तप रही थी। शरीर की उर्जा निस्तेज होती जा रही थी। कपड़े पूरी तरह पसीने से सन गए थे। गरम लू की मार से स्टेशन और गाड़ियों में लोगों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भारत की आबादी एकाएक आधी हो गई हो।

स्टेशन पर बिलबिलाते शिशुओं और सर को रुमाल से ढके व्यक्तियों को देखकर मुझे यह आभास हो गया था कि मुझमें गर्मी को सहन करने की शक्ति उन सब से कहीं अधिक थी। अतः, मैं अपनी क्षमता की अधिपत्यता प्रदर्शित करता हुआ सीधा स्टेशन के बाहर चला आया।

परंतु, जो दृश्य मैंने देखा उसने मुझे सन्न कर दिया। और वह स्वभाविक भी था, क्योंकि स्टेशन के निकास-द्वार से लेकर मुख्य द्वार तक ना तो कोई ऑटोरिक्शा, और ना ही कोई बस थी। मेरे चाचाजी का घर स्टेशन से लगभग पैंतीस-चालीस किलोमीटर दूर स्थित था और कानपुर शहर

की विकरालता कुछ इस हद तक थी कि किस्टोफर, कोलम्बस और बास्को-डी-गामा जैसे खोजकर्ता भी इस शहर की भीड़-भाड़ में गुम होकर रह जाते। फिर मैं तो साधारण भारतीय नगरिक था। वाहन की खोज में पैदल बढ़ते हुए मैं स्टेशन से अत्यधिक दूर निकल आया था, परन्तु तत्काल मैं लाचार सा धूप में पका जा रहा था। सभी आस-पास की दूकानों में बड़े मोटे-मोटे ताले लटके हुए थे, और जो दुकानदार अपनी दुकानों पर थे वे भी गिराने की तैयारी कर रहे थे। मेरी स्थिति निरन्तर बिगड़ती जा रही थी और अब गर्मी सहने की क्षमता भी क्षीण होती जा रही थी। मैंने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली। करीब एक बज रहे थे। तभी एक ऑटो रिक्सा मेरे बगल से गुजरी। इसके पहले कि मैं कुछ समझ पाता, वह अत्यधिक आगे बढ़ चुकी थी और अब उसे रोक पाना संभव न था। मैं माथा पिटकर रह गया। तभी कुछ दूर आगे जाकर वह ऑटो रिक्सा स्वयं रुक गई। मैं स्तब्ध रह गया। मैं दौड़ा-दौड़ा ऑटो रिक्सा तक गया।

मैंने भर्रायी आवाज में पूछा- “नेहरू चौक चलोगे भाई! चालक ने पीछे मुड़कर देखा। मुझे एकाएक ऐसा लगा मानो किसी ने मेरी पुरानी यादों के शान्त भँवर में पत्थर चलाकर हिलोड़े उत्पन्न कर दी हो। मैं एकटक उसे देखता रहा। उस मुख-मण्डल में न जाने ऐसा कौन सा विचित्र आकर्षण

था जिसने मेरा ध्यान स्थिर कर दिया था। मेरी नजरे जाकर उस चालक पर टिक गयी थी। उसके मुख-मण्डल पर फीकी मुस्कान पसरी, जिसने मेरा ध्यान भंग कर दिया। सहसा मेरे मुख से शब्द फूट पड़े “अरे! शम्भू! तुम।” उसने इसारे से मुझे अन्दर आकर बैठने को कहा। ऑटो रिक्सा में पहले से दो और लोग बैठे थे। अतः मैं किनारेवाली सीट पर जाकर बैठ गया।

भयंकर तूफान की तरह मेरे मस्तिष्क में विचारों की पुनर्वृत्ति प्रारंभ हो चुकी थी। मेरी बीती यादों का पुनर्जन्म हुआ था। वह स्मृतियाँ जो कि क्षीणता की कगार पर पहुँच चुकी थी, एक बार फिर अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुई थी और पुनः हरी-भरी हो गयी थी। मन विचारों का विश्लेषण करने में व्यस्त हो गया था और किसी सिनेमा की रील की तरह सारी घटनायें पुनः आँखों के समक्ष घूम रही थी।

यह घटना तकरीबन दस-बारह वर्ष पहले की है। मेरी दादी की तबीयत अत्यधिक बिगड़ गई थी। खून-पानी चढ़ाने की नौबत आ पहुँची थी। पिताजी के दफ्तर से छुट्टी न मिल पाने के कारण मुझे ही दादी को कानपुर के एक प्रतिष्ठित अस्पताल में भर्ती कराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी।

वही स्थल, वही स्टेशन और वही शहर, सब कुछ उस दिन भी वही था जो कि आज मैंने अनुभव किया। जिस गाड़ी से आज मैं स्टेशन पर उतरा था उस दिन भी, मैं उसी गाड़ी से दादी को कमर के बल सहारा देता हुआ स्टेशन पर उतारा था। परन्तु, तब की और अब की मानसिकता में अत्याधिक अन्तर था। आज मैं चाचाजी के यहाँ उत्साहपूर्ण भाव से घूमने जा रहा था, परन्तु उस दिन मेरे माथे पर मानों बल पड़ गए थे। इतनी बड़ी जिम्मेदारी निभानी थी

और एक सच्चे पुत्र होने का फर्ज अदा करना था।

चाचाजी की गाड़ी रास्ते में ही खराब हो जाने के कारण वह समय पर स्टेशन नहीं पहुँच पाए थे। अतः दादी को लेकर अस्पताल तक का फासला अपने पैरो पर ही तय करना था।

परन्तु, अहो भाग्य! समय प्रतिकूल बन गया था। कमबख्त चालकों ने भी उसी दिन हड़ताल पर जाने का निश्चय कर लिया था। इस अनिश्चित कालीन हड़ताल से कानपुर शहर की परिचालन व्यवस्था बुरी तरह से ठप हो गई थी। स्टेशन के सामने गाड़ियाँ तो कई थी, परन्तु उनमें से कोई भी जाने को राजी नहीं था। अपनी दादी की स्थिति की दुहाई देकर मैं सभी चालकों के सामने गिड़गिड़ाता फिर रहा था, परन्तु उनके कठोर हृदयों पर मेरे विलाप का कोई प्रभाव पड़ता मालूम नहीं हो रहा था।

ऐसी विकट स्थिति में केवल एकमात्र सहारा बना वही ऑटोरिक्शा चालक, ‘शंभू’। हड़ताल और हड़ताल की परवाह किए बिना उसने मुझे और मेरी दादी को अपनी ऑटोरिक्शा में आश्रय दिया। उस दिन मेरे हृदय पर उस अपरिचित चालक ने एक ऐसी छाप छोड़ी जिसका बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता। अपना हित चिंतक समझकर शंभू ने अपने सारे दुःख और अपनी समस्त वेदना को मेरे साथ बाँट लिया था।

बातों-बातों में उसने मुझे बताया कि किस तरह एक छोटी सी भूल ने उसके सुखी संपन्न परिवार का विनाश कर दिया था।

दरअसल, एक सुबह जब शंभू उठा तो उसने देखा कि उसकी पंचवर्षीय पुत्री, ‘दीपा’ बुखार में पड़ी थी और ख़ॉस रही

थी। शंभू ने अनुमान लगाया कि यह अवश्य ही मौसमी बुखार होगा जो कि चंद दिनों का मेहमान होता है। अतः वह हमेशा की तरह अपने काम पर चला गया।

परंतु, दोपहर के समय उसकी पत्नी ने फोन करके उसे बिलखती आवाज में दीपा की मृत्यु की सूचना दी। शंभू के पाँव तले जमीन खिकसती मालूम हुई। पल भर में समुद्री लहरों ने कमजोर नींव को धराशायी कर दिया।

इस घटना के बाद शंभू के जीवन में भीषण परिवर्तन आया। वह समय और काल का संबंध जान चुका था। एक-एक पल की अहमियत उसके लिए मायने रखने लगी।

उस दिन मेरी दादी की स्थिति ने उसे सोचने पर विवश कर दिया था। वह पुनः अपनी भूल दोहराना नहीं चाहता था, क्योंकि इसका खामियाजा वह पहले ही भुगत चुका था। अंततः बिना समय गँवाये वह शीघ्रता

से हमे लेकर अस्पताल पहुँचा। सही समय पर दादी भर्ती हुई, सही समय पर उनका उपचार हुआ और महीने-डेढ़ महीने में वह पुनः स्वस्थ हो गई थी।

इस घटना का स्मरण होते ही मेरी आँखें आँसू से डबडबा गईं। शंभू की पुरानी छवि एक बार फिर विस्तृत रूप में उभर आई थी। उसका परोपकार अविस्मरणीय था। उसके एहसान की बदौलत ही आज दादी जीवित थी।

“साहब! लो, आ गया नेहरू चौक” शंभू ने कहा! मेरा ध्यान एकाएक भंग हुआ। मैंने शंभू को सौ रूपए का एक नोट थमाना चाहा परंतु, उसने कहा “आपसे पैसे नहीं ले सकता, साहब”। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, वह अपनी ऑटोरिक्षा को सड़क पर सरपट दौड़ाता हुआ आगे बढ़ गया था, जिसके पीछे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था “लौट आओ, प्यारी दीपा।”





भारत की बेटी



- श्री शंकर प्रसाद वर्मा,
सहायक लेखा अधिकारी



तू भारत की बेटी सबसे न्यारी हो,

कभी तू दुर्गा, कभी तू काली, तू कभी झॉंसी वाली रानी हो

कभी तू सीता, कभी तू राधा, तू कभी यशोदा माई हो।

तू तपस्विनी अनुसूईया सी और कभी तू भक्तिन शबरी मातासी,

प्रेम की अकथ कहानी हो, बैरागन मीराबाई हो।

तू गंगा हो, तू यमुना हो, तू माँ सीता सी त्यागी हो,

तू लक्ष्मी हो, तू सरस्वती हो, तू ही सर्वज्ञ की जननी हो।

तू भारत की बेटी सबसे न्यारी हो।

तू वृक्ष सा ज्ञानी-दानी हो और परोपकारिता की मूरत हो,

योग विद्या की धनी तू सुलभा देवी हो।

तू सदा सलामती निरंकार,

तू कालों का महाकाल, भयमुक्त सदा विचरण करती,

रणचण्डी माता काली हो।

सबको भयमुक्ति का पाठ पढ़ाती हो।

कभी चावला, कभी विलियम बन अंतरिक्ष में उड़ती हो,

कस्तूरवा, इन्दिरा, प्रतिभा बन देश को प्रगति की राह दिखाती हो,

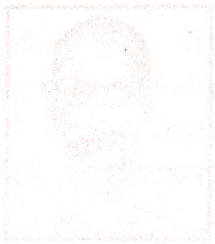
कभी उषा (पी.टी.) कभी सानिया (मिर्जा) बन अंतराष्ट्रीय खेलों में हलचल लाई हो,

सीमाओं की रक्षा में भी बढ़चढ़ कर हाथ बटाई हो,

देश की शान बढ़ाने में तू बेमिसाल महारानी हो,

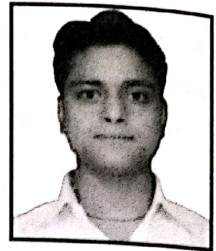
तू भारत की बेटी सबसे न्यारी हो।





वाह रे आजादी

- गौरव आनन्द,
सुपुत्र-श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी



भारत माता की आजादी को हुए हैं बासठ साल,
न जाने इसमें कितने कुरबान हुए माँ के लाल।
बापू बोले सत्य-अहिंसा के ही पथ पर चलना,
और तरक्की के पथ पर आगे ही बढ़ते रहना।

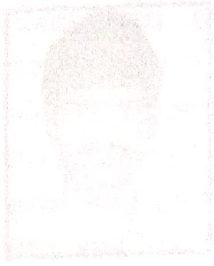
पर बापू आपने तो पैसे का मोल ना बताया,
जिस पैसे ने भारत क्या पूरी दुनिया को नाच नचाया।
कहीं है चोरी, कहीं डकैती, कहीं है रिश्वतखोरी,
फिर भी शायद कसर बाकी रह गई है थोड़ी-थोड़ी

बेटियां बाजार में बिकती,
माँ भाड़े पर कोख है देती।
भाई-भाई की जान है लेता
यहाँ-वहाँ भगवान है बिकता।

सच ही कहा था भैया कि बाप बड़ा ना भैया
है इस दुनिया में सबसे बड़ा रुपैया।
पर मेरी भारत माता के गहने हैं अनमोल,
रिकार्ड तोड़ जनसंख्या की सब मिलके जय बोल।

अपने देश के नेताओं के गुण भी है अपार,
देश सेवा है पार्ट टाइम अब करते हैं व्यापार।
प्रगति पिंजरे में कैद कर दिया और लगा गए ताला,
ऐसे ही नहीं सार्थक होता अरबों का घोटाला।





भूल

- श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी



भूल (Mistake) शब्द को सार्थक करना कोई नहीं चाहता। कारण स्पष्ट है कि “भूल” को लोग नकारात्मक दृष्टि मात्र से देखते हैं। सच कही जाय तो लोगों का “भूल” के प्रति यह नकारात्मक सोच भी अपने आप में “भूल” है। पूर्व में हुई “भूल” ही आदमी को सही रास्ते पर चलने की ओर प्रेरित करती है। भूल की वजह से ही कई ऐसे कार्य/परिणाम निकल पड़ते हैं जो सोच-समझकर आदमी नहीं करता हैं। इतिहास गवाह है कि “भूल” की वजह से ही कई आविष्कार हुए हैं और उस हुई भूल को ही समय के साथ सही ठहराया जाता है।

आज के प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा के दौर में “भूल” का स्थान काफी ऊँचा है। “भूल” अपने आप में सही दिशा की ओर चलने का इशारा है। आज जो भी “भूल” होती है कल “भूल-सुधार” का आधार बनती है और इस तरह सही कदम बढ़ पाती हैं। एक विद्यार्थी द्वारा परीक्षा में की गई ‘भूल’ एक कर्मचारी/अधिकारी द्वारा कार्यालय में की गई ‘भूल’ एक सैनिक द्वारा युद्ध-स्थल पर की गई “भूल” की घटना अतीत का रूप ले लेती है और वही “भूल” सही रास्ता सुगम कराती है, सही पाठ पढ़ाती है और बेहतरी की ओर आदमी को मुखातिब कराती है। कहा भी गया है- गिरते हैं सह सवारे ही मैदान-ए-जंग में। अर्थात् जो जंग के मैदान में उतरते हैं वे ही जंग जीतने की सोच सकते हैं। भले ही इस क्रम में वे कई बार भूलवश गिरते भी हों। जो सवारी को तैयार ही न होंगे वे जंग जीतने की सोच भी नहीं सकते। कहावत ऐसे ही नहीं बनी है - “असफलता ही सफलता की कुंजी है” (Failure is the key of Success)

आज के समाज में चाहें वह जिस क्षेत्र में हो, नजर दौराने पर यह निश्चित तौर पर दिख पड़ता है कि लोगों को सफलता की तरह दिखानेवाले ज्यादातर व्यक्ति बीते वक्त का असफल व्यक्ति रहता है। उसे इस बात की हर तरह से जानकारी प्राप्त हो चुकी रहती है कि असफलता किन कारणों/भूलों की वजह से मिलती है तथा उन भूलों से लोगों को बचाने का मार्गदर्शन ही सफलता की राह आसान बनाता है।



सच्ची लगन

- श्री अनंत राम,
लेखाकार



बहुत समय पहले की बात है। एक किसान तुलसीपुर गाँव में रहता था। किसान के दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ थी तथा वे सपरिवार नदी के पार खेती का कार्य करते थे। किसान बहुत सीधा-साधा स्वभाव का था। वह मैट्रिक तक पढ़ा था। उन दिनों गाँव में बहुत कम लोग पढ़ते थे। चिड़ी लिखाने या पढ़ाने के लिए गाँव के लोग किसान के पास आते थे। किसान परिवार के साथ मिलजुलकर घर-गृहस्थी चलाता था। एक दिन किसान का मन हुआ कि वह भी नौकरी करता तो ठीक होता। वह किसान नौकरी के लिए फार्म भरा। कुछ दिनों बाद किसान को नौकरी नगर निगम में हो गयी। इसका पता किसान के पिता और घर वालों को लगा तो घर वाले मना कर दिये। अब किसान क्या करता, क्योंकि अपने पिता और घरवाले की बात बहुत मानता था। किसान कभी भी अपने से बड़ों के खिलाफ नहीं जाता था। इसके कारण नौकरी नहीं किया। इसका अफसोस बहुत हुआ, लेकिन अपनी पत्नी से बोला कि वह अपने बच्चों को पढ़ायेगा। भगवान ने चाहा तो बच्चे नौकरी जरूर करेंगे। किसान अपनी पत्नी और चारों बच्चों को नदी पार करा दिया जहाँ पर पढ़ाई-लिखाई अच्छी तरह से होती थी। वह गब्बा, परवल और सकरकन्द की खेती करता था और इस पार से उस पार ले जाकर बेचता था। इसमें घर का खर्च, पढ़ाई-लिखाई सब काम चलता था। उसका घर बड़ी खुशी से चल रहा था। बच्चे

अच्छे से पढ़ रहे थे। एक दिन उस पार अपने घर गया जहाँ उसकी पत्नी और बच्चे रहते थे। साथ में एक बोरा सकरकन्द ले गया। सकरकन्द को पकाया गया। किसान की पत्नी एवं बच्चे बड़े चाव से खा रहे थे। किसान का अंगुठा का नाखून किसी कारणवश तोते के मुँह (टोट) जैसे हो गया था। बड़ा बेटा उसी को पकड़ कर देखता था और उस अंगुठे को पकड़ कर खेलता था। लेकिन, वह क्या जानता था कि फिर यह अंगुठ नहीं देखने को मिलेगा। एक दिन किसान घर से परवल और गुड़ लेकर बेचने निकला। सावन का महीना था। पानी रात दिन बरस रहा था। नदी बहुत तेजी से बह रही थी। किसान के घर से कुछ दूर उनके दोस्त रहते थे। वह किनारे मिल गये। दोनों आदमी परवल और गुड़ बेचने के लिये ले जा रहे थे। छोटी नाव पर गुड़ भरा हुआ था तथा बड़ी नाव देर से आने वाली थी। किसान के कुछ दोस्त और आये जिसमें एक पंडितजी थे। उनके साथ में एक लड़की थी। पंडितजी और कुछ दोस्त लोग बोल रहे थे, चलो नाव से चला जाय। कुछ लोग बोल रहे थे बड़ी नाव से चला जाय। बड़ी नाव देरी से आने वाली थी। किसान भी छोटी नाव से नहीं जाना चाहता था। जाने का सिलसिला नदी किनारे कुछ देर तक चलता रहा। कुछ देर बाद पंडितजी बोले, चलो छोटी नाव से चला जाय। अगर नाव पलट भी जायगी तो हम लोग तैर लेंगे। लेकिन पंडितजी यह नहीं समझे कि

उनके साथ एक लड़की भी थी। क्या वह तैर सकेगी? पंडितजी और सभी दोस्त लोग एक साथ बोले, “चलो छोटी नाव से चला जाय!” सभी लोग अपना सामान नाव पर रखा और नाव खुली। नाव जब बीच धार पर गई तो डुबने लगी। कुछ लोग कूद गये। दो बालक नाव पकड़ लिया और किसान के साथ में जो दोस्त था उसके शरीर पर जितना कपड़ा था, धोती गमछा सब फेंक दिया और उस किसान को भी बोला कि वह भी सब फेंक दें। लेकिन, वह किसान गमछा नहीं फेंक सका। दोनों दोस्तों का सात-आठ लाठी का किनारा बचा था। इसी बीच किसान का हाथ गमछा से लपट गया और हाथ चलना बंद हो गया। लेकिन, उनका दोस्त तैर रहा था और अपने दोस्त से बोल रहा था कि थोड़ा सा हिम्मत करो! लेकिन, अब कहाँ से हिम्मत होता। दोस्त के सामने बीच धारा से किसान साथ देने वाला दोस्त किनारे में आकर अटक गया। किसान बोला जाओ अब हम नहीं बचेंगे। उन्हीं के सामने किसान राम का नाम लेकर डूब गया। दोस्त कुछ नहीं कर सका। दोस्त बचकर आ गया। सारी बातें किसान

के घर वालों से बताया। किसान की पत्नी के ऊपर मुसीबत का पहाड़ टूट गया। अब वह कैसे बच्चों को पढ़ाएगी? कैसे बच्चों को खिलाएगी? लेकिन, किसान की पत्नी हिम्मत नहीं हारी। कुछ दिन बाद बड़ी बेटी की शादी कर दिया। उसके बाद बड़ा बेटा पर बोझ पड़ गया। बड़ा बेटा पढ़ाई करता और खेती का काम करता था। अब माँ बेटा घर को संभाल लिया। किसान की पत्नी ने बच्चों को किसी तरह पढ़ाया और उन्हें संस्कार दिया। उसके बड़े बेटा को ध्यान में था कि उसके पिता जी चाहते थे कि उसके बच्चे नौकरी करें और उस बात को ध्यान में रखते हुये पढ़ाई किया। नौकरी के लिये खूब परिश्रम भी किया। कुछ दिन बाद नौकरी प्राप्त हुई। अपने भाई, छोटी बहन की शादी किया। बाद में पूरा परिवार खुशहाल हो गया।

इस तरह अपने स्वर्गीय पिता की चाहत को परिवार के लोग सच्ची-लगन से पूरा किया।



मातृ प्रेरणा

- श्री विजय प्रसाद,
लेखाकार



जब-जब हमें रात-दिन, पल-छिन, याद तुम्हारी आई माँ।
तब तुमने निज कर्त्तव्यों की, हम को याद दिलाई माँ।

भीषण विभीषिका का हम पर जब भी चला दुधारा है,
हमें हुआ आभास, कि माता! सिर पर हाथ तुम्हारा है।
“हम हैं साथ तुम्हारे, डरो न इन आँधी-भूचालों से,
सिंह पुत्र हो, उठो, बनों मत कायर भेड़-शृगालों से।

दिशा-दिशा ने यही तुम्हारी वाणी है दुहराई माँ।
तब तुमने निज कर्त्तव्यों की, हमको याद दिलाई माँ।

माँ! हो संवेदना-सिंधु तुम, मन सबका पढ़ लेती हो,
रत्न गहनता, मोती, जो हो उचित, उसे दे, देती हो।
जो दुखियारा गया शरण में वह प्रसन्न होकर लौटा,
भारीपन मन का, वेदना हृदय की वह खोकर लौटा।

जब देखी संतान दुखी तब बनी स्वयं विषपायी माँ।
तब तुमने निज कर्त्तव्यों की, हमको याद दिलाई माँ।

गुरु चिंतन, तुम भाव, न ऐसा युग्म कहीं जग में दूजा,
सत्चिंतन-सद्भाव जहाँ हो फिर दुष्कर्म असंभव है,
है, सौभाग्य हमारा, हम आपके अंग हैं, अवयव हैं,

कृपा हुई जो कल्प वृक्ष की छाया हमने पाई माँ।
तब तुमने निज कर्त्तव्यों की, हमको याद दिलाई माँ।

इतना दिया आपने, हमको भी कर्त्तव्य निभाना है,
ऋण का इतना भार शीश पर लिए, न हमको जाना है।
दैवी इच्छा पूर्ति हेतु हम सब माध्यम बन जाएँगे,
रीछ-गिलहरी-वानर बनकर बल-साहस हम पाएँगे,

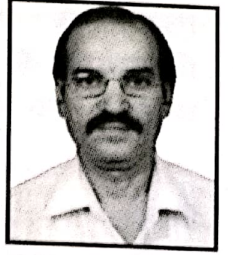
उसी राह बढ़ते जाएँगे, जो ऋषि ने दिखलाई माँ।
तब तुमने निज कर्त्तव्यों की, हमको याद दिलाई माँ।”





माँ

- श्री शिव शंकर तिवारी,
वरीय लेखाकार



माँ! ममता की मूरत है तू,
भोली तेरी सूरत है।
तू सृष्टि है, तू प्रकृति है,
तू साक्षात् ब्रह्म की शक्ति है।

शत्-शत् नमन तुझे हे! माता,
जिससे हर पहचान बना।
अबला नहीं, प्रबला है तू,
तुम्हीं से हर इंसान बना।

तेरी आँचल में है माता,
सुख, सकुन व चैन है।
जिसके जीवन में माँ नहीं,
उसका दिल बेचैन है।

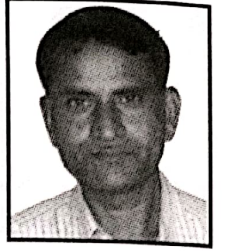
परम पिता की कृपा है पाता,
जो माँ की सेवा करता।
जीवन के अंतिम पड़ाव पर,
वो परमगति को है पाता।

तिवारी “शाहपुरी” निज कलम से
माँ का करे गुणगान।
माँ की सेवा जो करे हिय से,
वही अच्छा इंसान।



भारतीय नारी

- श्री राजेन्द्र कुमार,
वरीय लेखाकार



नारी तुम कहाँ हो ? तुम अबला नहीं हो। समाज ने तुझे अबला बना रखा है। समाज ने तुझे गुलाम बना रखा है। जब चाहा तब पा लिया और जब चाहा ठुकरा दिया। यह कैसी विडंबना है। उठो, जागो, संघर्ष करो माँ दूर्गा/काली, लक्ष्मीबाई और इन्दिरा की तरह और दुनियाँ को दिखा दो कि तुम पुरुष जाति से कम नहीं हो, आगे हो।

तुमने ही इस पुरुष जाति को जन्म दिया है। उसे जन्म देने के लिए नौ माह तक पीड़ा सही और अन्त में जन्म देते समय जो पीड़ा सही वह अकथनीय है। उस पीड़ा से बढ़कर इस धरती पर कोई और पीड़ा नहीं हो सकती। इसलिए कहा भी गया है “माँ स्वर्ग से बढ़कर होती है”। माँ का स्थान इस धरती पर कोई भी नहीं ले सकता।

मैं पुरुष वर्ग से भी कहना चाहूँगा कि तू नारी का सम्मान हर रूप में करना सीख। जरा सोंच, तुम्हारा अस्तित्व इस धरती पर किसके कारण है। महिलाओं पर अत्याचार करने से पहले नारी के उस रूप को याद कर, जब तुम्हारा अस्तित्व इस धरती पर नहीं था और तुम्हारे अस्तित्व को कायम रखने के लिए लगातार नौ माह तक उसने (माँ ने) कौन सी पीड़ा नहीं सही। तुझे जन्म देते समय और जन्म देने के बाद भी तुम्हारे सुख के लिए कौन सा दुःख नहीं झेली। वही पीड़ा को याद करके

तू जरा सोच कि उस नारी के प्रति (जो किसी भी रूप में तुम्हारे सामने हो सकती है) तुम्हारा क्या कर्तव्य है ?

वह नारी जिस पर तुम अत्याचार करने जा रहे हो, अत्याचार करने से पहले उस पीड़ा को याद कर जो जन्म देते समय उसने झेली थी, इस धरती पर प्रथम आहार दिया था। वो अगर अंगुली पकड़कर चलना नहीं सिखाती तो तुम आज अपाहिज होते।

आगे मैं कहना चाहूँगा कि यदि किसी पुरुष की मृत्यु होती है तो उसकी पत्नी को विधवा का रूप देकर शृंगार की सभी सामग्री छीन ली जाती है। पत्नी की मृत्यु के बाद पति विधुर तो कहलाता है, परंतु उसके शृंगार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। पत्नी को विधवा होने पर जिस प्रकार समाज का नियम-कानून उसपर लागू होता है उसी प्रकार पति के विधुर होने पर समाज का नियम-कानून विधवा की तरह उसपर भी लागू होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो इस समाज के द्वारा दोनों के लिए समान अधिकार की बातें करना बेईमानी होगी। अन्यथा, विधवा प्रथा खत्म होनी चाहिए।

मैं कुछ उन लम्हों को कविता के रूप में याद दिलाता हूँ जो माँ के दूध के संबंध में कही गई है।

माँ का दूध इतना अनमोल है कि उसकी तुलना धरती पर किसी भी वस्तु से

नहीं की जा सकती है। माँ का दूध पीने से जो प्यास बुझती है वह सात समुंदर के बराबर भी दूध पी लिया जाय तो भी नहीं बुझेगी। माँ का आँचल जमुना की गहराई से कम नहीं है। हे माँ तुम्हारी आवाज भी इतनी मीठी है कि उसकी तुलना किसी और से नहीं की जा सकती। माँ, मैं तुम्हारे दूध से कभी भी उन्नत नहीं हो सकता। भगवान राम जब उन्नत नहीं हुए तो मैं कैसे हो सकता हूँ।

“अनमोल है दुधवा रस से भरे।
मेरी मैया वचन है रस से भरे॥
सात समुन्दर मैया दूध पियूं रे,
तबहूँ न मैया बुझाइ पियास।
गंगा तोर आँचल, जमुना गहरइया,
सुरसुति धार मैया बैन भरे।
सात स्रोत मैया जो पियूं दुधवा,
तबहूँ उरिन नहिं होत बने।
सरग तरइया मई गिनउँ रे माता,
तबहूँ न दुधवा का मोल चुके।
जननी दुधवा पिये रामचन्द्र राजा,
पुरुषोत्तम होइ के ऊरिन ना भये॥”

समाज में बेटी का महत्व बेटों से कई गुणा अधिक होता है। सिर्फ पहचान की आवश्यकता है। जिस घर में बेटी का अवतार न हो वह घर सूना-सूना लगता है। बेटी हो तो घर की दिवारें बोलती है। बेटियाँ समाज में आगे बढ़कर बेटों से कहीं अच्छा काम किया है। वे लोग मुख हैं जो अपनी बेटियों को बेटों से तौलते हैं। मंदिर की मूर्तियों से दूआ मांगने वालों से मेरा अनुरोध है कि वे वही दूआ अपनी माँ-बाप से मांगें तो उसे सबकुछ मिल जाएगा, क्योंकि माँ के कदमों में जन्नत होती है,

स्वर्ग होता है। यदि दुनिया में किसी साधना का फल प्राप्त करना है तो सबसे पहले अपने घर की महिलाओं का सम्मान करना सीखें।

जब कोई जन्म लेता है तो उसकी मानसिक स्थिति उस समय क्या होती है उसका विवरण इस कविता के माध्यम से सुनाना चाहता हूँ, जो इस प्रकार है :-

“जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का एक सहारा था, उसका नन्हा सा आँचल मुझको भूमंडल से प्यारा था। उसके चेहरे की झलक देख चेहरा फूलों सा खिलता था, उसके स्तन की एक बूंद से मुझको जीवन मिलता था। हाथों से बालों को नोचा, पैरों से खूब प्रहार किया, फिर भी उस माँ ने पुचकारा, हमको जीभरकर प्यार किया। मैं उसका राजा बेटा था, वह आँख का तारा कहती थी, मैं बनूँ बुढ़ापे में उसका, बस एक सहारा कहती थी। उँगली को पकड़कर चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था, मेरी नादानी को निज स्तर से सदा सहेटा था। मेरे सारे प्रश्नों का वह फौरन जवाब बन जाती थी, मेरे राहों के कांटे चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी। मैं बड़ा हुआ तो कालेज से एक रोग जान का ले आया, जिस दिल में माँ की मूरत थी, रामकली को ले आया। शादी कर पति से बाप बना, अपने रिश्तों को भूल गया, अब करवा चौथ मनाता हूँ, माँ की ममता को भूल गया। हम भूल गये उसकी ममता, मेरे जीवन की थाती थी, हम भूल गये अपना जीवन, वो अमृत वाली छाती थी। हम भूल गये वो खूद भूखी रह करके हमें खिलाती थी, हमको सुखा बिस्तर देकर, खुद गीले में सो जाती थी। उसने ही होठों को भाषा सिखलाई, मेरी नींदों के लिए रात भर उसने लोरी गाई। हम भूल गए हर गलती पर उसने डाँटा समझाया था, बच जाऊँ बुरी नजर से, काला टीका सदा लगाया था। हम बड़े हुए तो ममता वाले सारे बंधन तोड़ आए, बदले में कुत्ते पाल लिए, माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आए। माँ की सपनों का महल गिराकर, कंकड़-कंकड़ बीन लिए,

खुदगर्जी में उसके सुहाग के आभूषण तक छीन लिए। माँ की ममता को देख मौत भी आगे से हट जाती है, अगर माँ अपमानित होती, धरती की छती फट जाती है। घर को पूरा जीवन देकर बेचारी माँ क्या पाती है, रुखा - सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है। जो माँ जैसी देवी, घर के मंदिर में नहीं रख सकते, वो लाखों पूण्य भले करले ईसान नहीं बन सकते। माँ जिसको भी जल देदे, वो पौधा संदल बन जाता है, माँ के चरणों को छूकर पानी गंगाजल बन जाता है। माँ के आँचल ने युगों-युगों से भगवानों को पाला है, माँ के चरणों में जन्मत है, गिरजाघर और शिवाला है। हिमगिरी जैसी ऊँचाई है, सागर जैसी गहराई है, दुनियाँ में जितनी भी खुशबू है, माँ के आँचल से आई है। माँ कबीरा की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है, मीरावाई की पदावली, खुसरो की अमर रुबाई है। माँ आँगन की तुलसी जैसी, पावन बरगद की छाया है, माँ वेद रिचाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है। माँ मानसरोवर ममता का, माँ गोमूख की ऊँचाई है, माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है। माँ हरी दूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है, माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फूलवारी है। सातों सूर नर्तन करते जब कोई माँ लोरी गाती है,

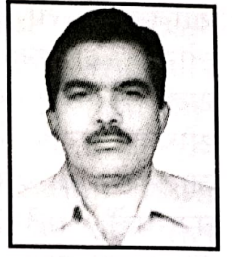
माँ जिस रोटी को छू लेती है वो प्रसाद बन जाती है। माँ हँसती है तो धरती का जर्ज-जर्ज मुस्काता है, देखो तो दूर क्षितिज अम्बर धरती को शीश झुकाता है। माना मेरे घर की दीवारों में चंदा की सूरत है, लेकिन मन के इस मंदिर में बस केवल माँ की मूर्त है। माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, अनुसूईया, मरियम, सीता है, माँ पावनता में रामचरितमानस, भगवतगीता है, अब माँ तेरी हर बात मुझे वरदान से बढ़कर लगती है। सारे तीरथ के पूण्य जहाँ मैं उन चरणों में लेटा हूँ, जिनके कोई संतान नहीं मैं उन माँओं का बेटा हूँ। हर घर में माँ की पूजा हो ऐसा संकल्प उठाता हूँ, दुनियाँ की हर माँ की चरणों में मैं ये शीश झुकाता हूँ।

सारी दुनियाँ कहती है कि महिलाओं को बराबर का अधिकार मिलना चाहिए। यहाँ तक की संसद में भी आवाज उठती है कि महिलाओं को 30 प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए। बिहार में महिलाओं को ग्राम पंचायत चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण मिल भी गया है। सही रूप में महिलाओं का उत्थान समाज में तभी हो पाएगा जब उसे हर जगह और हर कदम पर 50 प्रतिशत आरक्षण मिले।



खेल-खेल में पढ़ाई तथा भाई की भलाई

- श्री हरेराम प्रधान,
वरिष्ठ लेखाकार



बहुत दिनों की बात है। एक गाँव में एक साधारण किसान रहते थे। गरीब थे, मगर सच्चा इन्सान थे। मेहनत कर खेती-बाड़ी से परिवार चलाते थे। परिवार बड़ा था, पर आमदनी सीमित थी। सात भाई-बहनो में राम और श्याम मांझिल थे। बड़ा लड़का शहर में छोटी-मोटी सरकारी नौकरी करता था, पर उससे उसका ही परिवार मुश्किल से चलता था। कभी-कभार गाँव पर कुछ पैसा भेजता था, वह भी अपनी पत्नी से छिपाकर। माँ-बाप से उसकी हमदर्दी थी, पर पत्नी उसका साथ नहीं देती थी। देती भी कैसे? सीमित आय से उसे भी तो अपना परिवार चलाना था।

किसान का दूसरा लड़का किसान के साथ मिलकर खेती का काम करता था, जिससे परिवार की गाड़ी मन्द गति से चलती थी। किसान चाहता था कि बाकी लड़के पढ़ लिख सकें, पर आमदनी के अभाव में तीसरे लड़के को ही स्कूल भेज सका। चौथा लड़का गाय चराता था, और खाली समय में पिता और भाई के साथ खेती में हाथ बंटता था। किसान का परिवार इसी तरह से चल रहा था।

समय बीतता गया। एक दिन की बात है। शाम के समय सभी लड़के खेल रहे थे। किसान का तीसरा लड़का राम भी खेलने में मस्त था। स्कूल से आने के बाद नाश्ता करके मैदान में खेलने चला आया था। उस दिन श्याम भी गाय चराकर पहले ही आ गया था। घर से चना का घुघनी मिला खाने के लिए। उसने राम की कॉपी का एक पन्ना फाड़कर उस पर घुघनी

लेकर खाते हुये खेल के मैदान में चला गया। उसे पता था कि लिखा हुआ पन्ना बेकार हो जाता है, उसे कबाड़ी के हाथ बेच दिया जाता है, उसका कोई महत्व नहीं होता है, पर यह क्या उसके हाथ में कॉपी का फाड़ा हुआ पन्ना और उस पर घुघनी खाते देखकर राम का गुस्सा सातवे आसमान पर चढ़ गया। आव देखा न ताव श्याम के गाल पर तमाचा मारते हुये उसके हाथ से कागज का टुकड़ा छीन लिया, जिससे घुघनी गिर गई, परंतु घुघनी का मशाला कागज पर फैल गया था, जिससे वह पन्ना बेकार हो गया था। घर आकर राम ने इसकी शिकायत की, जिससे श्याम को सभी लोगों की डाँट सुननी पड़ी। श्याम मन-ही-मन अनजाने में अपने द्वारा की गई गलती को महसूस किया, और मन मसोस कर रह गया।

एक दिन ऐसी घटना घटी जो श्याम के मन को झकझोर दिया और उस घटना ने श्याम के जीवन की दिशा में बदल दी। हुआ यों कि श्याम गाय चरा रहा था। गाय चरते-चरते किसी के खेत में चली गई और खेत चर गई, इधर श्याम अपने हम-उम्र के बच्चों के साथ फूटबॉल खेलने में मस्त था। शाम हो गई तब उसे याद आया कि वह तो गाय चराने के लिए लाया था, पता नहीं गाय कहाँ चली गई। उधर खेत वाला व्यक्ति गाय लेकर श्याम के घर गया और बताया कि गाय उसका खेत चर गई है, जिससे उसको काफी नुकसान हुआ है। श्याम रात में देर से घर पहुँचा और सीधे माँ के पास चला गया। माँ उसे मार

खाने से तो बचा ली, पर घर के अन्य लोगों का व्यवहार उसे अच्छा नहीं लगा। रात में उसे नीन्द नहीं आ रही थी। वह सोचने लगा कि जो लड़के स्कूल में पढ़ने जाते हैं, वे शाम के चार बजे ही स्कूल से घर चले आते हैं, नास्ता करते हैं, और फिर देर शाम तक फूटबॉल खेलते हैं। उन दिनों देहात में क्रिकेट का प्रचलन नहीं था। श्याम आगे सोचता है कि बड़े भाई को न तो गाय चरानी पड़ती है और न डॉट सुननी पड़ती है, उल्टे उन्हें गेंद खेलने की छूट रहती है। मुझे भी गेंद खेलने के लिए स्कूल जाना ही उचित होगा।

श्याम सबेरे उठकर मुँह-हाथ धोया और माँ के पास जाकर बोला कि माँ आज से हम भी स्कूल जायेंगे। माँ को शायद अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने श्याम से पूछा 'क्या बोल रहे हो बेटा? तुम स्कूल जाओगे? श्याम ने कहा, हाँ इस तरह से श्याम गाय चराना छोड़कर स्कूल जाने लगा। उम्र कुछ ज्यादा हो गई थी, इसलिए पाठ याद करने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती थी। मास्टर साहब उसे बहुत प्यार करते थे। कहते थे कि ऐसा होनहार बच्चा अभी तक गाय चरा रहा था। श्याम पहला क्लास में प्रथम आया। मास्टर साहब उसकी पढ़ाई एवं पढ़ाई के प्रति लगन देखकर उसे तीसरा क्लास में कर दिये। तीसरा क्लास में छत्रवृत्ति की प्रतियोगिता परीक्षा हुई। श्याम उस प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित हुआ तथा पूरे अवर प्रमंडल में अपने स्कूल का नाम रौशन करते हुये प्रथम आया। उसे छत्रवृत्ति भी मिलने लगी। पढ़ाई के साथ-साथ खेल में भी उसकी रुचि काफी थी। फूटबॉल तथा कुश्ती प्रतियोगिता में वह अब्बल रहता था। समय बीतता गया तथा श्याम मन लगाकर पढ़ते-पढ़ते बड़े भाई राम से अब सिर्फ दो क्लास पीछे रह गया था। छठा क्लास से सीधे आठवाँ क्लास में उसका नाम लिखाया गया था। श्याम आठवाँ क्लास में तथा

उसका बड़ा भाई राम उसी विद्यालय में दशवाँ क्लास में था। उस समय में कहीं-कहीं हाई स्कूल रहा करता था। दूर-दूर से मिडिल स्कूल पास करके विद्यार्थी हाई स्कूल में नामांकन कराते थे। श्याम जिस मिडिल स्कूल से सीधे छठा से आठवाँ में आकर नामांकन कराया था उस मिडिल स्कूल के सातवें क्लास का प्रथम स्थान पाने वाला लड़का भी उसी हाई स्कूल में नामांकन कराया था। वार्षिक परीक्षा का परीक्षाफल आया तो दो अन्य मिडिल स्कूल के लड़के प्रथम तथा द्वितीय आये, जबकि श्याम का स्थान तृतीय रहा। श्याम के सातवें क्लास के प्रथम लड़का का स्थान बहुत नीचे चला गया। आठवें क्लास में काफी मेहनत करने के पश्चात जब वार्षिक परीक्षा फल आया तो श्याम एवं एक अन्य लड़के में काफी समानता रहने के बावजूद श्याम से उस लड़के को आगे कर दिया गया था, क्योंकि उसी हाई स्कूल से सटे मिडिल स्कूल का वह लड़का सातवें क्लास का प्रथम आने वाला था। श्याम को यह बात अच्छी नहीं लगी। पर परीक्षाफल तो परीक्षाफल होता है, उसे मानना ही पड़ा। पुनः श्याम अगले साल की तैयारी जोर-शोर से शुरू कर दी। वार्षिक परीक्षा हुई, परीक्षाफल आया। इस वर्ष श्याम और एक दूसरे लड़के को संयुक्त रूप से प्रथम घोषित किया गया। उस जमाने में मिडिल स्कूल तथा हाई स्कूल में भी फीस कमिटी द्वारा माफ कर दिया गया था। फीस माफ करने का कारण यह था कि श्याम क्लास में प्रथम आने के साथ-साथ खेल कूद में भी अब्बल था। श्याम के भाई राम का पूरा फीस लगता था, जिसे श्याम ही स्कूल में जमा करता था। राम पढ़ाई में साधारण था। मैट्रिक का फार्म भरने के पहले टेस्ट होता था। राम टेस्ट की परीक्षा में शामिल हुआ। दस पेपर में से चार पेपर में वह असफल रहा। उस स्कूल का नियम बन गया था कि जो लड़का टेस्ट में असफल हो

गया, परंतु मैट्रिक का परीक्षा देना चाहता है तो उसे प्रत्येक पेपर (जिसमें टेस्ट में वह असफल था) के लिए पच्चास पैसा की दर से फीस जमाकर के फार्म भराया जाता था। राम फार्म नहीं भरना चाहता था, पर श्याम ने जोर देकर उसे फार्म भरने के लिए उत्प्रेरित किया और चार असफल पेपर के लिए दो रूपया जमा भी कर दिया। राम ने फार्म भरा और घर पर रहकर पढ़ाई करने लगा। श्याम की वार्षिक परीक्षा खत्म हो गई थी। अब वह आराम कर सकता था, परंतु भाई की मैट्रिक परीक्षा सिर पर थी। श्याम के कहने पर ही राम फार्म भरा था। इसलिए राम की पढ़ाई में श्याम को मदद करना था। उन दिनों देहात में बिजली-बत्ती की सुविधा नहीं थी। किरासन तेल भी मुश्किल से मिलता था। किसी तरह से श्याम किरासन तेल की व्यवस्था किया। प्रतिदिन जाड़े की रात में तीन बजे उठकर लालटेन जलाकर राम को पढ़ने के लिए उठाता था। राम को खैनी खाने की आदत थी। वह कहता था कि खैनी खाने से नींद नहीं आती है, श्याम खैनी नहीं खाता था, पर राम के कहने पर खैनी चूना मिलाकर उसे देता था, ताकि इससे भी वह पढ़े। देखते-देखते मैट्रिक की परीक्षा का समय आ गया। राम के घर में श्याम को छोड़कर कोई बड़ा पढ़ने वाला आदमी नहीं था। अतः श्याम ही राम के साथ परीक्षा दिलाने सेन्टर पर ले गया। दस बजे परीक्षा शुरू हुई। बैठकर परीक्षा खत्म होने का इन्तजार करने लगा। प्रथम पाली की परीक्षा खत्म हुई। राम मुँह लटकाये बाहर निकला। निकलते ही श्याम को डाँटने लगा और बोला हम कहते थे न कि इस साल फार्म नहीं भरूँगा, तुमने जिद्द कर फार्म भरवाया। परीक्षा अच्छी नहीं गई। इस पर श्याम उसे सान्त्वना देते हुये कहा घबराने की बात नहीं है, सेकेंड पेपर अच्छा जायेगा तो दोनों मिलाकर पास कर जाईएगा। अंग्रेजी पेपर की परीक्षा प्रथम पाली में हुई थी। सेकेन्ड पाली में राम परीक्षा देने के लिए परीक्षा

हाल में गया। श्याम वहीं सेंटर पर बैठकर भाई के आने का इंतजार कर रहा था। परीक्षा खत्म हुई। श्याम घबराया हुआ था, पर राम का चेहरा खिला देखकर उसे तसल्ली हुई। आते ही राम ने कहा सेकेन्ड पेपर अच्छा गया। दोनों पेपर मिलाकर पास कर जायेंगे। इस तरह श्याम राम का अभिभावक बनकर परीक्षा दिलाया। परीक्षा-फल निकलने का समय आ गया। राम गाँव छोड़कर दूसरे गाँव चला गया था। उसे डर था कि कहीं परीक्षाफल खराब न हो जाय। उसे अपने पर विश्वास नहीं, परंतु श्याम रोज स्टेशन पर जाकर पेपर खरीदकर लाता था, और रिजल्ट निकलने की प्रतीक्षा करता था। वह दिन भी आ गया, जब रिजल्ट निकला। श्याम की खुशी का ठिकाना नहीं था। राम सेकेन्ड डीविजन से पास कर गया था। पेपर लेकर दौड़े-दौड़े घर आया और गाँव के लोगों को बताया कि राम सेकेन्ड डीविजन से पास कर गया है। किसी को विश्वास नहीं हो रहा था कि राम सेकेन्ड डीविजन से पास कर गया है। लोग यही कहते थे कि जो लड़का टेस्ट में चार पेपर में फेल हो गया था, वह भला फाइनल में सेकेन्ड डीविजन से कैसे पास कर गया। पर कुछ लोग ऐसे भी थे जो कहते नहीं थकते थे कि यह सब श्याम के परिश्रम का फल है। राम को पास कराने में उसी का हाथ है। उसी की लगन एवं मेहनत से राम पास किया है। गाँव के लोग श्याम की प्रशंसा करते हुये थकते नहीं थे। सभी की जुबान पर यही था कि श्याम जैसा लड़का जिसे स्कूल नहीं भेजा जाता था वह खेल खेलने के लिए स्कूल जाने लगा तथा खेल-खेल में पढ़ाई भी करने लगा, वह भी अव्वल दर्जे की तथा भाई की पढ़ाई में जी-जान से मेहनत कर उसे भी मैट्रिक पास करा दिया। भाई हो तो ऐसा।



पहली मुलाकात

- श्रीमती नीता मिश्रा

द्वारा- श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी



भूले नहीं भुलाती आपसे पहली मुलाकात,
शुरू हुई थी जब रंगों और गुलालों की बरसात।
आपने जब नाजुक गालों को गुलालों संग छू दिया था,
मैंने सारे होश हवाशों को दिलों संग खो दिया था।

जब चलाई किसी ने आपका नाम,
तो हो गया मुश्किल करना मेरे लिए कोई काम।
हर साँस में बसने लगी तेरी ही धुन,
दिल धड़कने लगा बस तेरा नाम सुन।

दिया प्यार तूने ऐसा जो भूलाए नहीं भूलती,
उसे ही याद कर मैं तेरे ख्वाबों के झूलों पे झूलती।
काश! इस वक्त आप मेरे करीब होते,
तो आपके सिने से लग जी भरके रो लेते।

क्यों मिलन के बाद खुदा जुदाई को देते,
तनहा काटने को दौड़ती ख्वाब दर्द को बढ़ावा देते।
हर साँस में बसी है तेरी ही धून,
दिल तड़पती कैसे तेरे बगैर मेरी भी सुन।

पिया-पिया पुकारे मेरा दिल,
पता नहीं कितनी लंबी है तेरे-मेरे प्यार की मंजिल
दूरी सहन होती नहीं अब तेरे बगैर,
जीना हो रहा है अब तो मुश्किल।



गजल

- श्रीमती नीता मिश्रा
द्वारा श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी



है गजब की तेरी भी सूरत,
मैं तो सिर्फ माटी की मूरत।
दिल दे सको तो दे देना,
कब्र में भी मिल सको तो मिल लेना।

मेरे लब, मेरे प्यार, मेरे हमराह,
मेरे दिल में है सिर्फ तुम्हारी चाह।
भरती रहती हूँ मैं सारी रात आँहें,
क्यूँ तड़पाते हो मुझे ख्याम-खाह।

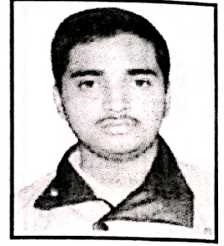
ऐसा कोई दिन खाली न जाती,
जिस दिन मुझे मुम्हारी याद न आती।
तेरी हर अदाएँ मुझे भाती हैं।
कोई तो बताए, क्या यही प्यार कहलाती है।





दुःख-सुख

- श्री शशि शंकर झा,
सुपुत्र-श्री रामदेव झा,
वरिष्ठ लेखाकार



दुःख के बाद सुख को आना ही होगा,
आज नहीं तो कल सुख को आना ही होगा।

दुःख को देख डरो न तुम दुःख दूर चला जाएगा,
आज नहीं तो कल सुख तुम्हारे पास आएगा।

दुःख को अपना दुःख न समझो दुःख ही वह सुख है,
जो सुख आने पर सुख का एहसास कराता है।

ये दुनिया दुःख-सुख की नगरी है,
हर मानव को दुःख-सुख की चिन्ता रहती है।

क्यों मनुष्य दुःख को बुरा मानते हैं,
और सुख को अपने पास रखने की इच्छा करते हैं।

आज दुःख है कल सुख को आना ही होगा,
तो आज दुःख को देख आप क्यों डर जाते हैं,

इसी कारण आप आने वाले कल के
सुख को खो जाते हैं।



सदमा

- श्री उमेश चौधरी,

लेखा अधिकारी



सुबह की सैर स्वास्थ्य के लिए तो लाभदायक होती ही है। साथ ही, इससे कभी-कभी बौद्धिक खुराक भी मिल जाती है। घूमने के क्रम में कभी-कभी नये-नये तथा अपरिचित लोगों से भी जान पहचान हो जाया करती है। घूमने वालों में बुजुर्ग लोगों की संख्या ज्यादा रहती है। स्वाभाविक है उनका अनुभव भी ज्यादा होगा। अपने बीते दिनों की चर्चाएँ वे अपने साथियों के बीच करते रहते हैं। मुझे भी सुबह में घूमने का शौक है। सोमवार से शुक्रवार तक कार्यालय खुला रहता है, इसलिए सुबह में समयाभाव के कारण ज्यादा दूर तक सैर संभव नहीं हो पाती है। शनिवार एवं रविवार को छुट्टी का दिन रहता है। जीवन में एकरसता न रहे इसके लिए छुट्टी के दिन दिनचर्या में थोड़ा बदलाव आवश्यक हो जाता है।

रविवार की एक सुबह एक सज्जन, जिनकी उम्र लगभग 60-65 वर्ष की होगी अपने साथियों से अपनी व्यथा सुना रहे थे। उनकी बातचीत से ऐसा लग रहा था कि वे बहुत ही मायूस थे। उन्हें कुछ मानसिक सदमा लगा था। वे कहते जा रहे थे, कितने अरमान से बच्चों को पढ़ाया लिखाया तथा इस मुकाम तक पहुँचाया। सोचा था, बच्चे पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बनेंगे। उनकी शादी अच्छे परिवारों में होगी। बहुएँ आर्येंगी। सभ्य घर की बहू सास-ससुर की देखभाल करेंगी, उनकी सेवा सुश्रुषा

करेगी। लेकिन, वह सब ख्वाब था। छोटे बेटे को छोड़ अन्य बच्चों की शादी हो गई। बेटी अपने ससुराल चली गई। दोनों बेटों की भी शादी हो गई। शादी के कुछ ही दिन बाद बड़ा बेटा अलग हो गया। अब आस दूसरे बेटे पर था। उसकी शादी में इस बात का ध्यान जरूर रखा जा रहा था कि उसकी शादी वैसे परिवार तथा वैसी लड़की से न हो जो आते ही अलग रहने की बात करे, लेकिन विधाता के विधान को कौन बदल सकता है। उसकी भी शादी हुई। वह भी अपने बड़े भाई तथा भाभी की देखा देखी अलग रहने की बात करने लगा। अलग रहना, स्वतंत्र रूप से जीना कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन, शरीर और मन दोनों से अलग हो जाना बहुत ही दुःखदायी होता है। घर में दो-दो बहुएँ हैं, लेकिन बूढ़ी सास को देखने वाला कोई नहीं है। बगल के कमरे में सास किसी तकलीफ से कराह रही होती हैं और बहुएँ अपने-अपने कमरों में टेलीविजन पर कोई धारावाहिक देख रही होती हैं। कभी वे पराया की तरह भी उनसे पूछने नहीं जाती है कि माँ क्या हुआ? आपको किस चीज की जरूरत है? वैसी परिस्थिति में भी साथ-साथ जीने-मरने की कसम खाने वाला पति ही उनका देखभाल करता है। किसी तरह की तकलीफ होने पर पति ही दवा-दारु, खान-पान तथा अन्य बातों का ख्याल रखता है। हालाँकि, पति देव महोदय स्वयं भी शारीरिक रूप से

लाचार हो रहे हैं। कुछ दूर चलने के बाद वे लोग बैठना चाह रहे थे। स्वाभाविक भी था, क्योंकि उस के जिस पड़ाव पर वे लोग पहुँच चुके हैं उसमें वो शारीरिक क्षमता तथा ऊर्जा नहीं रह जाता है जो जवानी में था। हमलोग आगे बढ़ते चले गए, लेकिन मेरे मन में एक कसक जरूर थी कि माँ-बाप अपने बच्चे को किस तरह पालते हैं। स्वयं भूखे रहकर भी बच्चों की परवरिश भली भाँति करते हैं। उनके मन में भी कहीं-न-कहीं यह अपेक्षा जरूर रहती है कि बच्चा बुढ़ापे का सहारा बनेगा, लेकिन यह क्या ! आज बुढ़ापा बेसहारा हो गया है।

बहुत दिनों तक वह सज्जन नजर नहीं आ रहे थे। उनकी बातें मेरे मानस पटल पर घूम रही थी, क्योंकि मेरे इर्द-गिर्द भी कुछ परिवार ऐसे थे जिनकी कहानी उस सज्जन से मेल खाती थी। मुझसे रहा नहीं गया। मैं उनके बारे में उनके साथी से पूछ दिया कि आपके मित्र अब दिखाई नहीं दे

रहे हैं। उनका क्या समाचार है ? इतना सुनते ही उनका चेहरा शोकाकुल हो गया और दुःख भरे शब्दों में उन्होंने जो कुछ कहा उसपर सहज विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले अचानक रात में उनकी पत्नी की तबियत खराब हो गई थी। पड़ोसी की मदद से डॉक्टर को बुलाया गया, लेकिन डॉक्टर भगवान नहीं होता।

जानेवाले को कौन रोक सकता है। उनकी पत्नी चल बसी। पत्नी के गुजरते ही उनकी हालत बिगड़ने लगी तथा वे भी इस सदमा को बर्दाश्त नहीं कर सके और अहले सुबह उन्होंने भी अपना प्राण त्याग दिया। इतना सुनते ही मेरे मन से भी आह निकली और मन-ही-मन मैं भी उन दोनों प्राणियों की आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, “हे ईश्वर ! इस लोक में तो उन्हें शान्ति नहीं मिली, लेकिन परलोक में उन्हें शान्ति अवश्य देना !!”



ड्राइवर साहब

- श्री दयानन्द प्रसाद,
वरिष्ठ लेखाकार



कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर चौरासी लाख प्रकार के जीवजन्तु हैं, जिसमें मनुष्य को सर्वोत्कृष्ट, सक्षम, एवं विकसित माना गया है। मनुष्य जाति ने सतत् प्रयासों एवं खोजों की बदौलत अपने जीवन को सुखमय एवं आरामदायक बनाया है और अभी भी प्रयास जारी है। प्राचीन समय में जब चक्का और वाहन का अविष्कार नहीं हुआ था तो एक जगह से दूसरी जगह जाना बहुत ही दुष्कर कार्य होता था। आवागमन के साधनों का अविष्कार एवं उत्पादन होता गया और यात्राएँ आसान होती गयीं। इन साधनों में साईकिल, स्कूटर, मोटर साईकिल, कार, रेलगाड़ी और वायुयान इत्यादि शामिल हैं।

साईकिल, स्कूटर, मोटर साईकिल का इस्तेमाल मनुष्य द्वारा प्रायः निजी उपयोग के लिए किया जाता है और स्वयं चलाया जाता है, परन्तु कार का उपयोग व्यवसाय के रूप में भी होता है। अपनी कार न होने पर भाड़े पर लेकर इसका इस्तेमाल किया जाता है। कार का चालक दो प्रकार का होता है— पहला वह जो खुद कार मालिक हो तथा दूसरा वह जो दैनिक या मासिक मजदूरी पर किसी अन्य की कार चलाता हो। वर्तमान युग को भौतिकवादी युग कहा जाता है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसके पास भी खुद की कार हो। कार का मालिक बनने के लिए हमेशा सोंच एवं प्रयास चलते रहता है। ये प्रयास अलग-अलग प्रकार के होते हैं। जो व्यक्ति जिस व्यवसाय

में लगा होता है उसी के सहारे कार का मालिक बनना चाहता है। कोई अपनी आय का एक बड़ा भाग बचाकर, कोई बेटे की पढ़ाई एवं अच्छी जॉब (नौकरी) प्राप्त कर, तो कोई चोरी, डकैती, धोखाधड़ी, अपहरण कर, कार का मालिक बनने की दौड़ में शामिल है। दौड़ में सफलता मिली, कि कार द्वार पर आयी। कार तो द्वार पर आ गई पर सामने समस्या है उसे चलाने की। कुछ व्यक्ति अपनी कार स्वयं चलाते हैं तो कुछ भाड़े पर चालक रखकर। कार चालक को 'ड्राइवर', 'ड्राइवर साहब' आदि शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। 'ड्राइवर साहब' शब्द को गौर से देखा जाय तो पता चलता है कि ड्राइवर अंग्रेजी शब्द है तो साहब हिन्दी भाषा का शब्द है। कार चालक को जब 'ड्राइवर' शब्द से सम्बोधित किया जा रहा हो तो यह समझा जा सकता है कि कार का मालिक कोई बड़ा अधिकारी या रोबवाला व्यक्ति है। जब 'ड्राइवर साहब' शब्द से सम्बोधित किया जा रहा हो तो जानें की वह व्यक्ति कार मालिक का सगा-सम्बन्धी या कोई सभ्य व्यक्ति है। कार चालक को 'ड्राइवर साहब' कहकर सम्बोधित करना कुछ हद तक सही है, क्यों कि उसी के हाथ में कार पर सवार होनेवाले की जिंदगी की चाभी होती है। पर ड्राइवर साहब की अपनी जिंदगी बहुत ही कष्टकर होती है।

प्रत्येक कार मालिक स्वयं कार चलाना चाहता है और चलाता भी है। जो अपनी

कार स्वयं चलाता है उसके पीछे कुछ कारण छिपे होते हैं। वे कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:-

1. आर्थिक रूप से सम्पन्न न होना,
2. अपनी ड्राइविंग पर अधिक विश्वास होना,
3. कार चालक को अपने व्यक्तिगत जीवन से दूर रखना।

चालक की मौजूदगी में सफर के समय पारिवारिक बातें खुलकर नहीं की जा सकती हैं। अगर उसकी मौजूदगी में सभी प्रकार की बातें की जाती हैं तो कार मालिक अपने भावी जीवन को खतरे में डाल रहा है। कार का सफर कभी-कभी इतना सुहाना होता है कि सफर करनेवाले का दिल कुछ कहता है, पर चालक की उपस्थिति के कारण मन और मस्तिष्क दिल को कहता है, ड्राइवर आगे है.....। मन और मस्तिष्क के आदेश के कारण दिल को पीड़ा होती है। उसकी पीड़ा को देखते हुए मानव मन कहता है “काश ! ड्राइवर न होता।”

4. कार ड्राइवर कम पढ़ लिखा तथा बेरोजगार होता है। उसे यातायात के नियमों की पूरी जानकारी नहीं होती है तथा चित्त भी स्थिर नहीं होता है।
5. पेट्रोल की चोरी की संभावना बनी रहती है।
6. समय पर उपस्थित न होना तथा कार ठीक ढंग से न चलाने की प्रवृत्ति।

उपर्युक्त कारणों के आधार पर कुछ कार मालिक ड्राइवर नहीं रखते हैं। पर, कुछ ऐसे कार मालिक होते हैं जिनकी सोच, आर्थिक-स्थिति एवं पेशा तथा व्यस्तता ऐसी होती है जिसके कारण अपनी कार का उपयोग ड्राइवर रखकर करते हैं। बेरोजगारी

की दौड़ में ड्राइवर को जो दैनिक या मासिक मजदूरी दी जाती है वह बहुत की कम होती है। पूछताछ के आधार पर जो जानकारी प्राप्त हुई है उसके अनुसार ड्राइवर को मासिक वेतन/मजदूरी पन्द्रह सौ रुपये से लेकर तीन हजार पाँच सौ रुपये तथा दिन का खाना या खाने के नाम पर अलग से बीस या पचीस रुपये प्रतिदिन दिए जाते हैं। कार्य-अवधि कम-से-कम दस घंटे होती है। यह ठीक है कि कार्य अवधि में हमेशा कार चलाना नहीं पड़ता है, परन्तु उतना समय कार मालिक के नाम गुजारना पड़ता है। न खाने का ठिकाना और न ही बैठने तथा आराम की व्यवस्था। कार मालिक अगर किसी परिचित या सगे-संबंधी के यहाँ गए हैं तो ड्राइवर का हाल बहुत ही बुरा होता है। कितने समय के बाद परिचितों से मिलकर लौटेंगे, अनिश्चित होता है। ड्राइवर से कहा जाता है तुम गाड़ी को यहाँ लगाओ, हम दस मिनट में आ रहे हैं। पर होता यह है कि घंटों ड्राइवर इंतजार करते रहता है। उसे लघुशंका (मूत्र-त्याग) करना भी मुश्किल होता है। एक तो शहर में खुली जगह की कमी और उस पर भी भारी पड़ता है दस मिनट का दिया गया समय। लघुशंका करने के लिए कार स्थल से गैरहाजिर होने के समय ही अगर कार मालिक वापस लौट जाता है तो झट से उसके मस्तिष्क में बात आती है, लगता है कि पेट्रोल बेचने के चक्कर में गया होगा और अगर ऐसी बात मन में नहीं भी आयी तो इतना तो जरूर कहा जाता है कि तुम्हें तो कह गए थे कि हम दस मिनट में आ रहे हैं तो फिर कहाँ चला गया था। दिन के उजाले की बात तो हो गई, अब जरा रात्रि में होनेवाली समस्या जानी जाय। दिन के किसी पहर में यात्रा प्रारम्भ हुई और रात्रि में, दूसरों या अन्य स्थान पर रात्रि ठहराव

करना है तो कार मालिक समयानुसार परिचित व्यक्ति के यहाँ या होटल में विश्राम कर लेता है, पर ड्राइवर को कार में ही रात्रि गुजारनी पड़ती है। जाड़े के मौसम में तो कुछ हद तक ठीक है। अगर गर्मी का मौसम है तो गर्मी एवं मच्छर से लड़ते हुए रात्रि गुजारनी पड़ती है। सुबह में किस समय से कार्य-अवधि प्रारम्भ हो जाएगी, कोई निश्चित नहीं है। रात्रि में नींद पूरी हुई नहीं है, फलतः इसका अनुभव मालिक को हो जाता है। परन्तु, रात्रि में ड्राइवर के समुचित खाना एवं आराम की व्यवस्था नहीं की गई, के प्रति संवेदनशून्यता व्यक्त करना कार मालिकों की आदत सी हो गई है। इस प्रकार की संवेदन-शून्यता उसकी जान को खतरे में डालता है। पर, फिर भी उधर से मुँह फेरे हुए रहता है।

सरकारी विभागों में सरकारी गाड़ियों के ड्राइवरों की भी कुछ अपनी समस्या होती है। सरकारी इयूटी के अतिरिक्त अधिकारियों की कुछ निजी सेवाएँ देनी होती हैं। यदा-कदा समाचार पत्र में भी सरकारी गाड़ियों का गैर सरकारी उपयोग की जाने तथा उन पर नियंत्रण के सरकारी निर्णय प्रकाशित होते रहते हैं।

कार ड्राइवरों के संबंध में अक्सर कहा जाता है कि इयूटी नियमित रूप से नहीं करता है। दूसरी बात कि उसका वेतन बढ़ाने की बात भी कुछ माह इयूटी करने के बाद पर भाग जाता है। ड्राइवरों से बात करने पर मालूम होता है कि वेतन इतना कम मिलता है कि जीवन-यापन करना मुश्किल होता है। इकरारनामा से अधिक इयूटी लेने की बात तथा अन्य गलत व्यवहार से क्षुब्ध होकर दूसरे मालिक की तलाश जारी रहती है। जहाँ दो चार सौ अधिक मिलते हैं वहाँ वह काम करना शुरू कर देता है। इस प्रकार कार मालिक तथा

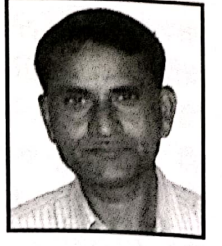
ड्राइवर दोनों एक दूसरे से क्षुब्ध तथा परेशान रहते हैं। ड्राइवरों को मिलनेवाले वेतन की अधिकतम राशि लगभग पैंतीस सौ रुपये होती है। परिवार का गुजारा इस राशि से महँगाई के दौर में कैसे होता है, इस प्रश्न का जवाब मुश्किल है। ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि ड्राइवर परिवार की परिभाषा नहीं जानता है और परिवार का मतलब समझता भी है तो उत्तरदायित्व को नहीं समझता है और अगर उत्तरदायित्व को समझता भी है तो लाचार होने के कारण मौन धारण किए हुए रहता है। आखिर ड्राइवर करे तो क्या करे। वैसे तो आये दिन समाचार पत्रों में रिक्शा चालक के बारे में कुछ न कुछ छपते रहता है, परन्तु इन प्राइवेट कार चालकों की समस्या के बारे में कभी कुछ नहीं अखबार में छपते देखा गया है। अगर बारीकी से देखा जाय तो इन ड्राइवरों से रिक्शा चालक अधिक स्वतंत्र है तथा अधिक रुपये कमा लेता है।

प्राइवेट कार ड्राइवरों की दयनीय स्थिति को देखने के बाद ऐसा कहा जा सकता है कि इनकी स्थिति में सुधार होना चाहिए। कार मालिक प्रयास करें कि अपनी कार स्वयं चलायें ताकि उसकी कार तथा जिंदगी सुरक्षित रहे और अगर कार ड्राइविंग के लिए ड्राइवर रखना बहुत जरूरी हो तो अवश्य रखें। परन्तु, उसे इतनी मजदूरी/वेतन अवश्य दिया जाय ताकि वह अपना परिवार ठीक ढंग से चला सके। दूसरी बात यह कि उसे भी अपने जैसा एक इंसान समझें और परिवार के एक सदस्य के रूप में खाना एवं आराम उपलब्ध कराया जाय, ताकि वह कार सड़क पर ठीक ढंग से दौड़ा सके और कार मालिक की जिंदगी कार की रफ्तार के साथ आगे सुरक्षित बढ़ती जाय।



“प्राणायाम”

- श्री राजेन्द्र कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार/हिन्दी कक्ष



“प्राणायाम”! तुम दया के सागर हो ॥

जो कोई तुम्हें गले लगाता

उसी का तुम हो जाते हो।

प्राणायाम तुम बड़े कृपालु हो,

बड़े दयालु हो।

तू ईश्वर देवदूत हो।

ईश्वर देवदूत हो,

वायु बनकर भीतर-बाहर

आते-जाते हो,

दुनियाँ को जगाते हो,

रोगों से मुक्ति दिलाते हो।

“प्राणायाम”! तुम दया के सागर हो ॥

बड़े दयालु हो।

कपाल-भाति धक्का मारती

विष पान कर

अमृत देती अंगों को

भस्त्रिका है भीतर-बाहर

गर्म करती सांसों को

फेफड़ा मजबूत करती

उर्जा देती हृदय को।

वाह्य प्राणायाम है धीरे-धीरे

मोटापा दूर करती है

“प्राणायाम”! तुम दया के सागर हो ॥

बड़े दयालु हो।

अनु-विलोम है धीरे-धीरे
आत्म बल देती मस्तिष्क को

भ्रामरी गुणगान करती

शांति प्रदान करती है।

नाड़ी शोधन चौबीस घंटे

आरोग्यता प्रदान करती है

ओंकार जाप है धीरे-धीरे

साधना तक पहुँचाती है।

“प्राणायाम”! तुम दया के सागर हो ॥

बड़े दयालु हो।

तुम ईश्वर देवदूत हो!

ईश्वर देवदूत हो।

वायु बनकर भीतर-बाहर

आते-जाते हो

दुनिया को जगाते हो।

रोगों से मुक्ति दिलाते हो

“प्राणायाम” तुम दया के सागर हो।

बड़े दयालु हो।



“अब मैं शायद बड़ा हो गया”

श्री चन्द्रशेखर,

सुपुत्र- श्री अनिरुद्ध राय, पर्यवेक्षक
(सेवा निवृत्त)



आगे लम्बी सड़क खुली थी,
मौसम भी खुला-खुला सा था,
अंदर से कुछ उमड़ा सा था
खुली सड़क पर बाँहें फैलाये
मैं उन्मुक्त दौड़ा था,
राह चलते बच्चे अचानक
मुझे देखकर हँस पड़े
और सोच में डाल गये,
अब मैं शायद बड़ा हो गया।

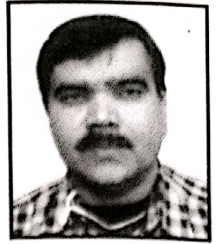
बारिश की टिप-टिप बूँदें थीं,
कुछ चेहरे पर, कुछ हाथों पर,
मीठी-मीठी प्यारी सी थी।
रिमझिम फुहार में बाँहें खोले
मैं स्वच्छन्द निकला था,
कुछ लोग राह चलते अचानक
मुझे देखकर हँस पड़े
अब मैं शायद बड़ा हो गया।





आ अब लौट चलें

- श्री अमरेन्द्र पाण्डेय,
सहायक लेखा अधिकारी



भारत विश्व का अध्यात्मिक गुरु है। प्राचीन भारतीय महर्षियों द्वारा प्रवर्तित “अध्यात्म विद्या” आज भी विश्व के लिए कौतुहल का विषय है। इसी विद्या के बूते भारतीय संस्कृति में ऐसी समग्रता एवं विशालता है कि अन्य संस्कृतियों की भी विशेषताएँ इसमें समाहित हैं। वास्तव में भारतीय संस्कृति वह महासागर है जहाँ विश्व की अन्य संस्कृतियाँ आकर मिलती हैं और अपनी पहचान इस संस्कृति की पहचान से जोड़ लेती हैं। संस्कृति की इस विलक्षणता का मूल, भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा प्रतिपादित शास्त्र, उपासना एवं जीवन-शैली है। वेद, पुराण, उपनिषद एवं अन्याय प्राचीन भारतीय ग्रन्थ ज्ञान के अकूत भण्डार हैं। ऐसा माना जाता है कि ज्ञान का उद्भव वेदों से ही हुआ है। दुनिया का शायद ही कोई ऐसी विद्या हो, जिसका उल्लेख इन शास्त्रों में न हो।

आधुनिक विश्व के “किसी अविष्कार, अथवा “सिद्धान्त विद्या प्रतिपादन” के बाद यह बात सुनने में जरूर आती है कि इस तरह के वस्तु/सिद्धान्त का उल्लेख फलाँ भारतीय शास्त्र में है और इसकी खोज हजारों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों द्वारा की जा चुकी है। विश्व समुदाय का एक बड़ा तबका ऐसी दावों को “मनगढ़त”, “परिकथाओं का हिस्सा”, “अपनी पीठ अपने थपथपाने

वाली बात” कहकर खिल्ली उड़ाते हैं। परन्तु, वास्तविकता यह नहीं है, और इसके अनेक प्रमाण भी मौजूद हैं।

वस्तुतः इतिहास-लेखन में पश्चिमी देशों के भेदभाव-पूर्ण नीति इस देश में लम्बे समय तक विदेशी शासन {सन् 1192 से 1947 तक} एवं आम जनों का इन शास्त्रों के प्रति उदासीनता के कारण इन सांस्कृतिक धरोहरों को वह सम्मान और स्थान नहीं मिल पाया, जिनका ये हकदार थी, और मानव समाज इससे होने वाली सुविधाओं से वंचित रहा।

हम अपने गौरवशाली अतीत को भूलकर, पश्चिमी सभ्यता की नकल को जीवनशैली का आदर्श मानने लगे हैं। डिस्को, क्लब एवं पार्टी में समय बिताना हम शान की बात मानते हैं, जबकि अध्यात्मिक प्रवचन आदि में समय देना, पिछड़ापन का प्रतीक है। इन्हीं कारणों से हम अपने गौरवशाली अतीत से दूर होते जा रहे हैं। इसकी महत्ता नहीं समझेंगे तो विश्व समुदाय इसकी खिल्ली क्यों नहीं उड़ाए ?

हमें अपने अतीत को समझने के लिए प्राचीन ग्रन्थों का सम्यक अध्ययन/जानकारी हेतु इच्छुक होना होगा। प्राचीन ग्रन्थों के तथ्यों से हम न केवल अपने गौरवशाली अतीत को आसानी से समझ

सकेंगे, बल्कि इसे एक प्रमाण के रूप में भी विश्व के समक्ष रख सकेंगे।

महर्षि वेदव्यास रचित महाभारत के एक-दो प्रसंग का संक्षिप्त उल्लेख इस सन्दर्भ में प्रासंगिक है:-

प्रसंग-1:- संजय का युद्ध-वर्णन:- संजय अपनी दिव्य दृष्टि से, युद्धभूमि से दूर बैठे धृतराष्ट्र को युद्ध वृत्तान्त सुनाते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम आज दूरदर्शन के पास हजारों कि०मी० दूर होने वाले मैच को सजीव रूप में देखते हैं। यह दिव्यदृष्टि दूरदर्शन अथवा इससे उन्नत कोई उपकरण रही होगी। चूँकि, जन सामान्य को इस तकनीक को समझना आसान नहीं था, अतएव इसे दिव्यदृष्टि कहा गया। अर्थात्, दूरदर्शन जैसी चीज जो आधुनिक विश्व के उन्नीसवीं सदी का अविष्कार है, हमारे समाज में {950 ईसा-पूर्व} मौजूद था। इस प्रकार भारतीय संस्कृति (1900+1000) लगभग 2500 वर्ष उन्नत सिद्ध होती है।

प्रसंग-2- महर्षि परशुराम द्वारा कर्ण को शाप देना:- यों तो अनेकानेक शास्त्रों में शाप/वरदान का उल्लेख मिलता है। इसे कुछ लोग मानते हैं कि इन घटनाओं का उल्लेख कहानी को रोचक बनाने के लिए किया जाता है, परन्तु क्या यह सत्य है? महारथी कर्ण ने एक झूठ के सहारे भगवान परशुराम की सहानुभूति अर्जित की थी और उनसे शिक्षा ग्रहण की थी। वह झूठ उजागर होने पर परशुराम जी काफी कुपित हुए और उन्होंने कर्ण को शाप दिया- “जरूरत पड़ने पर हमसे सीखी विद्या तुम्हें काम न आएगी और तुम इसे भूल जाओगे”। महाभारत का घटनाक्रम इस बात का गवाह

है कि कर्ण को इस विद्या की जब आवश्यकता पड़ी, वह इसका उपयोग न कर सका और अर्जुन के हाथों मारा गया। क्या मात्र परशुराम के वचन का प्रभाव ऐसा हो सकता है?

अमेरिका में डॉ० रसेल गर्ग की अगुवाई में पराशक्तियों पर किए गए अनुसन्धान के आधार पर “साइकोकाईनेसिस” अथवा मनोगतिशीलता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उन्होंने भारतीय शाप/वरदान की घटना को संभव बताया। मनोगतिशीलता के सिद्धान्त का सार यह था कि मनुष्य के आत्मचेतना की शक्ति को यदि जागृत की जाए तो यह भौतिक शक्तियों के मुकाबले काफी शक्तिशाली होती है और इससे ध्वनि द्वारा घटनाओं को अंजाम दिया जा सकता है। जिस प्रकार स्वीच ऑन करने से मशीन चल सकता है, ठीक उसी प्रकार वचन से अतिइंद्रिय शक्तियाँ जागृत होने पर ऐसी क्रियाएँ घटित की जा सकती हैं। जाहिर है कि शाप/वरदान देने वाले ऋषियों की आत्मचेतना कितनी प्रखर रही होगी। यह सिद्धान्त हमारे अतीत की गौरवशाली परम्परा को स्थापित/सिद्ध करती है।

अनिश्चितता का सिद्धान्त (Principle of uncertainty) के प्रतिपादक महान वैज्ञानिक हाईजेनबर्ग का यह कथन था कि उनका यह सिद्धान्त आदि शंकराचार्य के “वेदान्त दर्शन” से अभिप्रेरित है। ज्ञातव्य हो कि आदिशंकराचार्य रचित “विवेक चुड़ामणि” में वेदान्त दर्शन की वृहत् व्याख्या की गई है। हाईजेनबर्ग ने इस बात पर जोर दिया था कि भारतीय अध्यात्म का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है और उन्होंने विश्व के

वैज्ञानिकों से आह्वान किया था कि वे भारतीय आध्यात्मवेत्ताओं के कृतियों के बारे में अधिक-से-अधिक जानकारी हासिल करें।

ये सारे तथ्य भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत की पुष्टि करती हैं।

पश्चिमी सभ्यता की एक संस्था सर्न (यूरोपियन ऑर्गेनिजेशन फॉर न्यूक्लियर रीसर्च) जो इन्टरनेट Internet का जनक है, द्वारा विश्व की सबसे बड़ी मशीन बनाई गई है। इसका उद्देश्य है ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के रहस्य को जानना अर्थात् अतीत के बारे में जानकारी जुटाना। यह दुनियाँ की सबसे बड़ी शोध-परियोजना है। इसमें लगभग 10000 वैज्ञानिक अनुसंधान में लगे हैं। यह मशीन फ्रांस और स्वीट्जरलैण्ड की सीमा पर जमीन से 80 मीटर नीचे अवस्थित है, जो 27 कि०मी० लम्बी एवं लगभग 4 मीटर चौड़ी है। इस महामशीन को लार्ज हाईड्रेशन कोलाइडर नाम दिया गया है जो सितम्बर 2008 से अपना कार्य आरंभ कर चुका है। ऐसा अनुमान है कि मात्र एक वर्ष में इससे इतने आँकड़े प्राप्त होंगे, जिसके लिए 5.6 करोड़ सी०डी० की आवश्यकता होगी। अगर इन सी०डी० की तह लगाई जाए तो 80 कि०मी० ऊँची

ईमारत बन जाएगी। इससे प्राप्त होने वाले आँकड़े को सहेजने के लिए 'सुपरफास्ट इन्टरनेट' की परिकल्पना की गई है जो शीघ्र ही मूर्त रूप लेने वाला है। बहुत संभव है कि इन अनुसंधान के आधार पर जो निष्कर्ष निकाला जाएगा वह निष्कर्ष यहाँ के शास्त्रों में पहले से मौजूद हों।

सारांशतः खरबों डॉलर खर्च कर वे अतीत के बारे में जानने के लिये व्यग्र हैं और हम अपनी गौरवशाली अतीत को भूलते जा रहे हैं।

हमें चेतना होगा, अपनी संस्कृति, विरासत को पहचानना होगा। इसके शुरुआत का संकल्प हम सबों को लेना होगा। व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझकर, अपने बच्चों को इन शास्त्रों के बारे में जानकारी हेतु अभिप्रेरित करना होगा। व्यक्तिगत जिम्मेदारी को हमें सामाजिक जिम्मेदारी हेतु अभिप्रेरित करना होगा, जिससे जागृत होगा समाज और तब पूरा देश समवेत स्वर में कहेगा "आ अब लौट चले" अतीत की ओर।

और तभी हम अध्यात्मिक गुरु होने की सार्थकता को प्रमाणित कर सकेंगे।



कल आज और कल

- श्री दुलारी शरण सिंह,
वरिष्ठ लेखाकार



कहते हैं आज तो आज है कल तो खत्म हो गया। और न जाने आने वाला कल में क्या होगा। वास्तव में आनेवाला कल के बारे में तो बात करना ही बेकार है। क्योंकि, उस पर सिर्फ आशा किया जा सकता है। जो कल हम कर चुके हैं और जो आज हम कर रहे हैं वही आधार मानकर सोचा जा सकता है। इसी संदर्भ में मैं अपने जीवन के कुछ अनुभव को रखना चाहता हूँ। कल यानि जो कुछ मैं अपने बचपन से आज तक देखता आ रहा हूँ उससे यही लगता है कि कल लोग कितने सौहार्दपूर्ण वातावरण में जीवन बसर करते थे। वैसे माना जाये तो कल लोग काफी गरीब हुआ करते थे। उनके पास इतने संसाधन नहीं हुआ करते थे। वैसे माना जाये तो कष्ट झेलते हुए एक-दूसरे को मदद किया करते थे। मुझे याद आता है जब मैं बाल्यावस्था में गाँव में रहता था। जब फसल कटने का समय होता था, गाँव के चारो ओर खलीहान बनता था और धान के पुआल से पूरा का पूरा गाँव इस कदर ढ़क जाता था कि दूर से देखने पर गाँव की कल्पना करना भी मुश्किल सा लगता था। चूँकि हम उसी गाँव के रहने वाले थे तो मुझे तो ऐसा नहीं लगता था, परंतु जब कभी दूसरे गाँव में जाने की आवश्यकता होती थी तो यह अनुभव करना मुश्किल था कि जो डगर मैं पकड़ा हूँ वह सही है। वैसे होता सही ही था। लोगों के पास

मौसमी काम हुआ करते थे। जब वर्षा का मौसम आता था तो लोग महीने दो महीने का भोजन का बंदोबस्त कर घर में रहा करते थे। उस समय ना तो उनके पास कार्य हुआ करता था और ना ही उन्हें अन्य जगह कार्य मिला करता था। उपर से घर से निकलने का मौका भी नहीं। वर्षा की मात्रा अधिक हुआ करता, फिर भी कहीं बाढ़ नहीं आती थी। वैसे इक्तेफाकन कई वर्षों में एक बार आ गया तो मानो एक रिकार्ड बन जाया करता था। उसी प्रकार जब गर्मी का मौसम आता था तो लू इस कदर चलता कि लोग घर से बाहर निकलने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अगर किसी को कहीं जाना भी हो तो लोग अगली सुबह एवं शाम का सहारा लिया करते थे। और कुछ ऐसी ही स्थिति ठण्ड के मौसम में भी हुआ करती थी। और तो और लोग या तो मध्यम वर्गीय होते थे या फिर मजदूर स्वरूप। पर, जमींदार या पूँजी-पति लोग कम हुआ करते थे।

लेकिन, आज देखा जाये तो उपर्युक्त सारी बातें विल्कुल बदल गयी हैं। आज मनुष्य, मनुष्य का दुश्मन बन गया है। आपसी प्रेम समाप्त हो चुका है। ना तो पिता को पुत्र से प्रेम है और ना ही पुत्र को पिता से। इस परिवेश में समाज में प्रेम का तो कल्पना ही नहीं किया जा सकता। संयुक्त परिवार खत्म हो चुका है। खेती वाले जमीन टुकड़े-टुकड़े होते जा रहे हैं।

आज गाँव में जाने पर लगता है कि जितना पहले मजदूर लोग मजदूरी कर खलिहान बनाते थे आज का खलिहान किसान का हो गया है। चारों ओर प्रतिवर्ष बाढ़, सुखार का वर्चस्व बना रहता है। अलबत्ता जो पहले लू चला करता था वह अब देखने को नहीं मिला करता है। आज एक मनुष्य थोड़ी फायदे के लिए अनेकों का कत्ल करने में नहीं हिचकता। हाँ, आज चाहे जो हो इतना तो जरूर नजर आता है कि पेट में चाहे कुछ हो ना हो पर देखने में ऐसा कतई नजर नहीं आता। सभी लोग अच्छे खाते-पीते घर से संबंध रखने लायक नजर आते हैं। खुशहाल नजर आते हैं। चूँकि, आज दिखावे का युग आ गया है। इस दिखावे में युवक-युवतियाँ पश्चिमी सभ्यता का परिवेश, वेश-भूषा को अपना रहे हैं। वे शायद यह भी सोचना भूल गये हैं कि उनके लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है। लगता है मानो नग्न ही बाजारों, कॉलेजों में घुमा जा रहा है।

तरह-तरह की घटनाएँ जो हमारे समाज में घटित हो रही हैं इसी का परिणाम है।

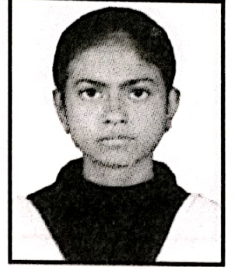
कल और आज में तुलनात्मक सोंच से आने वाला कल कुछ अच्छा और कुछ बुरा का संकेत देता है। अच्छा इस मामले में कि एक समय मनुष्य की भाँति जीना हम जरूर सीख लिए हैं। छपरैल/खपरैल घर को छोड़ पक्के मकान में रहते हैं। अच्छे वस्त्र धारण करते हैं और पता नहीं क्या-क्या। परंतु, गौर से अगर देखा जाये तो आने वाला कल में मनुष्य का जीवन सीमा (Life span) कम हो गया है। क्या इसे भी हम अच्छा कह सकते हैं ?

वास्तव में, मनुष्य को चाहिए कि जहाँ कहीं भी मौका मिले अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए और बुराईयों को त्यागना चाहिए। हर किसी जीव में कुछ अच्छाईयाँ होती अवश्य हैं, पर शायद उसकी अच्छाईयाँ हमें उतना प्रभावित नहीं कर पाती जितना कि उसकी बुराईयाँ।



खतरनाक विवाह मासूम बाराती

- सुश्री प्रिया राज,
सुपुत्री-श्री राम बली सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

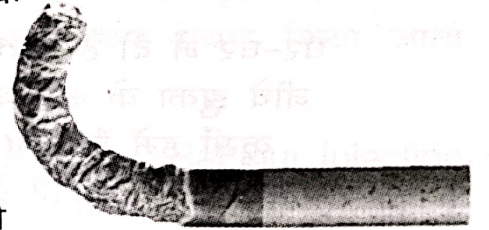


अमंगलम् गुटखा खाद्यम् धुम्रपान! अमंगलम् सर्वव्यसनम्।
कराग्रे वसते बीड़ी, करमध्ये चुरुरम्! करमूले स्थिति गुटखा प्रभाते कर दर्शनम्

दुर्भाग्यवती - बीड़ी कुमारी उर्फ सिगरेट देवी
कुपुत्री - श्री तम्बाकूलाल एवं श्रीमती जयन्ती देवी
निवासी - 420, जमलोक हाउस दुःखनगर।

संग

मृतात्मा - कैसर कुमार उर्फ लाइलाज बाबू
कुपुत्र - श्री गुटखालाल जी एवं श्रीमती भांगदेवी
निवासी - गलत रास्ता, व्यसनपुर (नशा प्रदेश)



का अशुभ विवाह तय हुआ है। अंतः इस भयानक प्रसंग पर चाचा गांजा सिंह, चाची अफीम देवी, दादा हुक्काराम, दादी सुल्फी देवी, मामा-ड्रग्स राम, मामी शराब देवी, हेरोईन देव, नाना कॉफी सिंह, ताउ चुनाराम, जैसे खतरनाक बुजुर्गों की उपस्थिति में नवदम्पति को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु सादर आमंत्रित है।

विवाह समय - अनिश्चित काल
विवाह स्थल - शमशान घाट होम, चिता भवन, कष्ट मोहल्ला,
दुर्गति गली, दुःख नगर, जिला-परलोकपुर

नोट :- बारात एम्बुलेंस से कैसर अस्पताल होते हुए कालघड़ी में शमशान घाट पर मैरिज होम पहुँचेगी।

विनीत
बलगम कुमार,
कब्जी देवी

दर्शनाभिलाषी

सेठ दमादास, श्रीमती टी0बी0 देवी
श्रीमती खौंसी बाई, एवं समस्त बीमारी
परिवार, नशीली गोलियाँ, इन्जेक्शन,
एवं सम्स्त पितृव्यू परिवार।

चुनावी माहौल

- सुश्री प्रीति चन्द्रा,
सुपुत्री-श्री मुकुन्दी पासवान,
व० लेखाकार



लो चुनावी माहौल है फिर से गरमाया।
सोई हुई जनता को नेताओं ने जगाया।।

घर-घर में दी है दस्तक,
नीचे झुका के मस्तक।
कुर्सी हमें है लेना
'मत' अपना हमें ही देना।

दिए झूठे आश्वासन,
सबको मिलेगा राशन।
पानी की ना होगी दिक्कत,
जब हम करेंगे शासन।

हम साक्षरता का दीप जलाएँगे,
विकास का द्वार खुलवाएँगे,
बेरोजगारी का नाम भी मिटाएँगे,
जब आप हमें सत्ता दिलाएँगे।

तीखे थे उनके भाषण,
वादों में शायद था दम।

तब जनता बेचारी जागी,
और वोट देने भागी।
जीते जो प्रत्याशी,
बनी कुर्सी उनकी दासी।

ना मिल रहा है राशन,
पानी का ना ठिकाना।
पर कर रहे हैं शासन,
देखे इन्हें जमाना।

ना जाने साक्षरता का दीप
किस कोने में जला,
अब भी आधी जनता
अज्ञानता में पला।

विकास का था वो बहाना,
सत्ता था उनको पाना।
सत्ता जो मिल गया तो,
विकास हुआ अंजाना।

बेरोजगारी का क्या कहना,
बन गया है वह देश का गहना।
पढ़ लिख कर भी हमें
बेरोजगारी की मार है सहना।

इस चुनावी माहौल में,
जनता बनी निशाना।
नेताओं ने मिलकर, एक बार
फिर रचा नया अफसाना।



पागल कुत्ते के काटने (Dog Biting) पर क्या करें

- वैद्य (डा०) रामेश्वर राम,
वरीय लेखाकार



केवल पागल कुत्ते के काट लेने मात्र से तत्काल व्यक्ति पागल नहीं होता है। पागलपन का विष 2-3 दिनों बाद धीरे-धीरे अपना प्रभाव दिखाता है।

पागल कुत्ते की पहचान:- पागल कुत्ते की पूंछ सीधा हो जाता है जबकि सामान्य कुत्ते की पूंछ टेढ़ा ही रहता है। पागल कुत्ते के मुंह से लार टपकते रहता है। पागल कुत्ता के काटने पर काटे हुये स्थान पर यदि एक रोटी 7 मिनट तक रखा जाय और उस रोटी को किसी सामान्य कुत्ता को दिया जायेगा तो सामान्य कुत्ता रोटी नहीं खायेगा। तब समझना चाहिये कि काटने वाला कुत्ता पागल ही था। यदि कुत्ता काटे हुये व्यक्ति पर ठंडा पानी डाला जाये और उसका शरीर तुरंत गरम हो जाये तो पागल कुत्ते का विष लग गया है समझना चाहिये।

प्राथमिक उपचार:-

- ❖ कुत्ता के काटे हुए अंग के उपर कपड़ा से कस कर बांध देना चाहिए।
- ❖ कुत्ता के काटे हुए स्थान पर नई ब्लेड से मांस को थोड़ा चीर कर खून बहा देना चाहिए, ताकि विष उपर नहीं चढ़े और कपड़ा धोने वाले साबुन से घाव को धो देना चाहिए।

निदान:- बहुत साल पहले कुत्ता काटने पर रोगी के नाभी के अगल बगल में 14 सूई देने का प्रावधान था जो बड़ा कष्टदायक होता था। वह सूई भेड़ के सिर से सिरम निकाल कर तैयार किया जाता था।

आधुनिक चिकित्सा:- Rabipur Injection पागल कुत्ता के काटने पर रैबीपुर का 7 इन्जेक्सन देने का प्रावधान है और सामान्य कुत्ता (Street Dog) या घर में पाला हुआ कुत्ता के काटने पर रैबीपुर का 3 इन्जेक्सन दिला ही देना चाहिये। पागल कुत्ता के काटने पर यदि उक्त सुई रोगी को नहीं दिलाया जाय तो कभी-कभी उसको पागलपन का दौरा होगा और कुत्ता की तरह भौकते-भौकते व्यक्ति मर जाता है।



लकवा (फालिज) Paralysis से कैसे बचे ?

- वैद्य (डा०) रामेश्वर राम,
वरीय लेखाकार



रोग, परिचय, लक्षण, कारण और निदान:- इसमें शरीर के एक तरफ का एक अंग, एक तरफ का हाथ या एकतरफ का पैर या एक तरफ की आँख या एक तरफ की आधी जीभ सहसा बीमारी के आक्रमण से निर्जीव हो जाता है। अर्थात् रोगग्रस्त अंग को रोगी अपनी इच्छानुसार हिला डुला नहीं सकता है।

कारण:- पेट में अधिक वायु (गैस) बनना, आसानी से न निकलना आदि से मष्तिष्क की वायु के दबाव पहुँचाकर और उसका निष्कासन नहीं होने पर अचानक वायु का झटका रक्त का सुनियोजित संचालन नहीं होने पर रोगी को निस्तेज कर देता है, जिससे व्यक्ति लकवा अथवा फालिज का शिकार हो जाता है।

नारायण तेल:- यह तेल पक्षाघात शरीर के किसी भी अंग का सूखना, लंगड़ापन होने पर इस तेल का मालिश सुबह शाम करने से बहुत लाभ होता है।

वातकंटक कैप्सूल (मिश्रा) सुबह शाम नाश्ता के बाद एक-एक कैप्सूल रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

व्यायाम:- रोगी को सुबह-शाम व्यायाम भी करना लाभकारी होता है। झारखंड के बूढ़े बुजुर्ग का कहना है कि गेंहुमन साँप का उम्र 100 साल होता है। प्रत्येक साल वह साँप अपना केचुल उतारता

रहता है। केचुल उतारते समय वह झाड़ियों में अटक जाता है और उसके पूंछ का थोड़ा अंग या हिस्सा टुट कर केचुल में ही रह जाता है। केचुल उतारते-उतारते 90 साल में वह छोटा होकर सिर्फ एक फीट का हो जाता है और उसके दो पंख भी हो जाते हैं और तब वह काफी विषैला हो जाता है। वह आकाश मार्ग से उड़ते हुए हिमालय पर्वत के चंदन के पेड़ में लिपटने के लिए जाता है। इसी दौरान उसका छाया मनुष्य के जिस अंग पर पड़ जाता है वह अंग लकवाग्रस्त हो जाता है।

निदान का उपाय:- झारखंड के बुजुर्गों का कहना है कि यदि लकवाग्रस्त व्यक्ति एक जोड़ा लकवा कबूतर लाकर अपने सोने के कमरा (Bed Room) में सिरहाने लकड़ी के डब्बा में पालना शुरू कर दें यानि सुबह दोनों कबूतर को अपने कंधा पर बिठावे। उसे गेहूँ दाना खिलावे, तो उस कबूतर के पंख से जो हवा निकलेगा उससे लकवाग्रस्त व्यक्ति ठीक हो जाता है। पटना सिटी रोड में गांधी सेतु से पहले शिकार बाजार में लकवा कबूतर 400/- रुपये जोड़े आसानी से मिल जाता है।

लकवा कबूतर की पहचान:-

उजला रंग का कबूतर होता है। उसकी पूंछ फूलों के गुलदस्ता की तरह खिला हुआ होता है। मैंने इसका प्रयोग

एक लकवाग्रस्त रोगी पर किया। उसे पालने के लिए दो लकवा कबूतर दिया। वह अपने कमरा में लकड़ी के डब्बा में रखा। रोज उसको दाना, पानी खिलाता था और कबूतर को लकवाग्रस्त पैर पर बिठाता था। एक माह बाद वह व्यक्ति जो लाठी के सहारे धीरे-धीरे चलता था, अब बिना लाठी के आराम से चलने लगा है। अन्य शहरों की तुलना में लखनऊ के लोग बहुत कम एक्का दूक्का लकवाग्रस्त होते हैं, क्योंकि मुगलकाल के नवाब के समय से अबतक लखनऊ के लोग कबूतर पालते रहें हैं। उस शहर में लकवा कबूतर, गिरहबाज कबूतर एवं भिन्न-भिन्न किस्म के कबूतर बहुतायत में पाये जाते हैं। उनके पंख के हवा से लकवा वहाँ नहीं फटकता है।

लहसुन:- लकवाग्रस्त रोगी को एक पोटका दो लहसुन रोज सुबह खाकर एक गिलास ताजा पानी पी लेना चाहिये, ताकि शरीर में जहाँ कोलेस्ट्रॉल जमा हो जाता है या कोई नस जाम हो जाता है तो, उसमें यह लहसुन खाने से रक्त-प्रवाह जारी करने में मददगार होता है।

एक पोट का लहसुन सिर्फ बंगाल में ही होता है। यह छोटा प्याज की तरह उजला होता है। पटना में किसी भी बंगाली के किराना दूकान में मिलता है। पटना रेलवे स्टेशन के पास न्यू मार्केट के कानू स्टोर (बंगाली-दुकान) में मिलता है।

यदि एक पोट का लहसुन नहीं मिले तब देशी लहसुन का तीन जावा छिलका उतारकर सुबह खाली पेट खाकर एक गिलास पानी रोगी को दें। उसके बाद ही चाय पी सकता है।

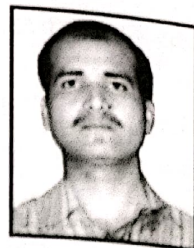
परहेज:-

1. रोगी को खेसारी का दाल, खेसारी का साग, बिल्कुल नहीं खाना चाहिए।
2. अकटी का दाल, अकटी का साग नहीं खाना चाहिए।



“मुम्बई पर आतंकी हमला”

- श्री अजय कुमार,
सुपुत्र- श्री हरेराम प्रधान,
वरिष्ठ लेखाकार



सरहद पार से आतंकियों ने आकर
मुम्बई पर गोलियों बमों से कहर बरपाया।

ताज, ओबेराय होटल संग जगह-जगह पर
वहरे देशी-विदेशी पर्यटकों का दिल
दहलाया।

छीना बूढ़ी माताओं का लाल था जो उनके
बुढ़ापे का सहारा।
सुहागिनों का सुहाग उजाड़ा,
बच्चों को अनाथ बनाया।

समय आ गया है,
अब हम (‘ह’-से हिन्दू ‘म’ से मुस्लिम)
मिलकर
उन आतंकियों का जमकर मुकाबला करें,
उनके नापाक इरादों को धूल में मिलार्यें,
जिन्होंने मुम्बई को थर्राया।

हमारे विकास को देख
पड़ोसी देश का सिर चकराया,
विकास में बाधा डालने हेतु
दहशतगर्दों को उकसाया।

फिर भी !

हमने संयम का परिचय देकर
दुनिया को बतलाया,
आतंकी देश की हरकतों को
दुनिया को दिखलाया।

पड़ोसी देश जब-जब भी हमसे उलझा
हमने किया उसका सफाया।
फिर भी इसने घिनौनी हरकतें कर
हमारे खिलाफ अपनी जनता को भरमाया।

जब-जब भी लड़ाई लड़ी,
उसे मुँह की खानी पड़ी,
हमें बार-बार उकसा रहा है
जिसे देख शर्म भी शर्माया।



“क्यों ? ऐसा क्यों ??”

- सुश्री अंकिता सिन्हा
सुपुत्री- श्री प्रेम कुमार सिन्हा,
सहायक लेखा अधिकारी

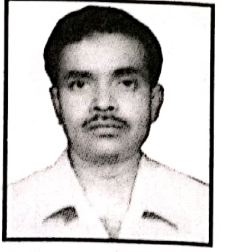


क्यों ? ऐसा क्यों ?????
क्यों खामोश होती जा रही है ये दुनिया ?
क्यों अत्याचार के खिलाफ आवाज न उठा पा रही है ये दुनिया ?
क्यों इन्साफ को दबाए जा रही है ये दुनिया ?
क्यों हैवानों को ताज पहना रही है ये दुनिया ?
चीखों के गूँज से दहला रही है ये दुनिया ?
मासूमों के खून से नहा रही है ये दुनिया ?
बच्चे, बूढ़े जवान सभी डरे हुए हैं !
जान लेने की खातिर जालिम खड़े हुए हैं !
धोखा, मार-काट, चोरी बढ़ती जा रही है।
हमारी पावन धरती को मैला करती जा रही है।
इंसान ही इंसान का दुश्मन बना हुआ है।
धर्म और मजहब के नाम पर एक दूसरे को मार रहा है।
अब बस ! सहा न जाता,
धरती माँ की गूँज सुनो,
इनके आँसुओं की कीमत समझो !
निर्बल लोगों को मोहरा मत बनाओ।
जागो, उठो देश के नौजवानों।
हम एक जुट हो इन दरिदों से लड़ें।
धरती माँ के सीने पर क्लेश न पड़ने दें।।



झूठ के कुहासों से उबरे, सत्य का आश्रय लें

- श्री विजय प्रसाद,
लेखाकार



सच-झूठ का खेल निराला है। जो है, जिसका अस्तित्व है, उसे सच कहते हैं और जो नहीं है पर जिसके अस्तित्व को गढ़ा जाता है, वह झूठ है। सच एक घटना है और झूठ विचारों का प्रवाह। घटना प्रकृति के अंतर्गतल में गहराई से अपना निशान छोड़ जाती है, जिसे कभी भी उकेर, उभार कर देखा-परखा और सत्यापित किया जा सकता है, परंतु झूठ मात्र विचारों का उमड़ता-धुमड़ता एक संजाल है। झूठ को प्रमाणित करना कठिन है, क्योंकि आज जिस विचार को घटना का रूप दिया गया, कल या किसी और क्षण में उसे उसी रूप में सत्यापित करना आसान नहीं। ऐसा नहीं होता है, क्योंकि विचारों के प्रवाह क्षण-क्षण बदलते रहते हैं। अतः झूठ पकड़ा जाता है।

सच वह घटना है जो प्रकृति में घटती है और अपना पद चिह्न छोड़ जाती है। प्रकृति सच है- ऋतुओं में परिवर्तन, सूर्यास्त-सूर्योदय की सतत् पुनरावृत्ति, वर्षा, शीत और ग्रीष्म का प्रभाव-परिवर्तन। ये प्राकृतिक घटनाएँ होती हैं और ऋतुओं के अनुसार उनकी पुनरावृत्ति भी होती है। प्राकृतिक घटनाओं के विपरीत कृत्रिम चीजों का अस्तित्व नहीं होता। शरद ऋतु में प्रकृति में चारों ओर शीत की चादर ढक लेती है, इसे जड़-जंगम और जीव सभी अनुभव करते हैं और उसी के अनुरूप अपनी दिनचर्या भी बदल लेते हैं, परंतु शीतलता लाने के लिए किसी एक कमरे में एअरकंडीशनर की आरोपित ठंड प्रकृति में परिवर्तन नहीं ला सकती है। सूर्योदय के समय सूर्यमुखी पुष्प का मुस्कुराना, कमल का खिलना और लाजवंती के पत्रों का लज्जा त्यागकर फैलना एक विशिष्ट विशेषता है। सूर्योदय के समान

कृत्रिम प्रकाश फैलाकर इन प्राकृतिक घटनाओं को पाया नहीं जा सकता।

सच प्रकृति में घटता है तो प्राकृतिक सच कहलाता है, परंतु यह जीवन में घटता है तो समूचे अस्तित्व में आंदोलन-उद्वेलना होने लगती है। पर झूठ से जीवन का अस्तित्व प्रभावित नहीं होता है, क्योंकि यह विचारों का प्रायोजित प्रवाह मात्र होता है। झूठ कृत्रिम है, प्राकृतिक नहीं। कृत्रिम है, इसलिए विनिर्मित किया जाता है। इंसान द्वारा बनाई चीजें और प्रकृति प्रदत्त प्राकृतिक उपहार में ऐसा अंतर होता है, जैसे-कागज का पुष्प और गुलाब का पुष्प। कागज का पुष्प कितना ही खूबसूरत और आकर्षक क्यों न दिखे, पर होता बेजान है। इसमें वह सुरभि और ताजगी कहाँ, जो ओस से सने गुलाब के फूल में होती है। सच है- गुलाब का ताजा पुष्प, और झूठ है- कागज का बेजान पुष्प। सच जैसा घटता है, वैसे ही होता है, उसे कोई भी और कहीं भी, वैसा ही बताएगा जैसा होता है, पर झूठ के लिए ऐसी कोई शर्तें नहीं हैं। वह समय और परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित हो जाता है। आज जो बोला था, कल नहीं बोलेंगे। कल तो कुछ और ही बोलेंगे, क्योंकि कल की बताई बातें, आज याद ही नहीं हैं। झूठ एक ही बात को अनेक ढंग से प्रस्तुत करता है।

झूठ द्वन्द्व है, झूठ मुखौटा है, झूठ झूठा आवरण है। इस आवरण को ओढ़े रखने में बड़ी समस्या है, पर जब आदत हो जाती है तो यह आवरण बड़ा ही डरावना, किंतु आकर्षक दिखता है। आकर्षक इसलिए कि झूठ बोलने वाला व्यक्ति बड़ी ही अलंकारिक एवं चालाकी से अपनी बातों को प्रस्तुत करता है और

डरावना इसलिए कि कहीं असलियत का पता नहीं चल जाए। झूठा व्यक्ति स्वयं को तथा औरों को धोखा देता है। अपने को धोखा देने का तात्पर्य है-अपने अस्तित्व को नकारना और जो नहीं है, उसे होने के लिए समझाना। दूसरों को ठगने का मतलब है- अपनी मनगढ़ंत बातों के लिए समाज में वैसी ही भूमिका का निर्वाह करना। दोनों ही दशा में द्वन्द्व है, न अंदर में शांति मिलती है और न बाहर चैन। बेचैन मन अपने ही बुने हुए मकड़जाल में घिरा-जकड़ा रहता है।

झूठ में पीड़ा है, पर सच तो खिला हुआ मुस्कुराता प्रसून है, जिसके पास-परिवेश में सुरभि की छटा विखरी हुई रहती है। यहाँ पर चेतना प्राकृतिक होती है, मानव जीवन सतत् प्राकृतिक रूप से विकसित होता है, क्योंकि इसमें ग्रंथियाँ नहीं होती हैं, दरारें नहीं पड़ती और चेतना विखंडित-विभाजित नहीं होती हैं। सच बोलने वाले के पास प्रखर आत्मबल एवं आंतरिक शक्ति होती है, जबकि झूठा डरा, सहमा एवं निस्तेज होता है। झूठ बोलने वाला अपनी झूठी मनगढ़ंत बातों को मनवाने के लिए अनेक जतन करता है और इसके फेर में हर समय उलझा रहता है, जिससे जीवन की बहुमूल्य उर्जा एवं शक्ति चुकती रहती है। जीवन के जिन क्षणों एवं उर्जा को किन्हीं श्रेष्ठ कार्यों में लगाते, उन्हें झूठी बातों में लगा देते हैं। झूठ का अंत बड़ा ही दारुण एवं दयनीय होता है। हजार जतन के बाद भी झूठ को अप्रमाणिक और अविश्वसनीय माना जाता है और उसे हर पल शक-संदेह के घेरे में रखा जाता है। उसकी स्थिति उस गड़ेरिए जैसी होती है, जिसके भेड़ को भेड़िया आकर ले जाता है और वह भेड़िया आया..... भेड़िया आया..... चिल्लाता रहता है, परंतु उसकी कोई सहायता करने वाला नहीं होता है। झूठा व्यक्ति की किसी भी बात पर विश्वास नहीं किया जाता है, क्योंकि यह संदेह रहता है कि वह जो बोल रहा है, वह झूठ ही बोल रहा है।

अंतर का उहापोह और अपनों के अविश्वास से झूठे व्यक्ति की सभी सृजनशील सामर्थ्य चुक जाती है, उर्जा नष्ट हो जाती है। अतः वह जिस कार्य को भी करता है, असफलता ही हाथ लगती है और सफल हो जाने के बावजूद भी, उसकी सफलता को संदिग्ध और संदेहग्रस्त ही माना जाता है। यह गहरी पीड़ा उसे हताशा और निराशा के अंतहीन अंधपथ पर धकेल देती है, जहाँ अंत में कोई साथ नहीं होता है, अकेला अतृप्त प्रेत के समान डोलता रहता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के शोध बताते हैं कि झूठ बोलने वाले व्यक्ति गहरे मनोरोगों के शिकार होते हैं। इसके ठीक विपरीत सच बोलने वाला आत्मविश्वास से लबरेज होता है। उसके साथ में उसके अस्तित्व की ताकत समाई रहती है। किसी भी कठिनाई को वह अपनी इसी सामर्थ्य से पराजित कर आगे बढ़ता है। मान्यता है कि सच यदि लगातार बोला जाए तो जिह्वा में इतनी ताकत समा जाती है कि निकली हर बात सच होने लगती है। बीस साल तक सच बोलने से अभिशाप-वरदान की सामर्थ्य आ जाती है। मनीषी-विद्वानों के अनुसार झूठ नहीं बोलना और सच अधिक बोलना चाहिए। परिस्थितिवश किसी का भला करने के लिए बोला गया झूठ भी सच के समान होता है, परंतु किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए बोला गया सच झूठ से भी बड़ा घातक माना जाता है। दिन का कुछ समय ऐसा हो कि उसमें किसी भी प्रकार के असत्य वचन नहीं बोलेंगे। उस समय पूरे होश में रहेंगे। समय के साथ होश का यह अंतराल अभ्यासपूर्वक बढ़ाते रहने से असत्यरूपी वैचारिक असंयम से कमशः पार पाया जा सकता है और सच जीवन का प्राकृतिक अंग बन सकता है।

अतः सच बोलने के लिए इनका उपयोग कर जीवन को सच के सुहाने परिधान से आवृत करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।



राष्ट्र भाषा हिन्दी का यह कैसा सम्मान

- श्री अनिल कुमार सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी



हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा घोषित होने के पश्चात प्रत्येक वर्ष भारत सरकार एवं अन्य राज्य सरकारों की ओर से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। साथ ही हिन्दी में कार्य करने का संकल्प प्रत्येक वर्ष सभी विभागीय पदाधिकारियों, कर्मचारियों एवं राजनीतिज्ञों द्वारा लिया जाता है, परंतु केवल हम संकल्प लेते हैं और सभा में हिन्दी के विकास के प्रति अभिभाषण/प्रवचन देते एवं सुनते हैं। सभा समाप्ति के बाद न तो हम संचिकाओं में हिन्दी में लिखने का प्रयास करते हैं और न ही देश में हिन्दी के प्रति सच्चे अर्थों में मातृभाषा का सम्मान देते हैं। बल्कि, कुछ लोग अंग्रेजी में लिखना गर्व समझते हैं। पूरे वर्ष हिन्दी और राष्ट्रभाषा/मातृभाषा हिन्दी का अपमान होता रहता है, उसकी इज्जत लूटी जाती है और हम हिन्दुस्तान में ही हिन्दी का इज्जत लूटते देखते हैं एवं हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। कोई लाचारीवश हिन्दी के अपमान को द्रौपदी के चीर-हरण की भांति देखते एवं सहते रहते हैं तो कुछ वोट की राजनीति से वशीभूत होकर चुप्पी साधे रहते हैं। परंतु, कोई हिन्दुस्तानी भगवान श्री कृष्ण बनकर खड़ा होने का साहस नहीं जुटा पाता है। कुछ लोग तो हिन्दी का अपमान करना शान समझते हैं। ओछी राजनीति और ओछी शान को हिन्दी के अपमान में अपना शान समझते हैं। अधिकांश पदाधिकारी गण एवं कुछ कर्मचारी संचिकाओं

में हिन्दी लिखने में अपना अपमान समझते हैं। कुछ राजनीतिज्ञ सरे आम हिन्दी का अपमान करते हुए सड़क पर उतर आते हैं। इसका जीवंत उदाहरण है हाल के दिनों में महाराष्ट्र का एक छोटा सा छोकड़ा अपने को एक पार्टी से संबंध स्थापित कर हिन्दी का अपमान करते हुए सड़कों पर आंदोलन का रूप बना बैठने की हिम्मत कर डाला और एक लोकप्रिय भारतीय सितारे को इतना मर्माहत किया कि वह आँसू बहाने को बाध्य हुए और संघ एवं राज्य सरकार के नुमाइंदों एवं भारतीय संविधान का रक्षक मूक दर्शक बने रहे। एक उच्च न्यायालय ने तो इसे आतंकवादी तक कह डाला। परंतु, धिक्कार है संविधान के ऐसे रक्षकों, कानून के रखवालों एवं ऐसे राष्ट्र-भक्तों पर जो हिन्दी राष्ट्रभाषा का चीर-हरण करने में तनिक भी संकोच नहीं करते। हिन्दुस्तान के सपूतों के रक्त इतने ठंडे हो चुके हैं या हम इतने बुजदिल, डरपोक एवं ज्ञानविहीन हो चुके हैं कि महाभारत की द्रौपदी की तरह हिन्दी का चीर-हरण होता रहा और हम भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य एवं अन्य तेजस्वी बहादुरों की तरह उस दुर्योधन के द्वारा हिन्दी की इज्जत की निलामी देखते रहे। इस तरह के कई उदाहरण हिन्दुस्तान में आये दिन होते रहते और हम एवं हमारी सरकार हिन्दी को राष्ट्रभाषा, मातृभाषा कहने का ढकोसला करते रहते हैं। हर वर्ष हिन्दी पखवाड़ा पर सरकार का करोड़ों रुपये का निराधार व्यय होता रहता है। क्या हम

वैसी परिस्थिति में खुलकर नहीं बोल सकते कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है? हम हिन्दुस्तान में हिन्दी में बोलेंगे, बोलेंगे, बोलेंगे और राष्ट्रभाषा का सम्मान एवं संविधान की रक्षा करेंगे, करेंगे, करेंगे! यदि ऐसा नहीं कह सकते हैं तो हमें न तो हिन्दुस्तानी कहलाने का हक है और न तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा या मातृभाषा कहने का हक है, यह हिन्दी का अपमान नहीं है तो और क्या है?

संसदीय राजभाषा समिति के तीसरे प्रतिवेदन में की गयी सिफारिशों के संबंध में भारत के राष्ट्रपति के आदेश राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संसोधित, 1967) की धारा 4(4) के अंतर्गत यह आदेश दिया गया था कि सभी क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण वर्ष 2008 के अंत तक का पूरा कर लिया जाए। बाद में इसे 2015 तक का लक्ष्य रखा गया है।

इस आदेश की एक प्रति भारत सरकार के सभी विभागों, मंत्रालयों, सभी राज्य सरकारों, सभी संघ शासित क्षेत्रों, देश की सभी संबंधित के सार्वजनिक सूचना के लिए प्रकाशित किये जाएँ।

हिन्दी प्रशिक्षणों को प्रमुखता से चलाने की आवश्यकता है। साथ ही कार्यशालाओं में प्रख्यात हिन्दी के विद्वानों और सक्षम विशिष्ट व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जाए। इस निर्णय के अनुसार भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों आदि द्वारा कार्रवाई की जानी अपेक्षित है।



गौ माता के गुण

- श्री अनिल कुमार सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी



गौ हमारी माता है। हिन्दु धर्म में गौ को माता कहा गया है, यह केवल धार्मिक भावना का प्रतीक नहीं है। बल्कि, गाय के गुणों एवं उसके द्वारा प्रदत्त उपहारों के कारण गौ को माता के समतुल्य माना गया है। इतिहास इसका साक्षी है कि गाय से अधिक मूल्यवान कोई सम्पत्ति नहीं है। महर्षि च्यवन ने राजा नहुष से कहा था- “हे राजन! मैं इस संसार में गौओं के समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। गौओं के गुणों के बारे में शास्त्रों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। गौएँ सदा लक्ष्मी की जड़ हैं। गौएँ विकार रहित दिव्य अमृत धारण करती हैं और दूहने पर अमृत ही देती हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है। इस पृथ्वी पर गौएँ अपनी काया और कान्ति से अग्नि के समान हैं। गौएँ स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं। गाय के गोबर से लीपने पर देवताओं के मंदिर और पितरों के श्राद्धस्थान पवित्र हो जाते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा गया है कि गाय के गोबर से लीपने पर वहाँ के विषैले किटाणुओं का नाश हो जाता है। गौओं से उत्पन्न दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र और रोचना ये छः अङ्ग (गोषडङ्ग) अत्यन्त पवित्र और लाभकारी माना गया है। वैज्ञानिक एवं चिकित्सा विज्ञान भी इन चीजों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही माना है। इनका प्रयोग दवा के

रूप में किया जाता है। जब माता को दूध नहीं होता है तो डाक्टरों का सलाह होता है कि गाय का दूध शिशु को दिया जाय। यानि, माता के दूध के समान ही गाय का दूध गुणकारी है। इसलिए गाय का स्थान माता के समान है। श्री सम्पन्न बिल्व वृक्ष गौओं के गोबर से ही उत्पन्न हुआ है। यह भगवान शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। चूँकि उस वृक्ष में पधहस्ता भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती हैं। बाद में नीलकमल एवं रक्तकमल के बीज भी गोबर से ही उत्पन्न हुए थे। गौओं के मस्तक से उत्पन्न परम पवित्र ‘गोरोचना’ समस्त अभीष्टों की सिद्धि करने वाली तथा परम मंगलदायिनी है। अत्यन्त सुगन्धित गुग्गुल नामक पदार्थ गौओं के मुत्र से ही उत्पन्न हुआ है। गौ का मूत्र कई बिमारियों के दवा के रूप में सेवन किया जाता है। योगाचार्य परम श्रद्धेय बाबा रामदेवजी ने तो स्पष्ट रूप से घोषणा करते हुए कहा है कि दूध के मूल्य के बराबर ही गौमूत्र खरीदा जायेगा। इसलिए पातंजलि योगपीठ, हरिद्वार द्वारा 20 रुपये लिटर गौमूत्र खरीदा जाता है। यह काफी लाभकारी उत्पाद है। गौमूत्र का सेवन कर कई लोग अपने असाध्य रोग से निजात पाये हैं। गुग्गुल सभी देवताओं का आहार है। विशेष रूप से भगवान शंकर का प्रिय आहार है। संसार के सभी मङ्गलपद बीज एवं सुन्दर

से सुन्दर आहार तथा मिष्टान्न आदि सब गौ के दूध से ही बने श्रेष्ठ माने जाते हैं। आज के दिनों में भी, खासकर हिन्दुओं के कोई भी मांगलिक कार्य और अनुष्ठान गाय के गोबर, दूध, घी एवं मूत्र के बिना सम्पन्न नहीं होते हैं। मांगलिक कार्यों में गाय का दही काफी लोकप्रिय है। ऋग्वेद में गाय को अमृत की नाभि और अमरत्व का केन्द्र माना गया है, ये मन्त्र है :-

“माना रुद्राणां दुहित वसूनां स्वसादिव्यानाममृतस्य नाभिः।

प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गामानागामदिति वधिरुता।”

गाय के उत्पादों से बने पदार्थ ही अमृत कहा जाता है। अमृत ही देवताओं को परम तृप्त करने वाला है। गौओं में सभी देवताओं का निवाला होता है। छहों अङ्ग शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और पद, जटा, शिखा आदि कर्मों के साथ सभी वेद गौओं में ही सुप्रतिष्ठित हैं। पञ्चगव्य गाय के गौमूत्र, गौबर, दूध, दही से ही बनता है। वेदों में चर्चा है कि इन पञ्चगव्यों के पान कर लेने से शरीर के भीतर के सभी पापों एवं रोगों का नाश हो जाता है, और मानव का तन और मन दोनों शुद्ध हो जाता है। चिकित्सा विज्ञान की मान्यता है कि जो हम भोजन करते हैं उसमें अन्नआदि पाँच रात्रि तक, दूध सात रात्रि तक, दही बीस रात्री तक और घी एक माह तक शरीर में अपना प्रभाव रखता है। सभी विटामिन सम्मिलित रूप में भी गौ दुग्ध की बराबरी नहीं कर सकते। गाय दरवाजें की शोभा मात्र नहीं, वह श्री सम्पदा है, लक्ष्मी है, धरती की भाँति पूज्या है।

ब्राह्मण, गौ और वाणी इन तीनों में तेज और योज की प्रधानता है।

गौ सदा और सब समय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ प्रदान करनेवाली है। पद्मपुराण में कहा गया है :-

यथा गौरय तथा विदो यथा विप्रस्तथा हरिः।
हरिर्यथा तथा गंगा एते न हावृषा; स्मृतारः।
गावों बन्धुर्मनुस्याणां मनुष्या बान्धवा गवाम्॥

इसलिए भगवान शंकर, भगवान श्री कृष्ण एवं अन्य ऋषि मुनियों ने गौवों के संग ही रहकर परमलोक सिधार गये। गाय, गंगा, गीता और गायत्री ये चारों शब्द हिन्दू संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। पर विडम्बना यह है कि आज हमारी ही धारणा एवं गलतियों और अपनी भूलों के कारण इन चारों की बड़ी दयनीय स्थिति हो गयी है। गंगा प्रदूषित हो रही है, गीता का अध्ययन-अध्यापन समाप्त प्राय हो गया है। आज के चकाचौंध के वातावरण में गायत्री के जप को भुला दिया है और निरीह एवं निर्दोष गाय हमारी असीम अर्थलिप्सा का शिकार बनकर कत्लगाहों एवं कसाई घरों की शोभा बढ़ा रही है। आर्यत्व का, हिन्दुत्व का ऐसा अधोपतन तो उस समय भी नहीं हुआ था जब हम सदियों तक गुलाम थे। आज हिन्दुस्तान में ही कसाई घरों को कानूनी मान्यता दी जाती है। हर शहर में खुलेआम गायों का बध किया जाता है। जबकि, पाकिस्तान जैसा इस्लामिक देश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारी उदार संस्कृति की यात्रा में जो गिरावट

आयी है, जो पतन हुआ है, उसे देखकर शर्म से हमारा सर झुक जाता है। क्या हो गया है इस राष्ट्र को, क्या हो गया है हमारे सोच और चिन्तन को! गायों का वध जिस रूप में आज भारत में हो रहा है, उससे गौवंश के सर्वनाश की तथा राष्ट्र के पतन की भयंकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गाय हमारी कृषि-संस्कृति की आधारशीला रही है। प्राचीन काल से ही ऋषि संस्कृति और कृषि-संस्कृति दोनों की आधारशीला गाय ही रही है। ऋषियों के आश्रम गायों से सुशोभित रहते थे। गोसेवा कर गोदुग्ध से अपनी मेधा को पवित्र कर आश्रमों एवं गुरुकुलों के छात्र गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते थे और अपने चरित्र की धवलता के सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को सर्वभूतहितेरता, के भाव को विकसित करते थे। गौसेवा हमारे पूर्वज ऋषियों एवं भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी देन है। जिस देश में दूध की नदी बहती थी, उस देश में आज दूध के लाले पड़े हैं। हिन्दुस्तान में प्रातः काल होते ही सभी दूध के बर्तन लिये शुद्ध दूध की तलाश में गली-गली मारे फिरते देखे जाते हैं फिर भी शुद्ध दूध शायद ही मयस्सर हो पाता है। दूध का इतना अभाव हो गया है कि शुद्ध दुध के स्थान पर मिलावटी एवं बनावटी (सिन्थेटिक) दूध पीने के लिए हम बाध्य हो रहे हैं। यहाँ तक की नौनीहालों को भी शुद्ध दूध का पान पीना संभव नहीं हो पाता है। अमृत दूध के स्थान पर हम जहर के समान दूध का सेवन कर रहे हैं। आज के दिनों में तो खुलेयाम दुग्ध उत्पादक वर्ग गायों को इन्जेक्सन देकर अधिक-से-अधिक दूध निकालते देखे जाते हैं और अमृत को विष

में परिवर्तित कर दूध उपलब्ध कराते हैं, और हम हिन्दुस्तानी उसे देखकर भी विषपान करते हैं। क्या इसे रोका नहीं जा सकता हैं? मेरा विश्वास है कि आज जिस प्रकार अनाज के मामले में हरित क्रान्ति के नारे देकर भारत स्वावलम्बि हो गया है, भले ही किसान सम्पन्न एवं स्वस्थ नहीं हो पाया है। उसी प्रकार, श्वेत-क्रान्ति का नारा तो दिया गया है, परन्तु दुग्ध-उत्पादन में स्वावलम्बी नहीं हो पाया है। यदि सच्चे अर्थों में श्वेत-क्रान्ति ईमानदारी से लाया जाय तो हम भारत के लोग दूध के मामले में स्वावलम्बी बन सकते हैं एवं शुद्ध दूध की उपलब्धता कर स्वस्थ भारत के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इसके लिए ईमानदारी से सोच को बदलना होगा तथा मेहनत करना होगा। इसके लिए हर भारतवासी को गौपालन, गौ रक्षा एवं गौ संवर्धन पर ध्यान देना होगा। इससे आर्थिक सम्पन्नता भी संभव है। आज गाँवों में देखा जाता है कि जहाँ हर घर में कम से कम एक दूध पशु रखने की परम्परा थी, वह समाप्त हो गया है। उसे फिर से बहाल करना होगा। आज गाँवों में जहाँ अधिक जनसंख्या भारत में निवास करती है। युवा वर्ग अनावश्यक समय बर्बाद करते हैं। धन अर्जन के लिए हानिकारक, पदार्थ बेचकर धन अर्जन करते हैं, वहीं गौ पालन कर दूध रुपी अमृत का उत्पादन कर तथा उसके बने उत्पाद को बेचकर धन अर्जन भी कर सकते हैं तथा अपना और समाज एवं देश को स्वस्थ और भला कर सकते हैं। इसके लिए समाज के लोगों को तथा सरकार को भी आगे आना होगा, सोच बदलना होगा एवं सहयोग करना होगा।

गरीब तो फटेहाल किसान मजदूर कम-से-कम एक दो गौ पालन अवश्य करें। उससे उतना धन अर्जन अवश्य कर सकते हैं जितना एक परिवार के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। इसमें ज्यादा समय भी नहीं लगता। सुबह शाम एक से दो घंटा समय मात्र देना है। शेष समय में अपना अन्य कार्य कर सकते हैं। इससे शुद्ध और पौष्टिक आहार मिल सकता है। विदेशों से रासायनिक दवाओं का आयात कम हो सकती है, उर्जा की बचत हो सकती है तथा विदेशों पर हमारी निर्भरता में कमी आ सकती है। जो लोग इसका प्रयोग कर देखे हैं उसे मालूम है एवं समाज के अन्य लोगों के लिए उदाहरण के पात्र हैं। कम ही संख्या में, परन्तु भारत में ऐसे लोग हैं जिन्होंने इसे सिद्ध कर दिखाया है। इसके लिए धर्म, जाति एवं क्षेत्र की सीमाओं से उपर उठकर सभी धर्म, जाति एवं समाज के लोग इसका पालन करें। गाँव, शहर, क्षेत्र एवं देश की रचना कर सकते हैं। धर्म एवं जाति से हट कर गौ के गुणों एवं उत्पादक के उपयोग को आधार बनाना होगा। आज आतंकवाद और उग्रवादी से उतनी जान माल की हानि नहीं होती है जितनी हानि परोक्ष रूप में गौ पालन के अभाव से हो रहा है। जिस प्रकार बाबा रामदेवजी के त्याग एवं आयुर्वेद को सभी जाति, धर्म एवं देश के लोग अपना कर लाभों को स्वयं परख रहे हैं और उसमें लोगों का विश्वास बढ़ा है उसी प्रकार गौ के पालन कर उसके गुणों के लाभों को स्वयं परखकर देखा जा सकता है तथा सभी जाति, धर्म, क्षेत्र एवं देश के लोग इसका लाभ उठा सकते हैं। इससे समाज एवं

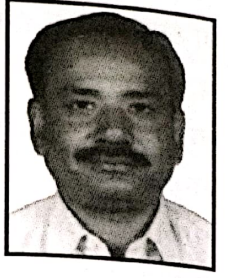
विश्व खुसहाल हो सकता है तथा उग्रवाद एवं आतंकवाद पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। आज ऐसा देखा जा रहा है, उसके प्रमाण मिल रहे हैं कि उग्रवादी एवं आतंकवादी कोई अपने स्वभाव से नहीं बनते, बल्कि उन्हें धन का लोभ देकर खरीदा जा रहा है। इससे न तो उनका लाभ होता है और न ही किसी समाज और देश का। सभी आतंक फैलाने वाले लोग इस बात को समझते हैं, परन्तु कुछ मानसिकता का शिकार होकर धन के लोभ में हमारे युवा पीढ़ी, अज्ञानतावश इसमें लिप्त हैं, क्योंकि यदि इसे सत्य और सही मानते तो छुपकर ऐसे कृत्य नहीं करते। जो सत्य और सही होता है उसे खुलेआम किया जाता है, छुपकर नहीं।

यदि हम चाहते हैं कि हमारी भारत भू अन्नपूर्णा बनी रहे, यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी, बुद्धिमान, नेक इंसान और प्राणपान बनें रहें तो हमें गायों को अच्छी तरह से घर-घर में पालना होगा, उनकी रक्षा करनी होगी। हम अहिंसक तरीके से सरकार पर और अपने नेताओं पर दबाव डालें कि गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगे। यदि आवश्यकता हो तो संविधान में भी संशोधन लाकर हम इसे अनुचित, पापमय, गोवंश विनाशी गोहत्या के कुकर्म को रोको, ध्यान रहे अमृत के केन्द्र और मधु प्रदान करने वाली गाय की हत्या अपनी संस्कृति, आर्यत्व एवं अस्तित्व की हत्या है।



मिथिला का त्योहार

- श्री सुरेन्द्र लाल दास,
सहायक लेखा अधिकारी



मिथिला एवं मैथिल समाज का अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। मिथिला में पूरे वर्ष भर विभिन्न प्रकार के त्योहार मनाये जाते हैं। मिथिला में मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहार में हैं:- कोजागरा, पचाकि एवं भतराशि।

कोजागरा:- मिथिला में कोजागरा आश्विन महीना के पुर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। जिस लड़का की शादी अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) माह से आषाढ़ (जून जुलाई) माह के बीच होती है उस लड़के का 'चुमाओन' इस तिथि को करते हुए 'कोजागरा' मनाया जाता है। इस दिन दुल्हन के घर से दुल्हा के घर अनेक प्रकार के सामान भेजे जाते हैं जिसमें दुल्हा के लिए नवीन वस्त्राभूषण तथा खेल, मनोरंजन-सामग्री के साथ मखाना एवं लड्डू प्रमुख है। 'कोजागरा' में दुल्हा को 'चुमाओन' हेतु बाँस की कच्ची से विशेष रूप से निर्मित, जिसे 'डाला' कहा जाता है, दुल्हन के घर से भेजा जाता है। 'कोजागरा' के दिन दुल्हा के घर में उल्लासमय वातावरण होता है। उस दिन गाँव के घर-घर में निमंत्रण भेजा जाता है जिसे स्थानीय भाषा में 'हँकार' कहा जाता है। पूर्णिमा की शाम को महिलायें कुलदेवता की विनती गाती हैं एवं उसके उपरान्त दुल्हा के 'चुमाओन' के पश्चात दुल्हा कुलदेवता को प्रणाम करते हैं एवं अन्य श्रेष्ठजनों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। उस रात 'पचीसी' खेलने की परम्परा है। इसमें किसी प्रकार के दान-पुण्य की बात नहीं होती है। यह शुद्ध रूप से रीति-रिवाज से संबंधित प्रतीत होता है।

पचाकि:- पचाकि नवविवाहिता बधू द्वारा पूजा जाने वाला त्योहार है। यह त्योहार ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाया जाता है। यह मूलतः प्रकृति की पूजा है जिसमें जल, आकाश, अग्नि, वायु एवं पृथ्वी शामिल है। ऐसी मान्यता है कि नवविवाहिता द्वारा इस त्योहार को मनाने से नव दाम्पत्य जीवन सुःखमय होता है। इसमें गौरीपूजन का विशेष महत्व है। इस पूजा का आरंभ करने से पहले चावल के आँटे से एक विशेष प्रकार का घरौंदा का निर्माण किया जाता है, जिसे 'अरिपन' कहा जाता है। गाँव-गाँव की रीति, परम्परा, कुल देवता आदि की भिन्नता के कारण इस त्योहार को मनाने में कुछ भिन्नता भी पाई जाती है। इसमें मिट्टी के बर्तन को 'रत्न-उत्सर्ग' एवं बाँस से बने बर्तन को 'वंश-उत्सर्ग' कहते हुए उत्सर्ग किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से धन एवं वंश की वृद्धि होती है।

भतराशि:- 'भतराशि' का त्योहार नवविवाहिता कन्या द्वारा माघ संक्रान्ति या मकर संक्रान्ति के दिन मनाया जाता है। 'भतराशि' शब्द संस्कृत के दो शब्द 'भर्तृ' एवं 'राशि' शब्द से बना है। भर्तृ का अर्थ पति अथवा स्वामी से है जबकि राशि शब्द पुंज या समग्रता का द्योतक है। इस पूजन को दो प्रकार से मनाया जाता है। 'सांझ' एवं 'तुषारी'। भतराशि त्योहार का समापन जिसे स्थानीय भाषा में 'निस्तार' कहा जाता है, पंचम वर्ष में किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह त्योहार नवविवाहिता द्वारा अपने पति के स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं मंगलकामना के लिए किया जाता है।



गाँव की जिन्दगी

- श्री उमेश चौधरी,

लेखा अधिकारी



दूटी-फूटी धूलभरी सड़क। कहीं बड़ा गड़ड़ा तो कहीं छोटा। उसे सड़क नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन कहना पड़ता है, क्योंकि उसी पर लोग तथा गाड़ियाँ चलती हैं। यह है गाँव की सड़क। गाँव के बच्चे भी उसी सड़क पर खेलकर अपना समय बिताते हैं। उनके नंगे बदन पर धूल की अनेक परतें चढ़ी होती है। गर्मी के मौसम में जब धूप निकल आता है तथा सड़क पर खेलना संभव नहीं होता है तो वे नदी में डुबकी लगाने चले जाते हैं। बरसात के मौसम में सड़क पर तथा गड़ढ़ों में पानी भर जाता है तो वे बेमौसम होली का आनंद लेते हैं। गाँव के लोग अक्सर किसान हुआ करते हैं। उनकी जीविका का साधन मूलरूप से खेती होती है। वे दिनभर खेतों में काम करते हैं तथा शाम में घर लौटते हैं। थके माँदे रहने के कारण रात में उन्हें गहरी नींद आती है। सुबह उठने पर पुनः वही दिनचर्या शुरू हो जाती है। उनके पास बच्चों पर ध्यान रखने के लिए न तो समय है और न ही साधन। बच्चे जब कुछ बड़े हो जाते हैं तो वे भी माता-पिता के काम में उनका हाथ बँटाते, उनका सहयोग करते-करते वयस्क हो जाते हैं और परिवार की सारी जिम्मेवारी उन पर आ जाती है।

गाँव के लोग खेती के साथ-साथ पशुपालन का कार्य भी करते हैं। पशुपालन से खेती के कार्य में मदद तो मिलती ही है, साथ ही खाने के लिए उन्हें दूध भी आसानी से मिल जाता है। गाँव के लोग ग्रामीण जिन्दगी जीते हैं तथा शहर के माहौल से दूर रहने के कारण उनमें आपसी भाई-चारा तथा अपनत्व की भावना ज्यादा रहती है। गाँव के सभी लोग एक सामाजिक रिश्ता से बँधे होते हैं। उनमें आपसी प्रेम तथा सौहार्द्रता रहती है। वे एक दूसरे के सुख-दुख में भाग लेते हैं।

गाँव में आवश्यक सुविधाओं की कमी रहती है। लोगों के पास सुख सुविधाओं की कमी के साथ-साथ स्वास्थ्य, शिक्षा, सफाई तथा मनोरंजन के साधन भी नहीं रहते हैं। गाँव में अभी भी अच्छे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, नहीं हैं। लोगों को अच्छी शिक्षा तथा चिकित्सा के लिए शहर जाना पड़ता है। लेकिन, गाँव के सभी लोगों के लिए यह संभव नहीं है। गाँव में पक्की सड़क, बिजली तथा अन्य नागरिक सुविधाओं का घोर अभाव है। इन सुविधाओं की कमी के कारण ही गाँव में पढ़े लिखे लोग कम पाये जाते हैं। साथ ही जब किसी सरकारी कर्मचारी की पदस्थापना किसी गाँव में होती है, तो उनका रुह काँपने लगता है तथा वे किसी शहरी क्षेत्र में स्थानान्तरण हेतु पैरवी-पैगाम शुरू कर देते हैं। अच्छी शिक्षा की व्यवस्था नहीं रहने से गाँव की प्रतिभा को आगे बढ़ने का मौका नहीं मिल पाता है। हालाँकि गाँव में प्रतिभा की कमी नहीं रहती है। साधन सम्पन्न लोग तो शहर की ओर पलायन कर जाते हैं, लेकिन साधन विहीन तथा गरीब लोग जिन्दगी को अभिशाप समझ कर गाँव में ही रह जाते हैं। गाँव में खेल कूद के साधनों तथा अच्छे प्रशिक्षकों की भी कमी रहती है, जिससे खेलकूद में भी गाँव के बच्चे अच्छे नहीं कर पाते हैं।

आज जरूरत है गाँव के जीवन स्तर को सुधारने की, नागरिक सुविधाओं को बहाल करने की, पक्की सड़क तथा बिजली की समुचित व्यवस्था की, अच्छे स्कूल, कॉलेज तथा अस्पताल के स्थापना की। गाँव के समुचित विकास से ही देश का विकास संभव है।



खुद को तलाशती हिन्दी

- सुश्री प्रीती चन्द्रा,
पिता-श्री मुकुंदी पासवान,
व०लेखाकार



हिन्दी, पहचाना मुझे! थोड़ा समय लगेगा, पर मैं याद आ जाऊँगी।

अरे, हाँ! हाँ!! वही हिन्दी जो मैं बचपन में बोला करता था। याद आया! याद आया! आजकल तुमसे मुलाकात कहाँ होती है? जहाँ देखो अंग्रेजी ही अंग्रेजी का बोल-बाला है। वैसे तुम बताओ, यहाँ कैसे?

अपनी आँखों में आँसुओं का समंदर लिए बेचारी हिन्दी बोली, बस खुद की तलाश में चली आई हूँ, और देख रही हूँ कि लोग किस तरह मेरा तिरस्कार कर रहे हैं।

आज मेरी हालत उस माँ सी है जिसने अपने बेटे (अर्थात् भारत का प्रत्येक मनुष्य) को बचपन से अपने आँचल की छाँव दी। खुद का उत्थान करने के बजाय अपने बच्चों को फूलों का सेज दिया ताकि वे अपनी बात दूसरों से कर सकें। यहाँ तक कि जब उन बच्चों को भूख लगती तो वह गर्व से हिन्दी में कहते “माँ, भूख लगी है”, लेकिन जैसे ही मेरे बच्चे बड़े हुए अंग्रेजी रूपी राक्षस ने मेरे बच्चों को एक-एक कर अपने शिकंजे में लेना शुरू किया। कभी ये बता कर कि अंग्रेजी के बिना तुम्हारी उन्नति संभव नहीं, तो कभी ये कहकर कि अंग्रेजी आज की जरूरत है।

और आज (सुबकती हुई हिन्दी) नौबत यह है कि मेरे बच्चों ने मुझे अपने आप से

अलग कर दिया या यूँ कहें कि उन्हें अब मेरी जरूरत नहीं।

आज जब कभी अचानक इस अंग्रेजी साम्राज्य में मेरे बच्चे मेरा सामना करते हैं तो बड़ी मुश्किल से, अपने मानस पटल पर जोड़ देने के बाद ही मुझे पहचान पाते हैं। और तो और इन क्षणों में भी वह मेरा उपहास उड़ाने में पीछे नहीं रहते।

पर, जैसा कि मैंने कहा “मैं माँ हूँ” और ये सब “मेरे बच्चे”। दिल पर पत्थर रख कर सब सुनती हूँ और मुख से आह तक नहीं निकलने देती। हाँ, कभी-कभी ये जरूर सोचती हूँ कि काश थोड़ी मेहनत इनपे ना कर मैं अपने उत्थान के लिए करती तो कोई शक नहीं कि मेरा साम्राज्य आज अंग्रेजी से ज्यादा और बेहतर होता। पर कोई बात नहीं, अब भी मेरे कुछ सपूत हैं जो मेरे लिए लड़ रहे हैं। अपना सब कुछ मुझ पर न्यौछावर कर रहे हैं और सबसे बड़ी बात मुझ पर फख करते हैं। मुझे गर्व है उन सपूतों पर जो मुझे जीने का हौसला देते हैं और ये आभास कराते हैं कि मेरी हस्ती कभी मिट नहीं सकती।



चिपकने वाली मूढ़ी (हास्य-व्यंग्य)

- श्री श्रीराम पाण्डेय,
सहायक लेखा अधिकारी



जिस घटना या आपबीती का वर्णन मैं करने जा रहा हूँ, उसे लिखूँ या नहीं, समझ में नहीं आ रहा। अगर लिखता हूँ तो पाठकों के बीच मेरी कितनी जगहँसाई होगी, कल्पनामात्र से ही पीड़ा होने लगती है। परन्तु, नहीं लिखने पर भी मुझे चैन नहीं आयेगा। आला दर्जे का बेशर्म जो ठहरा। जो होगा, देखा जायेगा। तो फिर चलिये, बकता हूँ।

एक दिन मैं पत्नी और बच्चों के साथ तारामण्डल गया। बच्चे बहुत चहक रहे थे कि सबसे पहले शो देखने को मिलेगा और वहाँ से निकलने के बाद आइसक्रीम, केक पेस्ट्री आदि खायेंगे। खुश तो मैं भी था कि कम-से-कम एक डेढ़ घंटा वातानुकूलित हॉल में सोने का मौका मिलेगा और उतनी देर तक ही सही, पत्नी की फरमाइश और खटपट से भी छुटकारा मिलेगा। बस दुखी थी तो एकमात्र पत्नी। लगभग कुढ़ सी रही थी। परन्तु, उतने लोगों के सामने कहती भी तो क्या। शो कब शुरू हुआ, कब खत्म, मुझे कुछ पता नहीं चला। बच्चों का हो-हल्ला सुनकर आँख मलते हुए उचककर खड़ा हुआ। अति संतोष का अनुभव कर रहा था कि कम-से-कम उतना समय तो मेरे लिये सार्थक रहा। बाहर निकलने के बाद बच्चों की उदरीय फरमाइश पूरी करने लगा। अचानक छोट बेटा माँग करने लगा कि उसे चिपकने वाली मूढ़ी चाहिये। मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ा कि आखिर यह भारत का भावी कर्णधार माँग क्या रहा है? उससे

पूछ कि कहाँ है चिपकने वाली मूढ़ी, तो वह बिना कुछ बताये जोर-जोर से रोने लगा। पत्नी से पूछा, “तुम समझ रही हो कि यह नालायक माँग क्या रहा है?” वह कुछ भी बताने में असमर्थ थी और फिर बात यही से बिगड़ने लगी। बेटा का रोना देखकर मुझे काफी क्रोध आने लगा। उससे भी ज्यादा क्रोध पत्नी पर आ रहा था, “आखिर तु कौसी माँ हो कि अपने बच्चे की बात को समझ नहीं पा रही हो।”

“क्यों! बच्चे की बात समझने-बूझने का ठेका माँ को ही मिला हुआ है क्या? आप भी तो इसके बाप हैं। स्वयं क्यों नहीं समझ लेते?” “मेरा दिमाग अधिक खराब नहीं करो। उठाओ इसे गोद में और घर चलो। सजने सँवरने से फुर्सत मिलेगी, तब न बच्चों को समझ पाओगी।” “सजने सँवरने के लिये आप घर में रखे ही क्या हैं? रोड का भिखारी भी आपसे अधिक अपनी बीबी के लिये लाता होगा।” “बहस मत करो मुझसे, उठाओ इसे गोद में।” “मैं नहीं उठाऊँगी। आपको उठाना है तो उठाइये।” इसके बाद क्या नहीं हुआ। मैं लाख बेशर्म सही, पर उस दिन की बात इससे ज्यादा अब नहीं बताऊँगा। बस इसीसे अंदाजा लगाइये कि हमारे आस-पास सौ-दो-सौ लोग जमा हो गये। घर का महाभारत रोड की शोभा बढ़ाने लगा। फिर जैसे-तैसे हमें घर पहुँचाया गया। उस रात घर में खाना नहीं बना। उसी रात मैंने तय कर लिया कि अब तलाक लेकर ही रहूँगा। आखिर बर्दाश्त की भी हद होती है। इस

औरत के कारण लोगों के सामने जो मेरा अपमान हुआ, उसका खामियाजा इसे भुगतना पड़ेगा।

दूसरे दिन मैंने अपने एक वकील मित्र को फोन कर बुलाया। मित्र तलाक वाली बात सुनकर अन्दर ही अन्दर अति प्रसन्न हुआ होगा कि चलो इस कंजूस के थैले से भी कुछ खींचने का मौका मिला। परन्तु, ऊपरी मन से मुझे समझाने का झूठा प्रयास किया कि मैं ऐसा नहीं करूँ। मैंने जब कहा कि मुझे तलाक लेना ही है तो तपाक से तलाक लेने का तरीका बताने लगा। उसने यह भी बताया कि तलाक होने में कम-से-कम छः महीना लग जायेगा। मैं इन्तजार करने लगा। उस दरम्यान मेरे घर की क्या दशा हो रही होगी, पाठकवृन्द अनुमान लगा सकते हैं। मेरा खाना-नाश्ता प्रायः घर के बाहर ही होने लगा।

भावावेश में आकर तलाक लेने का मन तो बना लिया था, परन्तु आगे की बात सोचने पर आटे-दाल का भाव मालूम होने लगा। तलाक के बाद यदि बच्चों को मुझे ही रखना पड़ा तो उनका लालन पालन कैसे करूँगा। जरा सी भी खाने में कुछ गड़बड़ी होने पर पत्नी को झिड़की लगाना नहीं भूलता था। लेकिन, मेरा बनाया खाना जब मैं ही नहीं खा पाउँगा तो फिर बच्चे कैसे खायेंगे? मुझे याद आने लगी कि एक बार मेरे एक मित्र ने मेरी बनाई रोटी को खाते-खाते पूछा था, “रे पुनीत! तुम्हारी बनाई रोटी कुत्ता तो खा लेता है न?” उस दिन से मैंने रोटी नहीं बनाने की कसम खा ली थी।

कुछ दिनों बाद मेरा वही मित्र मेरे घर आया जिसने मेरी बनाई रोटी को कुत्ता के लिये भी बेकार बताया था। उसे मालूम था कि मेरी पत्नी के साथ अनबन चल रही है। वह साथ में मूढ़ी का लड्डू भी लेता आया था। उसे डर था कि कहीं उसे मैं

फिर से रोटी बनाकर खिला न दूँ। मेरी भीष्म प्रतिज्ञा से वह शायद अवगत नहीं था। मैं और वह उसके लड्डू खाने लगे। उसी समय मेरा वह पुत्र जिसके कारण मेरे घर में भूचाल आ गया था, दौड़ा आया, “पापा! चिपकने वाली मूढ़ी मुझे भी चाहिये।”

अब बात समझ में आई। मन तो किया कि अपने बकलोलपन पर अपना माथा नोच लूँ। आखिर इतनी-सी बात मेरे पल्ले क्यों नहीं पड़ी। मित्र ने हँसते-हँसते मेरी पत्नी को बुलाकर सारी बात बतायी तो वह भी जोर-जोर से हँसने लगी। वैसे अब हँसने का मन मेरा भी कर रहा था। फिर भी झूठा क्रोध दिखाते हुए पत्नी से बोला, “क्यों! तुम्हें इस बात का जरा भी पछतावा नहीं है? हमारा तलाक भी तो हो सकता था।”

“आप मुझसे तलाक ले ही नहीं सकते। मैं जानती हूँ। मुझसे तलाक लेने के बाद आपके प्यारे डोगी का क्या होता। बेचारा तो भूखा मर जाता न।” अब इस बात पर मुझे क्रोध के बजाय हँसी आ रही थी। उसी हँसी ठिठेली में पत्नी को नसीहत देने लगा कि इतनी छोटी सी बात के लिये हमारा तलाक होते-होते रह गया। परन्तु, वह पहले से भी अधिक दृढ़ता के साथ बोली, “छः महीने क्या, छः जन्म में भी तलाक लेकर दिखा दीजिये तो आपको मान जाउँगी। परन्तु, एक प्रण आपको करना होगा कि अब उस मनहूस तारामण्डल में मुझे जाने के लिये नहीं कहियेगा। नहीं तो, मैं तलाक की अर्जी कोर्ट में दायर कर दूँगी। आपका वह वकील मित्र आखिर किस दिन काम.....।”

“अरे रुको! पहले उस वकील के बच्चे को एक फोन तो कर लूँ।”





1. राहुल अपने दोस्त आशु से :- अरे यार, यह मोबाइल तो मुझे कंगाल कर देगा।

आशु :- क्यों ?

राहुल :- बार-बार लिखता है बैट्री लो, अब तक 54 बैटरियाँ ले चुका हूँ।

2. दीपक अध्यापक से:- सर आपने मेरी कॉपी में घसीट कर क्या लिखा है ?

अध्यापक :- क्या तुम इतना भी नहीं पढ़ सकते ? मैंने लिखा है साफ लिखो।

3. जज :- तुमने अपनी पत्नी की हत्या तीर-कमान से क्यों की ?

मुजरिम:- हुजूर, मैं एक शांतिप्रिय आदमी हूँ, इसलिए बंदूक चला कर अपने बच्चों की नींद खराब करना नहीं चाहता था।

4. एक कम उम्र की लड़की की शादी एक अमीर परन्तु बुजुर्ग व्यक्ति से करा दी जाती है।

कुछ पत्रकार नई नवेली दुल्हन का इंटरव्यू लेने जाते हैं और पूछते हैं कि आपने इनमें क्या देखा जो शादी के लिए तैयार हो गई ?

बीबी ने कहा:- एक तो इनकी इनकम और दूसरी इनकी बची हुई उम्र।

5. शिक्षक:- हम सबको पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए। तो बताओ, तुम सब ने पेड़ों को बचाने के लिए आज तक क्या किया है ?

एक छात्र:- जी सर, एक बार मैंने एक कठफोड़वा को ढेला मारा था।

6. मरीज:- डॉक्टर साहब! पूरे बदन में जहाँ भी उँगली रखता हूँ, भयंकर दर्द होता है।

डॉक्टर:- ओह! पूरे बदन का एक्स-रे कराना पड़ेगा।

डॉक्टर:- (एक्सरे रिपोर्ट देखकर) तुम्हारी उँगली में फ्रैक्चर है।

7. शिक्षक:- यदि गधे को पानी और कोल्ड ड्रिंक दिया जाय तो गधा क्या पीएगा ?

छात्र :-पानी

शिक्षक:- (खुश होकर) बिल्कुल सही। बताओ क्यों ?

छात्र:- जी, क्यों कि गधा तो गधा ही होता है।

8. शिक्षक:- कालिदास का एक भाई था जो जूते बनाता था। बताओ वह कौन था ?

छात्र:- आदिदास।

9. बेटा:- पापा, आप मुझे ढेल खरीद दीजिए।

पापा:- नहीं बेटे, तुम ढेल बजाकर मुझे परेशान करोगे।

बेटा:- नहीं पापा! जब आप सो जाएंगे तभी बजाऊँगा।

10. किराएदार मकान मालिक से :- एक दिन लोग याद करेंगे कि इस घर में एक महान चित्रकार रहता था।

मकान मालिक:- अगर आज किराया नहीं दिया तो वह दिन आज ही आ जाएगा।



एक था जिंगल

- श्री रवि रंजन,

लेखा अधिकारी



सर्दियों की एक सुबह। अभी-अभी सैर से लौटा हूँ। कम्पाउण्ड में कुछ अतिरिक्त चहल पहल जान पड़ती है। दोनों बच्चे भाग दौड़ कर रहे हैं, मानों कुछ खास इंतजाम करने में व्यस्त हों। अचानक इस सारी सरगर्मी की वजह, उस कूट के डिब्बे पर मेरी नजर पड़ी, डिब्बे में रुई का एक गोला और उसमें से झांकती दो भूरी आँखें। बगल में खाने-पीने का पक्का इंतजाम। रोटी, दूध, बिस्कुट और न जाने क्या-क्या। डपट कर बेटे से पूछा, यह क्या तमाशा है? कहाँ से उठा लाए? “पापा, यह जिंगल है। देखिए न, जिंगल! बेल्स की तरह कूँ कूँ करता है।” बेटी ने चहक कर नर्सरी में अर्जित ज्ञान का प्रदर्शन किया। गर्दन उचका कर डिब्बे में देखा। एकदम साधारण-सा श्वान-शावक। रंग-रूप कुछ खास नहीं, पर उसकी भूरी आँखों में सम्मोहन था। मुझे भी कुछ-कुछ प्यारा लगा। बच्चों के उत्साह पर पानी फेरना मुझे ठीक न लगा। चुपचाप ऊपर अपने कमरे में चला आया।

यह लगभग साढ़े चार वर्ष पूर्व 24 दिसम्बर 2004 की सुबह थी। कुछ दिनों तक जिंगल अपने डिब्बे में दुबका कूँ कूँ करता रहा, शायद कड़ाके की सर्दी एवं नई जगह के कारण। बच्चे उसकी सुख-सुविधा का सामान जुटाते रहते थे। श्रीमति जी ने एक पुराना स्वेटर डिब्बे में बिछा दिया था

और ओढ़ने की भी व्यवस्था कर दी थी। जल्द ही वह हमसे हिल-मिल गया।

शुरुआती दिनों में उसका किसी आगन्तुक पर पतली सुरीली आवाज में भूँकना हमारे लिए एक खेल ही था। हम उसे हर किसी पर भौंकने के लिए उकसाते, पर शीघ्र ही उसके भौंकने में एक आक्रामकता शामिल होने लगी। सबसे पहले उसने सुबह-सुबह फूल तोड़ने वालों को हड़काना शुरु किया। वह नन्हा-सा पिल्ला इस प्रकार झपटता कि देखने वालों को हँसी आ जाती थी, पर भुक्तभोगियों के मन में कुछ न कुछ भय जरूर होता होगा। कुत्ता छोटा हो या बड़ा, अगर दाँत गड़ा बैठा तो? धीरे-धीरे मुफ्त के फूल से पुण्य अर्जन करने वालों (वालियों) की संख्या घटने लगी। अब जिंगल की नजर अखबार वाले “ददन” पर पड़ी, जो सुबह-सुबह मेरे घर में कुछ फेंक जाता था। जिंगल के रहते तुम्हारी इतनी हिम्मत? जिंगल ददन पर झपट पड़ता। वह बड़ी मुश्किल से साईकिल को ढाल बनाकर खुद को बचाता, साइकिल सहित कभी दाएँ कभी बाँए घूमता रहता और जोर-जोर से मदद की गुहार लगाता। हम उसकी पुकार सुनकर दौड़ते तथा जिंगल को डाट-फटकार कर अन्दर ले आते। जिंगल कम्पाउण्ड से बाहर न जा सके, इसके लिए हमने अनेक जतन किए। गेट के बीच की खाली जगह

ईंटों से बन्द करा दी गई। पर जिंगल चहारदीवारी के पास खड़ी मोटर साईकिल पर चढ़कर बाहर कूद जाता। हमने दीवार के पास से मोटर साईकिल हटा दी, तब भी वह कोई न कोई जुगत लगा कर बाउंड्री-वॉल पर चढ़ जाता और फाँद जाता। हर सुबह हमें जिंगल को डाँट-फटकार कर अन्दर लाना पड़ता। परेशान होकर हमने बाउंड्री की दीवार पर तार की कामचलाउ जाली लगवा दी, पर हमारे हर तरकीब की काट उस नन्हे से पिल्ले के दिमाग में थी। अब वह छत पर जाकर ददन का इंतजार करता, और उसे देखते ही चुपके से पड़ोसी की सीढ़ियों से नीचे उतर कर चौकन्ना रहता। ज्यों ही ददन अखबार फेंकता, जिंगल भौंकते हुए झपट पड़ता। तात्पर्य यह कि बिना हमारे हस्तक्षेप के ददन को मुक्ति नहीं मिलती थी।

जिंगल को अपने घर लाने की पहली वर्षगाँठ पर मेरी पत्नी ने लाल रंग का एक सुन्दर सा पट्टा उसके गले में पहनाया, जिसमें छोटे-छोटे घुँघरू लगे थे। आदत के अनुरूप अभी भी जिंगल बाहर घूमने का इंतजाम कर ही लेता था। तीसरे दिन वह पट्टा गायब था। जाहिर है, किसी ने दुलार पुचकार कर उसके गले से पट्टा खोल लिया होगा। इस घटना से जिंगल को “प्यार की ओट में विश्वासघात” करने वालों का परिचय मिला होगा। इसके बाद उसने हमारे अतिरिक्त किसी भी पड़ोसी, रिश्तेदार या परिचित व्यक्ति के प्यार-पुचकार पर कभी भरोसा नहीं किया। जब हम सपरिवार कुछ दिनों के लिए बाहर जाते, जिंगल को खाना पानी देने की जिम्मेदारी निचले तल्ले पर रहने वाले पड़ोसी की होती

थी। जिंगल इस परिवार के सभी सदस्यों से पहले दिन से ही परिचित था, इनका दिया खाना भी स्वीकार करता था पर इनमें से कोई ऊपर के तल्ले पर आ जाए तो भौंकता जरूर था। हमारी अनुपस्थिति में कोई ऊपर आ जाए तो उसपर जिंगल का हमला निश्चित था, चाहे वह घनिष्ठ परिचित हों या नजदीकी रिश्तेदार। आश्चर्य यह था कि ऐसे लोगों पर जिंगल सिर्फ भौंकता-झपटता था पर काटता नहीं था। अपने व्यवहार से उसने सभी को यह स्पष्ट कर दिया था कि उसकी वफादारी है सिर्फ हम चार (मैं, पत्नी, पुत्र एवं पुत्री) के लिए।

पट्टा चोरी की घटना के कुछ ही दिनों बाद की बात है, जिंगल अहाते में खुला घूम रहा था। सहसा उसकी आक्रामक भौंक सुनकर मैंने नीचे झाँका। देखा, दो दुष्ट लड़के एक लम्बी छड़ी गेट की सलाखों से अंदर डाल कर जिंगल को मार रहे हैं, और जब जिंगल चोट से बचने के लिए दूर हटता, तो उस समय का लाभ उठा लड़के सलाखों में बंधी जिंगल की चेन खोल रहे हैं। मैं उन्हें डाँटते हुए जब तक नीचे उतरता, वे चेन खोल कर भाग चुके थे। तभी देखता हूँ, जिंगल ने बाउंड्री पर लगी काम चालऊ तार की जाली में से रास्ता बना लिया है, और बाहर फांदकर लड़कों के भागने की दिशा में दौड़ गया है। वे भाग चुके थे, जिंगल वापस आ गया था। यहीं से जिंगल के जीवन में “वीर गाथा काल” की शुरुआत होती है। अगले ही दिन खबर मिली, जिंगल ने उनमें से एक लड़के को काट लिया है। कुछ दिनों बाद जिंगल कहीं से लंगड़ाता हुआ लौटा। देखा, उसकी कमर

और टाँगों में सूजन थी। साफ पता चलता था, उसे लाठी से पीटा गया है। दिल रो उठा! सुबह हुई। जिंगल दर्द से बेहाल था। मैं उसे दवा देकर बाहर निकल गया ताकि पता कर सकूँ कि यह किसकी करतूत है। अबतक जिंगल कुछ मशहूर हो चला था। उसके साथ मारपीट की घटना चर्चा में थी। पता चला यह कुकृत्य उन लड़कों के परिवार के वयस्क सदस्यों का था। पूरे परिवार की आपराधिक स्वभाव और इतिहास था। उन्होंने घेर कर लाठी से जिंगल को पीटा पर वह चोट खा कर भी भाग आया। निश्चय ही उसे धोखे में रखकर यह किया गया होगा, अन्यथा चुनौती देकर जिंगल को मारना आसान न था।

आठ-दस दिनों के बाद जिंगल फिर कम्पाउण्ड से बाहर निकल गया। जिंगल के साथ-साथ यह खबर भी आई कि 'पीटने वाले युवक को जिंगल ने उसके घर में घुसकर बुरी तरह काटा है। एक डेढ़ घंटे में चार पाँच लोगों का समूह जिंगल की शिकायत करने आ पहुँचा। मैंने उन्हें दो टूक जवाब दिया, आपने समूह बनाकर उसे पीटा, वह तो आपकी शिकायत करने कहीं नहीं गया। आपलोग क्यों आए हैं? उसे भी हक है, अत्याचारियों को अपने तरीके से सबक सिखाने का। बात बढ़ती गई और यहाँ तक पहुँची कि जिंगल पागल है, इसे मार दिया जाए। मैंने भी गुस्से में कहा, इसे अभी खोल देता हूँ। आपलोग हिसाब चुका लें और मार सकें तो मार दें। ऊँची आवाजें तत्काल मद्धिम पड़ गईं। मिनटों में वे लोग भुनभुनाते हुए वापस लौट गए। ऐसा था जिंगल का खौफ।

कुछ सामान खरीदते हुए दफ्तर से

लौटा हूँ। जिंगल कम्पाउण्ड के भीतर बंद है। गेट के बाहर एक बिल्कुल काला, मरियल सा पिल्ला खड़ा है। मैंने झोले में से दो विस्कुट और कुछ सोयाबीन बड़ियाँ उसे दी। वह झटपट खाने लगा। आशा के विपरीत जिंगल ने इस पिल्ले पर क्रोध नहीं किया, उल्टे स्नेहपूर्ण नजरों से देखता और दुम हिलाता रहा। यह जिंगल का नया (और एक मात्र) मित्र था। कुछ ही दिनों में अच्छा खाना पाकर कालू का कद निकल आया। दिन भर जिंगल और कालू आपस में उठा पटक करते रहते। मैंने देखा, जिंगल अपने लिए दी गई रोटियों में से कुछ छुपा कर रखता है। कालू ज्योंही आता जिंगल दौड़ कर रोटियाँ उसके सामने डाल देता। मैंने चैन की साँस ली। चलो, “रोटी के लिए कुत्तों की तरह झगड़ने” वाला मुहावरा कम-से-कम कुत्तों पर तो लागू नहीं हो रहा। मैं रोटियाँ तोड़-तोड़ कर, ऊपर उछालता, जिन्हें जिंगल हवा में ही लपक लेता था। अवज्ञा के भाव से रोटी फेंक देने पर जिंगल उसे देखता तक नहीं था। फेंकी गई रोटी खिलाने के लिए जिंगल को दुलारना पड़ता था— “जिंगल खा लो, जिंगल खा लो।” एक दिन मैंने इसी तरीके से कालू को भी रोटी उछाल कर देने की कोशिश की, उस दिन जिंगल का गुस्सा देखने लायक था। उसने कालू को खूब सताया। पटक-पटक कर (काटा नहीं) बिना रोटी खाए ही भगा दिया। मैं समझ गया, जिंगल रोटी बाँट सकता है, प्यार नहीं। उसके बाद यह तरीका मैंने कभी नहीं दुहराया। इस बीच भी जिंगल और उसके दुश्मनों के बीच घात-प्रतिघात जारी था। जिंगल ने उसी परिवार के चार सदस्यों को

और काटा तथा उसी एक ब्यक्ति को तीन बार काटा। इसके अतिरिक्त जिंगल ने जिसे भी काटा वे स्मैकियर, चोर, उचक्के निकले। उनके प्रति समाज की सहानुभूति न थी। आखिर वह इतना सटीक चुनाव कैसे कर लेता था? एक दिन कालू एकदम से गायब हो गया। उसे आसमान खा गया या धरती निगल गई, पता न चला। अब जिंगल बिल्कुल अकेला था। दुनिया में हमारे सिवा उसका कोई न था। तीसरी बार जब उसने अपने पुराने दुश्मन को काटा तब उन्हें यह बात समझ में आ गई कि इस छापामार शातिर हमलावर से पार पाना उनके वश का नहीं। वे पुनः हमारे घर आए, घायल युवक को दिखाया और कुछ उपाय करने की गुजारिश की। घायल का हाल देख मेरा भी मन द्रवित हो उठा। जिंगल ने बड़े वीभत्स तरीके से चीरफाड़ की थी। अगले ही दिन से जिंगल को पूरे दिन मोटी जंजीर में बाँध कर रखा जाने लगा। उसे सिर्फ देर रात से सुबह तक आजादी मिलती। जिंगल ने आदमियों का तीन वर्ग निर्धारित किया था। पहले वर्ग में सिर्फ हम पति पत्नी और दोनों बच्चे थे। हमारे अतिरिक्त अन्य कोई भी हो, उसका जिंगल से कितना भी पुराना परिचय हो, हमारा साथ लिए बिना किसी को कम्पाण्ड में घुसने या कोई वस्तु उठाने की अनुमति नहीं थी। फूलतोड़ने वालों, सड़क पर या कम्पाउण्ड में से कोई सामान उठाने वालों का दूसरा वर्ग था जिन पर जिंगल झपटता था, हमले की तेजी से डर कर कुछ गिर जाते थे, कुछ चिल्लाने लगते थे, पर जिंगल ने किसी को काटा नहीं। तीसरे वर्ग में शामिल लोगों पर भौंकने के बजाय काटना ही जिंगल को

ज्यादा पसंद था। उसकी भयानकता की कहानी ऐसी प्रचारित हुई कि मेरे मकान और उस सड़क को जिंगल के नाम से पहचाना जाने लगा। अगल-बगल के अर्द्धनिर्मित मकानों की दीवारों पर बैठ कर समय गुजारने वाले निठल्ले गायब हो गए। गलियों में गश्त लगाने वाले भूलकर भी इधर न आते। चंदा वसूल करने वाले घर आने की बजाय बाहर ही जो मिल जाए पा कर संतुष्ट हो जाते थे।

जिंगल रंगरूप में कुछ खास न था, उसके नस्ल की श्रेष्ठता उसकी सुन्दरता नहीं बल्कि बुद्धिमत्ता और बहादुरी के रूप में झलकती थी। इनका बुद्धिमान होते हुए भी जिंगल दो बातें अंत तक नहीं समझ पाया। पहली बात-ददन पेपर फेंक कर कुछ गलत नहीं करता है। जिंगल अंततक उस पर भौंकता रहा। दूसरी बात-नहाना अच्छी बात है। जिंगल को नहाने से चिढ़ थी। नहाते वक्त पूरा समय वह ऐसे कूँ कूँ करता, मानों उसे सजा दी जा रही हो।

जिंगल के पास भाषा नहीं थी, पर वह बेजुबान न था। भोजन की जरूरत होने पर वह मनुष्यों की तरह सीटी बजाता था। बाहर जाने की तलब लगने पर ऊँऊँऊँ.... की लम्बी आवाज निकालता था। जब हम उसे घर में छोड़कर सपरिवार बाहर जाते तो बच्चों की तरह दुनकने और जिद करने वाली आवाज तथा भाव-भंगिमा दिखलाता। जब हम वापस लौटते तो हुलस कर किलकारी मारने की आवाज। कुल मिलाकर वह किसी भी कालू, शेरू, मोती या रॉकी, टॉमी, जैकी से अलग और निराला था। उसकी हर आवाज का अर्थ हम समझते थे और

वह हमारी हर बात समझता था।

28 जुलाई 2009 चिड़ियाघर से लौट कर हम दोनों बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। बेटा स्कूल जा चुका था, बेटी तैयारी कर रही थी। जिंगल पूरे कम्पाउण्ड में चक्कर लगा रहा था। मैंने नीचे झांक कर उसे डाँटा। जिंगल, चलो ऊपर। वह ऊपर आ गया। मैंने उसे उछाल-उछाल कर मांस-युक्त विस्कुट खिलाया। फिर उसे जंजीर से बाँध दिया। जिंगल के साथ कुछ देर खेलने के बाद मैं कुछ काम से बगल वाले कमरे में गया। अचानक जिंगल जोर-जोर से भौकने लगा। मैंने दरवाजे से झाँककर देखा। कूड़ा बीनने वाली तीन चार महिलाएँ सड़क पर थीं। जिंगल उनपर बेतहासा भूक रहा था। मैं अपने काम में लग गया। सहसा पत्नी चीखी, जिंगल! जिंगल! क्या हुआ? अजी देखिए, जिंगल को क्या हो गया। मैं दौड़ कर आया। जिंगल गिरा हुआ था, आवाज बंद, आँखें खुली। पत्नी ने उसका सिर हाथों में उठा रखा था। बेटी भी दौड़कर आ गई थी। मैंने उसके सिर पर, मुँह में पानी डाला पर देखते-देखते जिंगल की गरदन एक ओर झुक गई। पत्नी और बेटी चीख मार कर रो पड़ी। मैं भी आँसू न रोक पाया। बेटे को स्कूल फोन किया। श्रावण शुक्ला सप्तमी जिंगल ने शरीर तज दिया।

विश्वास नहीं होता। मौत इस तरह दबे पाँव आती है? चुपके से? संतोष भी होता है, कि उसे जाना था चला गया पर, उसे कोई बीमारी तकलीफ नहीं झेलनी पड़ी। प्रिय लोगों के बीच अपनों की गोद में सिर रखे वह चला गया। उसकी मौत पर हम सभी रो रहे थे। उस नेक आत्मा की मुक्ति हेतु प्रार्थना कर रहे थे। पड़ोसी भी मातम् जताने चले आए थे। ऐसी “कुत्ते की मौत” मरा जिंगल। संभव है कुछ मनुष्य भी रश्क करें।

अगली सुबह। बरामदे में उदास बैठा हूँ। यही बगल में जिंगल बैठा रहता था। ददन आकर अखबार फेंकता है, फिर चौंक कर पूछता है, भैया जी! आज कोई टोका नहीं? मैं भीगी आवाज में कहता हूँ - अब कभी नहीं टोकेगा। आँए? जिंगल चला गया? ददन अवाक् है। मन और दुःखी हो उठता है। जिंगल तुम साढ़े चार साल हमारे साथ रहे। मैं तुम्हारे बिना ब्याकुल हूँ। पूरा परिवार बेचैन है। भारीमन से अखबार खोलता हूँ। मुख पृष्ठ की पहली खबर..... साढ़े चार साल से साथ रह रही पत्नी को एक मोटर साइकिल के लिए पति ने मार डाला, पूरा परिवार हत्या में सहयोगी था।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2008

एक सिंहावलोकन

— हिन्दी कक्ष



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना एवं महालेखाकार (लेखा एवं हक0), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक-1.9.2008 से 15.09.2008 तक हिन्दी पखवाड़ा सोल्लास मनाया गया। इस दौरान 07 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं, जहाँ हिन्दी संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों द्वारा भी, बच्चों हेतु विशेष तौर पर आयोजित, प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दरम्यान दो कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं। हिन्दी कार्यशालाओं में प्रतिभागी अधिकारियों/कर्मचारियों का तन्मयता के साथ कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मियों को हिन्दी दिवस के दिन पुरस्कृत भी किया गया। साथ ही वर्ष 2007-2008 के दरम्यान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 30 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी नगद राशि के रूप में पुरस्कार दिया गया।

मुख्य समारोह दिनांक 15.09.2008 को 2 बजे दिन में रवीन्द्र भवन, पटना में आरंभ हुआ। समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह के

द्वारा किया गया। स्वागत भाषण श्री प्रवीर कुमार, वरीय उपमहालेखाकार द्वारा किया गया। तत्पश्चात 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के प्राप्त संदेश-पाठन उपमहालेखाकार (पेंशन) श्री सुशील कुमार सिन्हा द्वारा किया गया। प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उपयोगिता पर विशेष बल दिया तथा हिन्दी भाषा के निरंतर विकास के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। महालेखाकार (ले0 एवं ह0) श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल ने कहा कि हिन्दी सबको सीखनी चाहिए। इनके द्वारा हिन्दी के प्रति सच्ची लगन से कार्य करने पर बल देने की बात कही गयी। इस अवसर पर लेखापरीक्षा कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का लोकार्पण प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह द्वारा मुख्य अतिथि श्री जीया लाल आर्य के हाथों कराया गया, जिसमें 'प्रहरी' के सम्पादक श्री सूर्यबली चौधरी (वर्तमान दिवंगत) ने सहयोग किया। लेखा कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' का लोकार्पण महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल द्वारा विशिष्ट अतिथि डॉ0 खगेन्द्र ठाकुर के हाथों कराया गया, जिसमें संपादक श्री बंशीधर मिश्र ने सहयोग किया। इसी बीच 2007-08 के दरम्यान महालेखाकार कार्यालय (ले0 एवं ह0) बिहार, पटना के

हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियों से संबंधित प्रतिवेदन श्री बंशीधर मिश्र द्वारा प्रस्तुत किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह का द्वितीय चरण भव्य कवि-गोष्ठी से शुरू हुआ। इस कवि-गोष्ठी में आमंत्रित कविवृन्द श्री आलोक धन्वा, श्री मेहता नगेन्द्र सिंह, श्रीनन्द किशोर शर्मा, श्री कमला प्रसाद, श्री ललित कुमुद, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, श्री इन्द्र मोहन मिश्र 'महफिल', श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' श्री रामचन्द्र लाल कर्ण, श्री मनोज कुमार, श्री महेन्द्र मोहन मिश्र ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से कवियों का मान-सम्मान किया। कवि-मंच की अध्यक्षता प्रसिद्ध समालोचक एवं साहित्यकार श्री खगेन्द्र ठाकुर तथा मंच संचालन प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि श्री कमला प्रसाद ने किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री जयप्रकाश मल्ल, ले०प०अ० द्वारा सुचारु रूप से किया गया। इसके उपरान्त सांस्कृतिक-

कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें प्रसिद्ध साहित्यकार भीष्म साहनी की दो कहानियों 'साग मीट' एवं अमृतसर आ गया है, का मंचन पटना की मशहूर नाट्यमंडली 'नटमंडप' द्वारा किया गया। पात्रों ने कहानी में भीष्म साहनी की साहित्यिक भावना का साक्षात्कार दर्शकों को करा दिया। यह एक उच्च कोटि की कलात्मक प्रस्तुति थी, जिसे दर्शकों ने काफी सराहा। अधिकारियों/ कर्मचारियों के परिवारों/ बच्चों की उपस्थिति काफी उत्साहवर्द्धक रही।

समारोह के अंत में उपमहालेखाकार श्री कैलाश राम ने समारोह को सफल बनाने के लिए कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सादर आमंत्रित साहित्यिक अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। इस प्रकार हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2008 का भव्य समापन हुआ।





हिन्दी पखवारा समारोह, 2008 का उद्घाटन-दीप प्रज्वलित करते हुए श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना ।



श्री अरूण कुमार सिंह, माननीय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) बिहार, पटना एवं श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, माननीय महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना हिन्दी पखवाड़ा 2008 के शुभारम्भ के मौके पर साथ-साथ ।



अन्तर क्षेत्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता के एक महत्वपूर्ण मैच के प्रारम्भ के पूर्व खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना एवं अन्य ।



पूर्वी क्षेत्र बैडमिन्टन प्रतियोगिता के दरम्यान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), बिहार, पटना, श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल अन्य अतिथियों के साथ